इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में भोपाल के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचायत मदनगंज किशनगढ़ भारतीय डाक विभाग के भोपाल परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अगस्त 2020	
16	रविवार	द्वादशी	आर्द्रा
17	सोमवार	त्रयोदशी	पुनर्वसु-पुष्य
18	मंगलवार	चतुदर्शी अमावस	आश्लेषा
19	बुधवार	प्रतिपदा	मघा
20	गुरुवार	द्वितीया	पूर्वाफाल्गुनी
21	शुक्रवार	तृतीया	उत्तराफाल्गुनी
22	शनिवार	चतुर्थी	हस्त
23	रविवार	पंचमी	चित्रा
24	सोमवार	षष्ठी	स्वाती
25	मंगलवार	सप्तमी	विशाखा
26	बुधवार	अष्टमी	अनुराधा
27	गुरुवार	नवमी	ज्येष्ठा
28	शुक्रवार	दशमी	मूल
29	शनिवार	एकादशी	पूर्वाषाढ
30	रविवार	द्वादशी	उत्तराषाढ
31	सोमवार	त्रयोदशी	श्रवण
		सितम्बर 2020	
1	मंगलवार	चतुदर्शी	धनिष्ठा
2	बुधवार	पूर्णिमा	शतभिषा
3	गुरुवार	प्रतिपदा	पूर्वाभाद्रपद
4	शुक्रवार	द्वितीया	उत्तराभाद्रपद
5	शनिवार	तृतीया	रेवती
6	रविवार	चतुर्थी	अश्विनी
7	सोमवार	पंचमी	भरणी दि/रा
8	मंगलवार	षष्ठी	भरणी
9	बुधवार	सप्तमी	कृत्तिका
10	गुरुवार	अष्टमी	रोहिणी
11	शुक्रवार	नवमी	मृगशिरा
12	शनिवार	दशमी	आर्द्रा
13	रविवार	एकादशी	पुनर्वसु
14	सोमवार	द्वादशी	पुष्य
15	मंगलवार	त्रयोदशी	आश्लेषा

तीर्थंकर कल्याणक

24 अगस्त : भगवान सुपार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
26 अगस्त : भगवान पुष्पदंत मोक्ष कल्याणक
01 सितम्बर : भगवान वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 अगस्त:रवि व्रत
19 अगस्त:लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
21 अगस्त:त्रिलोक तीज (रोट तीज)
22 अगस्त:लब्धि विधान व्रत पूर्ण
23 अगस्त:दशलक्षण व्रत प्रारंभ, पुष्पांजलि व्रत, रवि व्रत
25 अगस्त:शील सप्तमी, मुक्तावली
26 अगस्त:निःशल्य अष्टमी27अगस्त:पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
28 अगस्त:सुगंध दशमी 29 अगस्त:अनंत व्रत प्रारंभ
30 अगस्त:रवि व्रत 31 अगस्त:रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
01 सितम्बर: दशलक्षण, कर्मनिर्जरा, अनंत व्रत पूर्ण
02 सितम्बर : रत्नत्रय व्रत पूर्ण
03 सितम्बर : षोडशकारण, क्षमावाणी, मेघमाला व्रत पूर्ण
10 सितम्बर: रोहिणी व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

17 अगस्त : 06/44 बजे से 29/44 बजे तक ।
18 अगस्त : 06/08 बजे से 28/08 बजे तक ।
26 अगस्त : 06/11 बजे से 13/04 बजे तक ।
30 अगस्त : 06/12 बजे से 13/52 बजे तक ।
31 अगस्त : 06/13 बजे से 15/04 बजे तक ।
06 सितम्बर: 06/14 बजे से 29/24 बजे तक ।
08 सितम्बर: 08/26 बजे से 30/15 बजे तक ।
09 सितम्बर: 06/15 बजे से 30/15 बजे तक ।
13 सितम्बर: 16/34 बजे से 30/17 बजे तक ।
14 सितम्बर: 06/17 बजे से 15/52 बजे तक ।
15 सितम्बर: 06/17 बजे से 14/25 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त्त

विद्यारंभ मुहूर्त: अगस्त-20,23,30 सितम्बर-2,4,13
प्रॉपर्टी खरीदने : अगस्त-20,27,28 सितम्बर-3,10,11
दुकान प्रारंभ: अगस्त-17,21,26 सितम्बर-4,10,14

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 252 • सितम्बर 2020
• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- घर में ही वैरागी 08
- आचार्य जिनसेन (द्वितीय)के चिंतन में परमाणु 10
- आचार्य श्री विद्यासागर के चिंतन में सर्वज्ञता 14
- मी-टू भारत की संस्कृति के लिये शर्मनाक घटनायें 16
- अपेक्षाओं का अभाव ही है आंनदमय जीवन का प्रारंभ 19
- युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष 25
- परमात्मा दर्पण है, आत्मा देखने के लिये 28
- जैन संत वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज 37
- जैन सेनापति 44
- अपने हृदय दिल को पहिचाने कहीं देर न हो जाये 56

बाल कहानी

- इसे नहीं खाना 59

कविता

- नर भव जीवन व्यर्थ न खोना 09
- धूप में नहीं चांदनी में जलते आजकल 11
- चूहा बिल्ली 13
- सूरज पर धूल 18
- मर्हुत और कार्ड 27
- जैन शब्द गम्भीर 29

कहानी

- राम कहानी 39

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन :21 • पुराण प्रेरणा : 23 • माथा पच्ची : 23 • कैरियर गाइड : 24
दुनिया भर की बातें : 30 •दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 37 • हमारे गौरव : 43 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

✲✲ कार्यालय ✲✲
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, अगस्त के अंक में कहानी स्तंभ के अंतर्गत गमछा शीर्षक से कहानी को पढ़ा। कहानी की कथावस्तु ने मेरे मन को झकझोर दिया, एक स्वाभिमानी महान आत्मा ज्ञानसागर की कहानी में एक ऐसी प्रेरणा दी, जिससे हर व्यक्ति यह समझ सकता है कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिये आत्मनिर्भर बनना बहुत आवश्यक है। स्वाभिमानी व्यक्ति ही आत्म निर्भर बनकर अपने सपनों को साकार कर सकता है, पिछलग्गु व्यक्ति नहीं। सच यह है कि छोटी सोच वाला और पैर में मोच वाला कभी आगे नही बढ़ सकता है। कहानी की भाषा सरल और सुबोध है एवं कहानी की शैली शीधी और सपाट होने से पाठकों के अंदर रोचकता पैदा कर देती है। एक बार कहानी पढ़ने बैठा व्यक्ति तब तक नहीं उठ सकता है जब तक कहानी पूर्ण ना हो जाये। ऐसा कहानी समाज में जागरूकता लाकर युवा वर्ग को दिशा बोध दे सकती है।

श्रीमति रजनी जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अगस्त में संस्कार प्रवाह के अंतर्गत माफीनामा पर्याप्त नहीं है। शीर्षक से अग्रलेख पढ़ा, यह लेख यह कहता है कि दिगम्बरत्व की साधना पौराणिक वैदिक इतिहास का विषय है। दिगम्बर रूप कभी भी असभ्य और अश्लील नहीं हो सकता है। इस बिन्दु को अपने सटीक तर्कों के माध्यम से जो सिद्ध करने का प्रयास किया है वे तर्क अकाट्य और सर्वमान्य है। दिगम्बरत्व की साधना सार्वभौमिक सत्य है इसे कोई झुठला नहीं सकता है, जिन्होंने भी दिगम्बरत्व को अश्लीलता मानने का प्रयास किया है । उन्हें अपना चश्मा बदलने की आवश्यकता है । दृष्टि बदल जाती है तो सृष्टि बदलने में देर नहीं लगती है । अतः वासना की आँख से देखने वाले लोगों को दिगंबर रूप असहनीय लगेगा, लेकिन साधना की दृष्टि से देखने वाले इस रूप के दीवाने हो जाते हैं और इस रूप के सामने सिर झुका देते हैं ।

श्रीमति रूचि जैन, सागर

• सम्पादक महोदय, राजस्थान में सत्ता पाने का ड्रामा लम्बे समय तक चला। इस नाटक में राजसत्ता से जुड़े नेताओं ने अपनी गाँठों की बिना खोले ही खेल का जामबड़ा रखा परिणाम सब जानते है कि छल और कपट थोड़े समय के लिये हो सफल होते नजर आते हैं परन्तु अन्त में तो वे असफल ही होते हैं । कूटनीति असत्य असंयम हिंसा का राजस्व चुनती परन्तु राजनीति सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलने के बाद ही उल्लेखनीय होती है सचित पायलट और अशोक गहलौत शह और मात का खेल तब खेल रहे थे जब पूरे राजस्थान में कोरोना से जनता त्रस्त थी। ऐसे संकट के समय विधायक गण होटल में मस्त नजर आते देख जनता यह सोच रही होगी कि यह हमारा क्रूर मजाक उड़ाया जा रहा है। न्यायालय की दृष्टि में राजनैतिक असहमति जताना, अनुशासन हीनता नहीं है यदि असहमति जताने पर रोक लगा दी जायेगी तो लोकतंत्र की हत्या कभी भी हो सकती है। **विकास जैन, मेरठ**

• सम्पादक महोदय, नेपाल के कालापानी लिपु लेख और लिपियाधुरा से जुडे मुद्दे पर नेपाल विद्यमान जिद धीरे-धीरे संबधो को कमजोर होने का परिणाम है। सीमा मुद्दा तब सामने आया जब भारत ने 10 नवम्बर 2019 को तीनों गांव अपने नक्शे में दिखाये इसके बाद 8 मई. 2020 को लिपु लेख और लिपिया धुरा होते हुये कैलाश मान सरोवर के लिये सड़क का औपचारिक उद्घाटन हुआ। नेपाल ने इसका जोरदार विरोध किया। नेपाल सरकार ने नया नक्शा जारी करने का फैसला किया। भारत को आज नहीं तो कल आगे का रास्ता करना होगा। सीमा मुद्दे पर नेपाल से बात करना उस समस्या को स्वीकार करना माना जायेगा जिससे भारत ने इंकार किया और ऐसा न करना चीन को नेपाल पर अपना प्रभाव बढ़ाने और भारत पर दबाव बनाने का एक और मौका दे देगा भारत को कोई रास्ता निकाला ही होगा जिससे नेपाल से भारत के पुनः मधुर संबंध बने।

राजकुमार जैन, इन्दौर

भक्ति तरंग
वीर वन्दना

जय श्री वीरजिन वीरजिन वीरजिनचंद,
कलुषनिकंट मुनिह्रदसुखकंद
सिद्धारथनंद त्रिभुवनको दिनेन्द्रचन्द्र,
जावचकिरन भ्रमतिमरनिकंद
जाके पद अरविन्द सेवत सुरेन्द्र वृंद,
जाके गुण रटत कटत भवफंद
जाकी शान्ति मुद्रा निरखत हरखत रिखि,
जाके अनुभवत लहत चिदा नन्द
जाके घातिकर्म विघटन प्रघटत भये,
अनन्तदरसबोध वीरज आनन्द
लोकालोक ज्ञाता पैं स्वभावरत राता प्रभु,
जगको कुशलदाता त्राता पै अद्वंद
जाकी महिमा अपार गणी न सकै उचार,
दौलत नमतः सुख वहत अमंद

हे श्री महावीर जिनेन्द्र, आपकी जय हो ! हे श्री वीर जिनेशा-आप पाप समूह का नाश करने व मुनिजनों के ह्रदयों को सुख पहुँचाने वाले पिंड हो। हे सिद्धार्थ राजा के पुत्र। सूर्य व चन्द्र की किरणों के समान प्रसारित-फैलने वाली आपकी दिव्य ध्वनि जग के लिये तीन लोक के भ्रमरूपी अंधकार का नाश करने वाली है।

इन्द्रादि का समूह जिनके चरण कमल की भक्ति करता है अर्थात जो इन्द्रादि देवगणों द्वारा पूजित हैं। जिनके गुण-चिंतवन से संसार के बंध कट जाते हैं उन महावीर जिनेन्द्र की जय हो।

जिनकी शान्त मुद्रा को देखकर मुनिजनों के मन हर्षित हो जाते है और जिनके गुणों का चिंतवन करने से अपनी निज आत्मा की अनुभूति होती है। उन महावीर जिनेन्द्र की जय हो।

जिनकी शान्त मुद्रा को देखकर मुनिजनों के मन हर्षित हो जाते हैं और जिनके गुणों का चिंतवन करने से अपनी निज आत्मा की अनुभूति होती है। उन महावीर जिनेन्द्र की जय हो।

जिनके घातिया कर्मों का नाश होने से अनन्तचतुष्टय-दर्शन, ज्ञान, सुख, और वीर्य प्रकट हो गये हैं, ऐसे उन महाीर जिनेन्द्र की जय हो।

जो लोकालोक के ज्ञाता हैं, फिर भी आत्मस्थ होकर स्वभावरत हैं जगत का कल्याण करने वाले हैं, और समस्त दुखों से मुक्तकर -क्लेशविहिन करने वाले हैं- उन महावीर जिनेन्द्र की जय हो।

जिनकी महिमा को गणधर भी कह नहीं सके पार ना पा सके दौलतराम उनको नमन करते हैं। और अक्षय सुख की अभिलाषा करते हैं।

संस्कार प्रवाह अहिंसा और स्वाभिमान की भाषा हिन्दी

भाषा आचार विचार और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा से ही स्वतंत्रता और स्वाभिमान का बीजारोपण होता है। प्रेम और करूणा की भावना का संचार स्वदेशी भाषा से ही संभव होता है। नैतिकता को आधार भाषा ही प्रदान करती है। समाज को आदर्श रूप देने में भाषा का महान योगदान होता है। परिवार संगठन की शक्ति भाषा ही होती है। व्यक्तित्व विकास में भाषा का अलग ही स्थान होता है। स्वदेशी भाषा से ममता की तरंगें बलवती होती है। अज्ञान के अंधेरे को दूर करने श्रेष्ठतम कार्य स्वदेशी भाषा के बिना संभव नहीं होता है। अध्यात्म का सृजन और विकास की राह स्वदेशी भाषा के द्वार से होकर गुजरती है।

जीवन की हर पहेली भाषा के मंच पर ही अपना करिश्मा दिखाती है उत्तम जीवन शैली की शिक्षामातृ भाषा पर ही निर्भर करती है। मन की संवेदना और अंतस की पीड़ा एकमात्र मातृ भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त होती है समाज की कल्याण की भावना एवं उत्कृष्ट मानव मूल्यों की शिक्षा हिन्दी के माध्यम से ही प्रसारित होती है।

हिन्दी वह भाषा है जो स्वतंत्रता और समानता को संरक्षित कर सकती है एवं भारतीय अखण्डता का संरक्षण हिन्दी के माध्यम से ही संभव होता है। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में हिन्दी भाषा प्रचार प्रसार का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रत्येक धर्म का बुनियादी नीव अहिंसा होती है। अहिंसा का व्यावहारिक रूप हिन्दी भाषा से ही प्रगट होता है। अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के माध्यम से अहिंसा का व्यवहारिक पक्ष न तो प्रगट होता है और नहीं विकसित होता है। विदेशी भाषा के माध्यम से बच्चों को शिक्षा ग्रहण कराने पर उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। उनके कोमल मन-मस्तिष्क पर अतिभार एवं दबाव पड़ते रहने से उनके बाल्य-काल में ही प्रतिभा कुंठित हो जाती है। बच्चों की प्रतिभा जब अंग्रेाजी माध्यम से शिक्षा लेने पर कुठित हो जाती है। तब वे चिड़चिढे एवं क्रूर वृत्ति से युक्त हो जाते हैं मानसिक अवसाद एवं मनविकारों के कारण छोटी-छोटी सी बातों पर आत्महत्या करने के लिये प्रयत्न करने लगते हैं। अतः हम कह सकते हैं स्वदेशी हिन्दी मात्री भाषा ही प्रगति का अनुपम द्वार है।

घर में ही वैरागी

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

भरतजी घर में ही वैरागी-अरे! यह कैसे सम्भव है कि चक्रवर्ती की अपार सम्पदा के बीच रहने वाले चक्रवर्ती भरत वैरागी। सामान्यजन को समझ में नही आती यह बात। अतः सरलता से समझाने के लिये चक्रवर्ती भरत ने एक उपाय किया -

जब जन समूह एकत्रित हो गया तो उन्होंने कहा- आप लोगों को महल आदि सम्पदा देखने की बहुत जिज्ञासा रहती है अतः मैं आपको सम्पूर्ण महल आदि दिखाऊँगा। किन्तु इसके साथ एक शर्त रहेगी कि जो भी महल देखने जायेगा, उसके हाथ में घी से लबालब भरा हुआ एक कटोरा दिया जायेगा, यदि उसमें से एक बूँद भी नीचे गिरा तो आस-पास चल रह सैनिक अपनी तलवार से सिर कलम कर देंगे। अतः ध्यान रहे कि एक बूँद भी नीचे नहीं गिरे। तब एक व्यक्ति ने साहस किया और महल देखने की तीव्र जिज्ञासा से यह कार्य करने के लिये तैयार हो गया।

शर्त के अनुसार वह लबालब घी से भरा हुआ कटोरा हाथ में लेकर, आस-पास तलवार लिये हुये सैनिक के साथ, वह पूरा महल आदि सम्पदा देखने के लिये चल दिया और एक-एक करके पूरा महल देखकर जब वापिस आया तो उससे पूछा कि, सब कुछ देख आये ? कैसा लगा ? कितना मजा आया ?

चक्रवर्ती भरत की यह बात सुनकर वह व्यक्ति नीचे सिर किये हुये बोला, हे राजन! क्षमा करें ! मुझे सब कुछ समझ में आ गया। सच बात तो यह है कि मैंने पूरे राजमहल में घूमकर भी कुछ नहीं देखा। मेरी दृष्टि एकमात्र घी से भरे हुये कटोरे पर रही क्योंकि मुझे अपनी जान प्यारी थी। एक बूँद गिरी और सैनिक द्वारा सिर कलम इसे भय से पूरे समय मेरी दृष्टि कटोरे पर रही, मैंने सब कुछ देख कर भी नहीं देखा।

इस प्रकार भरत चक्रवर्ती की अपार सम्पदा के बीच रहते हुये भी उनकी दृष्टि तो एकमात्र निज चैतन्य तत्त्व पर रहती थी।

पुण्य के फल में मिले हुये बाह्य विशाल वैभाव में ज्ञानी अपने स्वरूप दृष्टि को एक समय भी छोड़ते नहीं और एक परमाणु को भी अपना स्वरूप मानते नहीं, इसलिये अल्प समय में समस्त बाह्य जड़ वैभव को सड़े हुये तिनके के समान जानकर छोड़ देते हैं और अपने अनंत गुणों के शाश्वत वैभव को अपनी स्वरूप दशा को प्रगट करके अनंतकाल सुखी रहते हैं।

संसारी जीव जड़-चक्षु से देखते हैं तो उन्हें चक्रवर्ती भरत राज-पाट रानियों के बीच भोग भोगते हुये सुखी दिखाई देते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरूष ज्ञान नेत्र से देखते हैं तो जल से भिन्न कमल की भांति रचमात्र भी जड़ वैभव में लिप्त दिखाई नहीं देते किन्तु उनकी दृष्टि में तो सदा काल एक मात्र निज शुद्धात्मा की महिमा ही बसती है और उसी के श्रद्धा,ज्ञान व अनुभवन से वे अपने को सुखी अनुभव करते हैं।

वस्त्र उतारते ही एक अन्तर्मुहुर्त में केवलज्ञान प्राप्त कर लेना, यह कोई सामान्य बात नहीं है,अपूर्व, महान अन्तर्मुखी पुरुषार्थ है। निश्चित ही गृहस्थ दशा में अपूर्व आतम भावना का पुरुषार्थ चलता होगा और वही बढ़ते-बढ़ते केवलज्ञान तक पहुँच गया।

धन्य है चक्रवर्ती ! धन्य है उनका वैराग्य !! और धन्य है उनका सम्यक पुरुषार्थ !!!

कविता

नर भव जीवन व्यर्थ न खोना

रचयिताः कांति कुमार जैन, करूण खिमलासा

नर भव जीवन व्यर्थ न खोना, पाया मुश्किल से यह क्षण।
ज्ञान भावना रखना बंधु, होवे मेरा मन पावन।।
धर्म ध्यान रखना अंतर में, यही भावना हो जीवन में।
तभी होय कल्याण जगत में, न विकल्प आये है मन में।।
धर्मवताता हमें जगाता, पाले अंतर में अब साधन।
नर भव जीवन व्यर्थ न खोना, पाया मुश्किल से यह क्षण।।
किया पुण्य अपने जीवन में, तभी मिला है नर भवक्षण।
धर्म ही मार्ग बताता हमको, देता हमको सम्यकधन।।
अतः जागता होगा हमको, पायेगें धर्म का आलम्बन।
नर भव जीवन व्यर्थ न खोना, पाया मुश्किल से यह क्षण।।
धन्य धरा हो गयी जगत की, पाया हने जन धर्म।
गुरुओं की सेवा अब करनी, कहता मेरा यही धर्म।।
बढ़तें जाओं अपना शिवपथ, सुख पाने का है संयम दान।
नर भव जीवन व्यर्थ न खोना, पाया मुश्किल से यह क्षण।।
आत्म ज्ञान ही सुख का कारण, जिनने ध्याया अंतर मन से।
वही मुक्ति के पथ पर आया, पाया सुख का आस्वासन से।।
करूण जगत में क्यों तू रहता, सुख पाने का उद्दत कर मन।
नर भव जीवन व्यर्थ न खोना, पाया मुश्किल से यह क्षण।।

आचार्य जिनसेन (द्वितीय) के चिंतन में परमाणु

❊ ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर ❊

आचार्य जिनसेन 8वीं शताब्दी के एक महान आचार्य हुये हैं।

ये आचार्य वीरसेन के शिष्य थे। इन्होंने साहित्य की गरिमा को इस तरह से प्रस्तुत किया कि पुराण साहित्य में आपकी मात्र दो रचना उपलब्ध होती है। 1. पार्श्व अभ्युदय, 2. महापुराण (आदिपुराण) महापुराण, आदिपुराण जिस साहित्य को गंभीरता से प्रस्तुत किया है। और 11000 श्लोक से भी अधिक के माध्यम से आदि पुराण, महापुराण की रचना की।

आचार्य जिनसेन ऐसे आचार्य हुयें हैं, जिन्होंने जैन धर्म की प्रभावना की ध्वजा गगनचुम्बी बताई है। उन्होंने अपने 100 अजेय शिष्यों को जैन बनाकर आहार लेने की प्रतिज्ञा सदैव निर्वाह की।

आचार्य जिनसेन ने राष्ट्रकूट राजाओं का निर्माण करके अपना पूरा योगदान दिया। उनका योगदान शस्त्रकला से लेकर साहित्य कला तक उन्होंने शिक्षण-प्रशिक्षण दिया।

आचार्य जिनसेन के जहाँ प्रकृति के वर्णन के लिये मूलरूप से जाने जाते हैं , वही जैन दर्शन की विवेचनाओं में निष्णात विद्वान थे। आचार्य जिनसेन को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने वर्तमान में खण्डेलवान समाज की स्थापना करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। वे सदैव नग्न रूप में रहे उन्होंने कभी वस्त्र को धारण नहीं किया। उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में दीक्षा धारण कर जैन धर्म की प्रभावना के लिये और शिक्षण-प्रशिक्षण के लिये निकल पड़े।

आचार्य जिनसेन ने परमाणुवाद के सिद्धांत को अपने ग्रंथ आदिपुराण में परिलक्षित किया है। आचार्य जिनसेन ने परमाणु सिद्धांत को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पुद्गल रूपी होते हैं। सर्वप्रथम वे यह कहते हैं कि परमाणु पुद्गल रूप हैं।

आचार्य जिनसेन के अनुसार पुद्गल दो प्रकार का होता है स्कंध रूप में, दूसरे पुद्गल परमाणु रूप में।

आचार्य जिनसेन ने अपने आदिपुराण में 24 में अध्याय में पुद्गल परमाणु की परिभाषा प्रस्तुत की है। वे बताते है कि संसार में 2 प्रकार के पदार्थ है।

एक रूपी पदार्थ है, और दूसरा अरूपी पदार्थ हैं।

रूपी पदार्थ को एकमात्र पुद्गल के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा-

जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पायें जाते हैं, वह पुद्गल कहलाता है। पूरण-गलन का स्वभाव वाला पुद्गल सार्थक होता है। पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य जी ने इसको स्पष्ट करते हुये अपना भावार्थ प्रस्तुत करते हुये कहा कि वह बंध परमाणुओं का आकर मिलना जाना पूरण कहलाता है। और फैले हुये परमाणुओं का बिछुड़ना गलन कहलाता है। इन पुद्गलों का जब पूरण होता है तो वह स्कंध रूप में बदल जाता है और जब गलन होता है तो वह एक अविभागी परमाणु के रूप में तक पहुंच जाते हैं।

यह अविभागी वाद के समर्थक आचार्य जिनसेन हुये हैं। इसके बाद अविभागी पुद्गल परमाणुओं मिलने के बाद स्कंध बनते हैं, तब स्कंधों की रचना को प्रस्तुत करते हुये कहा है- एक द्विअणुक वाला स्कंध होता है और दूसरा अनंतानंत परमाणु वाला महास्कंध होता है। आचार्य कुन्दकुन्द के अभिप्राय को स्पर्शित करे हुये द्विअणुक स्कंध के बारे में कहा है-

ये परमाणु की छाया, आतप, चांदनी, अंधकार, वेग और आदि को प्रस्तुत करता है।

परमाणु अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। वे इन्द्रियों के द्वारा नहीं जाने जाते हैं, परमाणु के 1 वर्ण, 2 स्पर्श, 1 गंध, 1 रस रहता है। उन्होंने परमाणु की रचना को स्पष्ट करते हुये कहा है।

परमाणु गोल और वृत्त होते हैं। हमेशा उनकी पर्यायें अनित्य ही होती है। पर पुद्गल परमाणु के भेदों का स्पष्ट करते हुये आचार्य जिनसेन स्वामी ने अपने परमाणुवाद को विस्तार देते हुये कहा है। परमाणु पुद्गल के सूक्ष्म, सूक्ष्म-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, स्थूल, स्थूल-स्थूल भेद कहे हैं।

आचार्य जिनसेन ने स्कंध के बारे में कहा है। जिसे देखा जा सकता है जिसे स्पर्श नहीं किया जा सकता है। उसे स्कंध सूक्ष्म कहते हैं। उसके अंनतानंत प्रदेशों का संबध होता है। शब्द, स्पर्श, रस, गंध, सूक्ष्म स्थूल कहलाता है। यद्यपि उनका सूक्ष्म इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान नहीं होता है। इसलिये वे सूक्ष्म स्कंध कहलाते हैं जिसे देखा नही जा सकता है। ऐसा पुद्गल सूक्ष्म-सूक्ष्म कहलाता है जैसे परमाणु।

चक्षु इन्द्रिय द्वारा जो दिखाई देता है वह स्थूल कहा जाता है जिसका रूप संभव नहीं हो सकता है। पानी आदि तरल रूप पदार्थ धूल रूप में माना गया है। पृथ्वी, सुमेरू पर्वत आदि स्थूल स्कंध कहलाता है।

उन्होंने पुद्गल के स्कंधों का इसी प्रकार से वर्णन करते हुये परमाणुवाद के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुये आचार्य जिनसेन धर्म की प्रतिपादित परम्पराओं का प्रज्ञा रूप प्रस्तुत किया है।

कविता

धूप में नहीं चांदनी में जलते हैं आजकल

धूप में नही चांदनी में जलते हैं आजकल ।
अंधेरे में नहीं उजालों में छलते है आजकल ॥
बागों की तरफ जाने से क्या मिलने अब ।
फूल भी तो शूल से चुभते हैं आजकल ॥
कागजी फूलों में है इत्र की खुशबू ।
उन पर ही लोग मचलते हैं आजकल ॥
हम तो करते हैं उम्मीद कांटो से भी ।
लोग कलियों को भी मसलते हैं आजकल ॥
किसको सौंप दूँ में दुनिया की सियासत ।
चन्द सिक्कों में लोग बदलते हैं आजकल ॥

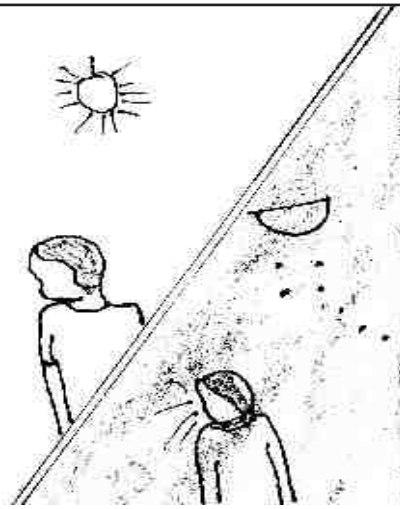

संयम स्वास्थ्य योग

महिमा गौदूध की

देशी गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों ?

1. इसमें फेक्टर एम.एन. 3 होता है। यह छोटे बच्चों के लिये माँ के दूध के समान ही लाभप्रद है। धातु पोषक बल एवं वृद्धि वर्धक है।
2. देशी गाय के दूध में रोग प्रतिरोधकर क्षमता (इम्यूनिटी पावर) सबसे अधिक होने से इसमें कैंसर आदि असाध्य रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। पहले देशी गाय घर घर पाली जाती थी। इसलिये कैंसर, मधुमेह (डायबिटिज) किड़नी लीवर, हार्ट आदि के रोग कम होते थे। शुद्ध दूध, दही, छाछ, घी, मक्खन आदि उपयोग में लाये जाते थे। अब इनका अभाव होने से विभिन्न प्रकार की मिलावटें होने से अनेकानेक रोग उत्पन्न हो रहें हैं।
3. विदेशी गायें देशी गांयों की अपेक्षा, गाढ़ा एवं ज्यादा दूध देती है। एवं देशी गायों की अपेक्षा ज्यादा हस्टपुष्ट होती है। आजकल इनका प्रचलन बढ़ गया है। विदेशी गाय के दूध में फेक्टर एम.एन. 6 होता है। यह खून (रक्त) में कॉलोस्ट्राल की मात्रा बढ़ाता है। इसमें हृदय संबंधित रोग अधिक हो रहे हैं।
4. भैंस का दूध भारी एवं शीतवीर्य होता है। गाय भैंस के आहार पर भी दूध की मात्रा एवं गुण निर्भर करते हैं। गुरु आहार से गुरु एवं लघु आहार से लघु (हल्का एवं सुपाच्य) दूध उत्पन्न होता है। देशी गायें हरे चारे एवं भूसा से संतुष्ठ हो जाती हैं इन्हें खली बांटा आदि अधिक देने की अवश्यकता नहीं होती है।
5. शाम के समय निकाला गया दूध लघु एवं सुपाच्य होता है। क्योंकि जानवर दिनभर घूमते रहते हैं। रात्रि में बंधे रहने के कारण सुबह निकाला गया दूध अपेक्षाकृत कुछ भारी (गुरु) होता है।

सावधानियाँ

1. बाजारू दूध विश्वास योग्य नहीं होता है। इसलिये किसी पूर्ण विश्वास वाले या फिर अच्छे डेरी फार्म का ही दूध लेना चाहिये।
2. दूध सदा स्वस्थ पशु का ही लेना चाहिये। बीमार पशु का दूध लेने से जो बीमारी उस पशु को है वही बीमारी मनुष्यों को होना निश्चित है। क्योंकि अन्य आहरीय पदार्थों की अपेक्षा दूध में जीवाणु पोषक शक्ति सर्वाधिक होती है। रोगी पशु के दूध में रोगजन्य कीटाणु ज्यदा सशक्त होते हैं। इसलिये उस जीवाणु जन्य रोग की सम्भावना अधिक होती है। दूध से उत्पन्न होने वाले रोगों का आरम्भ तत्काल होता है एवं दूध का सेवन बंद करने पर रोग भी ठीक हो जाता है।
3. दूध को हमेशा एक उवाल लेकर गर्म करना चाहिये। जितना पकाया जायेगा उतना ही भारी होगा।
4. धारोष्ण दूध (तत्काल दुहा गया) अमृत के समान गुणकारी हैं। तत्काल छान की पीना

अधिक लाभप्रद हैं। यदि दूध दुहने के बाद 20-25 मिनिट भी रखा रहें तो वह विकृत होने लगता है। दूध को उबालने से वह वैक्ट्रीरिया समाप्त हो जाते हैं। अतः दूध को उबालकर ही इस्तेमाल करना चाहिये।

पाश्चुरीकरण विधि- आजकल वैज्ञानिक पद्धति से डेरीफार्मों में ताजा दूध शुद्ध बोतलों में 100 डिग्री सेन्टीग्रेट तक उबालकर 0 डिग्री सेन्टीग्रेट तक ठंडा करके भरा जाता है। इसे दूध का पाश्चुकरण कहते हैं । इस विधि से दूध जीवाणु रहित हो जाता है एवं इसे बिना उवाले भी पिया जा सकता है।

चाय एवं काफी में मिश्रित दूध से हानि- आजकल दूध की जगह चाय काफी पीने एवं पिलाने का प्रबलन अधिक है, लोग सोचते है कि इससे माध्यम से भी शरीर को दूध की पूर्ति हो रही है। किन्तु यह अत्यंत गलत धारणा है। चाय काफी में टैनिक एसिड रहता है जिसके साथ मिलकर दूध में रासायनिक क्रिया होती है जो हड्डियों का मजबूत नहीं होने देती है। इसलिये गर्भवती एसवं बच्चे को दूध पिलाने वाली स्त्रियों को एवं प्रसूताओं को चाय काफी का सेवन नहीं करना चाहिये। क्योंकि यह बच्चों की हड्डियों को मजबूत नहीं होने देती हैं।

कविता

चूहा बिल्ली

❊ राजकुमार जैन राजन, राजस्थान ❊

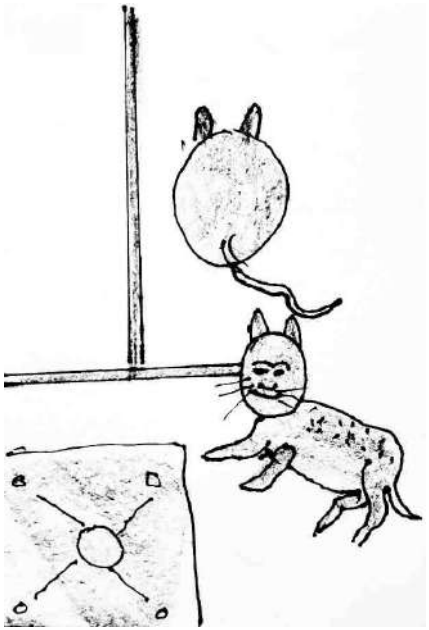

एक बार इक चूहे के पीछे इक बिल्ली भागी
चूहा बोला, मुझे न मारो मैं तो हूँ बैरागी ।
बोली बिल्ली, मैं तेरी बातों में ना आऊँगी
पूरे नौ सौ चूहे खाकर ही हज को जाऊँगी ।
आगे-आगे चूहा भागा पीछे-पीछे बिल्ली
बिल्ली को लगता था अब तो दूर नहीं है दिल्ली।
गिरा भागकर ड्रम में चूहा किस्मत बड़ी खराब
ड्रम में भरी हुई थी असली ठर्रा देशी शराब ।
नशा हो गया चूहेजी को आया ड्रम से बाहर
मूंछों पर दे ताव वह चीखा बिल्ली गई किधर ?
बिल्ली ताक में बैठी थी, बोली झट से मैं आऊँ
चूहा गुस्से में चिल्लाया चुप कर, म्याऊँ-म्याऊँ।
बहुत सताया तूने मुझको अब तुझको खाऊँगा
पूछ पकड़कर तेरी अब तो थाने पहुँचाऊँगा ।

आचार्य श्री विद्यासागर के चिंतन में : सर्वज्ञता

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

सर्वज्ञता को माने बिना धर्म के प्रति आस्था का निर्माण होना संभव नहीं है। सर्वज्ञता प्रत्येक भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन ने स्वीकार की है मात्र दो दर्शन ऐसे हैं जो सर्वज्ञता को स्वीकार नहीं करते हैं। जिनमें चार्वाक दर्शन और मीमांसक दर्शन सर्वज्ञता नहीं मानने वाले दर्शनों में चार बार दर्शन अब तो सिर्फ दर्शन की किताबों में रह गया है उसके मानने वाले स्पष्टतः इस पृथ्वी पर नहीं है। पुराण साहित्य में ईश्वर को नित्य व्यापाक सर्वज्ञ माना गया है। श्रीमद् भगवद् गीता में भी सर्वज्ञता के संदर्भ उपलब्ध होते हैं ।

सर्वज्ञ शब्द का निर्माण दो शब्दों से हुआ है सर्व + ज्ञ सर्व शब्द का अर्थ सामान्यतः सभी लिया जाता है किन्तु आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने चिंतन के माध्यम से सर्व शब्द का अर्थ एक अलग और विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया सर्व शब्द का अर्थ अनन्त ग्रहण किया है। अनन्त शब्द कहने से सर्वज्ञ शब्द की व्यापकता और अधिक बढ़ जाती है। तथा आगम से अनन्त शब्द ग्रहण करने में कोई भी व्यवधान नहीं आता है।

सर्वज्ञ से तात्पर्य केवलज्ञान लेना चाहिये । केवलज्ञान का विषय सर्व द्रव्य व सर्व पर्यायों में होता है। क्योंकि पहले असर्वपर्यायेषु कहा गया था। इसीलिये सर्व द्रव्यों और सर्व पर्यायों में इस प्रकार संबंध जोड़ देना चाहिये । जीव द्रव्य अनंतानंत हैं उससे भी अनन्तानन्त गुने पुद्गल द्रव्य हैं। एक एक जीव द्रव्य के प्रदेश पर अनंतानंत पुद्गल परमाणु का जमाव है और ऐसे अनंतानंत जीव हैं इसीलिये संसार का सारा का सारा व्यवहार चल रहा है । कभी भी घाटा नहीं होता है एक-एक आत्मप्रदेश पर एक समय में अनंतानंत पुद्गल परमाणु एक समय में आ रहे हैं, जा रहें है सविपाक निर्जरा भी हो रही है। अविपाक निर्जरा भी हो रही है। और बन्ध भी एक साथ हो रहा है। तेरहवें गुणस्थान में भी यही स्थिति है। प्रथम गुणस्थान में भी यहीं स्थिति है। निगोद में भी यहीं स्थिति है। राघोमच्छ में भी यहीं स्थिति हैं। बड़ा वैचित्र्य है।

चाहे शुद्ध पर्याय निकले चाहे अशुद्ध पर्याय उसके लिये हेतु द्वय अविष्कृत होना अनिवार्य है। काल के संयोग से प्रत्येक द्रव्य प्रत्येक समय परिणमन करते हैं अपनी अपने योग्यता के अनुसार उसमें से पर्याय निकलती है इसे कोई रोक नहीं सकता।

जैसे मतिज्ञान उत्पन्न हुआ यह काल की देन नहीं है मतिज्ञान यदि ज्ञान के रूप में उत्पन्न हो जाता है। ज्ञान गुण तो वह होते रहना चाहिये। क्योंकि काल का सद्भाव हमेशा रहता है। लेकिन होता नहीं है। क्यों नहीं होता ? मतिज्ञानावरण कर्म और क्या काम करता है। मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम में ही मतिज्ञान होगा यह नियत है काल के उदय में नियत

नहीं है। काल के उदय में पर्याय होगी यह नियत है लेकिन मतिज्ञान के रूप में जो पर्याय की उत्पत्ति होगी उसके लिये मतिज्ञानावरण का क्षयोपशम होना अनिवार्य है । उसमें यदि कमीवेशी हो जायें तो मतिज्ञान में कमीवेशी हो गई क्या ऐसा नहीं मान सकते। काल तो असंख्यात प्रदेशी है जहाँ है वहीं रहता खिसक भी नहीं सकता कभी किसी को गुस्सा कर दे ऐसा नहीं हो सकता। सर्वज्ञ ने सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को जान लिया काल द्रव्य की अतीत अनागत सर्व पर्यायों को जान लिया अतीत की पर्यायें अनन्त हैं तो अनंत के एक छोर को जान लिया तो सीमित हो जायेगा। तो सर्व का अर्थ क्या है शेष न रहे ये सर्व का अर्थ होता है। अब उन्होंने किस रूप में जाना क्या जाना यह सब सर्वज्ञ को ही स्वयं विकल्प के रूप में सिद्ध किया जा रहा । उसका अस्तित्व नहीं ऐसा नहीं क्योंकि बाधक प्रमाण का अभाव है इसलिये सर्वज्ञ है। लेकिन सर्वका शब्द सिद्ध है। सर्वज्ञ कैसे जान रहें है। क्या जान रहें है आदि बाते हम बाद में करेंगे क्योंकि अस्तित्व में है । विकल्प सिद्ध में केवल सत्तारूप का या असत्तारूप धर्मी का ही हम बोध करते हैं ग्रहण कर सकते हैं । इसलिये यह हमेशा ध्यान रखने योग्य बात है कि उन्होंने सर्वज्ञ ने जो भी प्राप्त किया विश्वास करने योग्य है।

अर्थ तो अनन्तात्मक होता है एवं शब्द संख्यात होते हैं। अन्नत को हम शब्दों में कहना चाहते हैं, समझ में नहीं आता ये तो भाव श्रद्धा का विषय है। महान दुर्लभ है। प्रत्येक व्यक्ति को इसके ऊपर श्रद्धान होता नहीं है।

उदाहरण- नीतिकारों ने कहा कि जब बरसात का समय आ जाता है तो ठण्डी हवा के कारण पानी की बूंदा-बांदी होने लगती है उस समय बरसाती मेढ़क टर्राने लगते हैं तो मानसरोवार में रहने वाले हंस वगैरह भागने लगते हैं जब मेढ़क टर्राने लगे तो मेढ़क का बोलना किसी काम का नहीं। इसी प्रकार की स्थिति पंचमकाल की है। किसी को चार बातों का ज्ञान हो जाता है तो बस चर्चा में ही समय गंवा देते हैं वस्तु स्वरूप की और दृष्टिपात तो करो अपार सागर के समान द्वादशांग अपरंपार है । ऐसे केवलज्ञान में दर्पण के समान (उज्जवलता) है उसमें सब कुछ आकर समाहित हो जाता है सब कुछ झलकता है।

पूज्य आचार्य श्री के इस चिंतन से फलित होता है कि सर्वज्ञ शब्द बहुयायत्ता अनन्त को जानने वाला होता है । और द्रव्य और गुण पर्याय को एक साथ जानता है सर्वज्ञता दिखती नहीं है यदि मूर्ति में कोई चीज झलकती है तो वीतरागता ही झलकती है वीतरागता का दर्शन करने से जिन दर्शन सार्थक होता है और यह जिनदर्शन निज दर्शन की ओर ले जाता है अतः हमें सर्वज्ञता के साथ वीतरागता को प्राथमिकता देनी होगी या फिर वीतराग विज्ञान का सापेक्ष संबंध स्थापित करना होगा प्रथम दृष्टया वीतरागता ही हमें आत्म दर्शन

मी-टू भारत की संस्कृति के लिये शर्मनाक घटनायें

❊ विजय कुमार जैन राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

भारत की संस्कृति सद्चरित्र को प्रधानता देने वाली रही है। व्यभिचारी व्यक्ति को समाज में तिरस्कृत किया जाता रहा है। वर्तमान में ऐसी घटनायें को महिलाओं द्वारा उजागर किया जा रहा है कि उसके साथ यौन शोषण किया गया है। जिन पर यौन शोषण के गंभीर आरोप लगाये जा रहे हैं उनमें राजनीतिज्ञ, सिनेमा कलाकार, कार्पोरेट जगत के व्यक्ति, पुलिस अधिकारी आदि सम्मिलित है।

सबसे चर्चित नाम भारत सरकार के विदेश राज्य मंत्री एम जे अकबर का है। जिन पर विदेशी पत्रकारों ने यौन शोषण का आरोप लगाया है। सुप्रसिद्ध सिने अभिनेता आलोक नाथ पर उनके साथ फिल्म में काम करने वाली कलाकार विनीता नंदा ने आरोप लगाया है। कार्पोरेट जगत के टाटा मोटर्स के सीनियर एक्जीक्यूटिव कार्पोरेट कम्युनिकेशन चीफ सुरेश रंगराजन पर जूनियर महिला कर्मचारी ने अनुचित व्यवहार का आरोप लगाया है। सुप्रसिद्ध सिने कलाकार नाना पाटेकर तनुश्री दत्ता ने सन् 2008 में फिल्म की शूटिंग के दौरान बदसलूकी का आरोप लगाया है। भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राहुल जौहरी पर लेखिका हरनिद्ध कौर ने उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाये हैं।

जम्मू कश्मीर में महिला डी एस पी शशि ठाकुर ने अपने वरिष्ठ अधिकारी ए डी जी आलोक पुरी पर 2015 में यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया हैं। महिला यौन उत्पीड़न की जो घटनायें पीड़ित महिलाओं द्वारा उजागर की जा रही है।

इनका नामकरण मी टू किया गया है। एवं मी टू केंपैन भी कहा जा रहा है। भारत सरकार के विदेश मंत्री सुप्रसिद्ध पत्रकार एम जे अकबर पर अनेक विदेशी पत्रकारों ने यौन उत्पीड़न के आरोप लगाये हैं। ओरोपों से घिरे एम जे अकबर जब उन पर आरोप लगे तब वह विदेश में थे। मी टू के आरोपों पर भारत सरकार की मंत्री मेनका गांधी ने चिंता व्यक्त करते हुये कहा है इन आरोपों की जांच होना चाहिये। एम जे अकबर के आरोपों पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी बोले हैं आपने कहा है आरोपों की जांच होगी।

सुप्रसिद्ध सिने अभिनेता आलोक नाथ की पत्नी आशू नाथ ने मुंबई की अंधेरी की कोर्ट में कलाकार लेखिका विनिता नंदा के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया किया है। आशूनाथ ने विनीता के आरोप की पुलिस से जांच कराने की मांग की है। नाना पाटेकार ने तनुश्री दत्ता के आरोप के बाद फिल्म हाउस फुल-4 छोड़ दी है।

मी टू केंपैन जो चल रहा है उसमें एक के बाद एक गंभीर आरोप लगाये जा रहे हैं। कोई आरोप दस वर्ष पुराना है तो कोई पांच वर्ष पुराना है। महिला यौन शोषण के आरोपों पर हमें पक्ष एवं विपक्ष दोनों दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। जिन महिलाओं द्वारा यौन शोषण के आरोप लम्बे अंतराल के बाद लगाये जा रहे इन आरोपों पर शंका होती हे जब आपके साथ उत्पीड़ की

घटनायें हुई उस समय आप चुप क्यों रही। लम्बे अन्तराल के बाद आपको अपनी वेइज्जती को शिकायत के रूप सबके सामने उठाने की याद किन कारणों से आई। जिन जिन पुरुषों पर यौन शोषण के गंभीर आरोप लगाये हैं अब इतने वर्ष वाद वह व्यक्ति आपको बुरा लगने लगा। इतने वर्षों तक मूंह बंद रखने के पीछे यह कारण तो नहीं है कि घटना से ज्रादा उन्हें अपने केरियर की चिंता थी।

मी टू केंपैन या यौन उत्पीड़न की घटनाओं को लेकर डॉ. उदित राज ने ट्यूटर पर अपनी मुखर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। डॉ राज ने लिखा है यौन उत्पीड़न के मौखिक या लिखित शिकायत को निर्णय मानकर इस्तीफा मांग लेना या सजा देने का मतलब पुलिस और न्यायिक व्यवस्था की आवश्यकता ही नहीं है और यदि मामला झूठा साबित होता है तो क्या मिट्टी में मिली हुई पुरुष की इज्जत वापस होगी।

हम रामकथा प्रसंग याद करते हैं रावण सीता जी हरण कर श्रीलंका ले गया। वहां रावण ने सीता जी की इच्छा के विरूद्ध किसी तरह की ज्यादती नहीं की। वर्तमान में भी विचारणीय है कि बिना सहमति के यौन शोषण हो गया और इस घटना को लम्बे समय बाद हम उठाकर सजा दिलाने एवं प्रतिष्ठा गिराने जोर शोर से प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

एक और राम कथा का ही प्रेरणादयक प्रसंग है जब रावण द्वारा सीता माँ का अपहरण किया तो सीता मॉ अपने आभूषण रास्ते में गिराती जा रही थी। जब आभूषणों से सीता जी की पहचान करने देवर लक्ष्मण जी से कहा तो उन्होंने कहा मैंने सीता भाभी के मात्र चरण ही देखे हैं मैं इन आभूषणों को नही पहचान सकता। भारतीय संस्कृति मैं वैवाहिक संस्कार से एक मात्र धर्मपत्नी से शारीरिक संबंध स्थापित कर वंश परम्परा को बढ़ाने का उल्लेख है। धर्म पत्नी के अलावा जो महिलायें है वे माँ बहिन और बेटी के समान मानी जायेगी।

मी टू केंपैन में एक और पहलु विचारणीय है इसमें जितना दोषी पुरुष को माना जा रहा है कहीं न कही उतनी ही दोषी तथाकथित पीड़ित महिला को भी माना जाना चाहिये। हम जैन धर्म उल्लेखित सात व्यसनों का भी यहाँ उल्लेख इस लिये कर रहे हैं। ये सात व्यसन प्रासंगिक हैं। ये सात व्यसन हैं शराब पीना, शिकार खेलना, चोरी करना, जुआ खेलना पर स्त्री में संबंध बनाना, वेश्या से संबंध बनाना एवं मांस खाना। जैन धर्म के आचार्यों एवं मुनियों ने कहा है जो व्यक्ति इन सात व्यसनों में से किसी एक व्यसन में लिप्त हो जाता है तो धीरे सातों व्यसनों के जाल में फंसकर अपना जीवन वर्बाद कर देता है। मी-टू के मामले भी सात व्यसनों का ही परिणाम है। इसी प्रकार जैन धर्म में पांच पाप का भी उल्लेख ही। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह को पांच पाप माना है। विवाहित धर्म पत्नी के अलावा अन्य महिला से शारीरिक संबंध पाप माना है।

हम यही कहेंगे पुरुष द्वारा किसी महिला से शारीरिक संबंध बनाना यौन शोषण करना जो जबरदस्ती करना निंदनीय कार्य है। जो आरोप लग रहे हैं उनकी जांच होना चाहिये। अगर शिकायत झूठी निकले तो आरोप लगाने वालों पर भी कठोर कार्यवाही होना चाहिये। **लेखक स्वतंत्र पत्रकार है**

चलो देखें यात्रा

गिरनार पर्वत

गुजरात के तीर्थों में तीर्थ शिरोमणि गिरनार सिद्ध क्षेत्र है। गिरनार तीर्थ क्षेत्र पर प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा है एवं इस तीर्थ पर पर्वतीय श्रेणी की उन्नत श्रृंखलायें हैं। 5वीं टोंक से भगवान नेमिनाथ के तीन कल्याणक सम्पन्न हुये दीक्षा कल्याणक, केवलज्ञान, कल्याणक एवं मोक्ष कल्याणक तथा पहली टोंक से शंबूक कुमार मोक्ष गये दूसरी टोंक से अनिरूद्ध कुमार तीसरी टोंक करोड़ों मुनि मोक्ष गये हैं। चौथी टोंक से महावती कामदेव कामदेव प्रद्धुम्न मोक्ष गये हैं यहां से मोक्ष जाने वाले सिद्ध परमात्माओं की संख्या 72 करोड़ 700 हैं। आचार्य कुंदकुंद देव ने जब इस तीर्थ की वंदना तब श्रुतदेवी ने घोषणा की थी आद्यौ दिगंवरा प्रथम दिगम्बर संत को वंदना करने का अधिकार है। तथा इस तीर्थ की चंदूगिरि गुफा में आचार्य धरसेन ने अपने शिष्यों भूतवली और पुष्पदंत ने षटखंडागम ग्रंथ की रचना की थी। यही पर एक प्यारे बाबा की प्रसिद्ध गुफा है। जिस गुफा में जैनो के प्रसिद्ध शिलालेख है एवं आचार्य कुंदकुंद देव ने इस तीर्थ को उर्जयन्त शिखर के नाम से घोषित किया है। पुराण साहित्य में गिरनार का नाम रैवत पर्वत है जूनागढ़ के जगमाल चौक में दिगम्बर जैन मंदिर, धर्मशाला, उपरकोट किला, राजुल का महल, दरवार, हाल कचहरी, नरसिंग भक्त मंदिर दर्शनीय है जूनागढ़ से गिरनार की दूरी 7 किमी. है पहुँच मार्ग-बस, रेल्वे द्वारा जूनागढ़ पहुँचा जा सकता है।

आवास व्यवस्था- 30 कमरे अटैच 14 कमरे विथ वाथरूम, 5 हॉल, यात्री क्षमता प्रत्येक हॉल में 30, 8 कमरे ए.सी. यात्री ठहराने की कुल क्षमता 500, विद्यालय है। भोजनशाला नियमित सशुल्क है।

सम्पर्क सूत्र : निर्मल वंडी अध्यक्ष- 9892240848, मंत्री- श्री महीपाल सालगिया- 9414109498, प्रबंधक श्री भागचंद सोगानी- 9887000828

कविता

सूरज पर धूल

आजकल सूरज को गालियाँ देने वाले बहुत हो गये हैं
सूरज को कोसने वाले बहुत हो गये हैं
सूरज पर फेंकते है धूल पर वे करते है कितनी भूल
सूरज का ताप प्रताम कभी न होगा कम
चाहे कोई लगाले कितनी दम सूरज से होते मेरे मुनिगण
उन पर तुम क्यों फैकते हो धूल अरे कर लो पूजा इनकी चढ़ाओ फूल
इनकी भक्ति से मिलता वैभव स्तवन से उच्च गोत्र और
दान से मिलते है भोग न कर सको विनय तुम इनकी
अपमान कभी तुम मत करना कर्मों का बंधन नहीं करना

अपेक्षाओं का अभाव ही है आनंदमय जीवन का प्रारंभ

❊ सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा दिल्ली ❊

गीता में कहा गया है कि मनुष्य को चाहिये कि वह कर्म तो करे लेकिन फल की इच्छा से रहित या निरपेक्ष होकर। निष्काम कर्म श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि निष्काम कर्म में न तो कर्त्ताभाव अर्थात् अहंकार उत्पन्न होता है और न अपेक्षित परिणाम के प्रति दुराग्रह ही। जब भी हम किसी कार्य को करने से पहले उसके परिणाम के बारे में सुनिश्चित हो जाते हैं तो अपेक्षित परिणाम न मिलने पर दुख होना स्वाभाविक है। वस्तुतः हमारे दुखों का कारण हमारी अपेक्षायें ही हैं। ये विभिन्न प्रकार की अपेक्षायें ही हैं जो जीवन के आनंद तत्त्व को सोख कर उसे नीरस बना डालती हैं। जितनी अधिक अपेक्षाएँ व्यक्ति उतना ही अधिक दुखी जीवन में उतना ही आनंद का अभाव।

यदि हम परिणाम के प्रति पूर्वाग्रही नहीं होंगे तो अपेक्षित परिणाम न मिलने पर दुख नहीं होगा अपितु अच्छा परिणाम मिलने पर अत्यधिक खुशी ही होगी। एक व्यापारी अपने हर सौदे में लाभ की अपेक्षा रखता है। यदि किसी सौदे में उसे अपेक्षित लाभ नहीं होगा तो उसे दुख ही होगा लेकिन यदि वह लाभ-हानि से निरपेक्ष होकर कार्य करता है तो लाभ न होने अथवा हानि की दशा में उसे दुख नहीं होगा अपितु लाभ होने की दशा में सुख ही मिलेगा। यदि हमें लाभ की अपेक्षा नहीं है और लाभ होता है तो निश्चित रूप से यह स्थिति आनंद प्रदायक ही होगी।

यदि हमें हर चीज रास्तें में मिल जाती है तो बहुत अच्दा लगता है। जिस वस्तु के लिये हम सौ रूपये देने को तैयार हैं लेकिन वह वस्तु अस्सी रूपये में ही मिल जाती है तो बीस रूपये की जो बचत होती है वह हमें अत्यंत आनंद प्रदान करती है। अस्सी रूपये में सौ रूपये की संतुष्टि के रूप में जो उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है वही हमारे आनंद का कारण है। इसी उपभोक्ता की बचत को जीवन के हर क्षेत्र में प्राप्त करने का प्रयास कर जीवन अधिकाधिक आंनदमय बनाया जा सकता है।

लाभ-हानि से निरपेक्ष होकर जब हम निष्काम कर्म की ओर अग्रसर होंगे तो ऐसे कार्यों के पूर्ण होने पर उपभोक्ता की बचत की स्थिति में होना स्वाभाविक है। जीवन में बार-बार ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होंगी तो हमारे स्वास्थ्य के लिये भी अच्छा होगा। अच्छे स्वास्थ्य वाला व्यक्ति ही कार्य को अतधिक कुशलतापूर्वक संपन्न कर सकता है। इस प्रकार हम योगमय जीने की ओर अग्रसर होते हैं क्योंकि गीता के अनुसार **योगः कर्मसु कौशलम्** अर्थात् योग ही कर्मों में कुशलता है।

यह निष्काम कर्म ही है जिसके द्वार हम प्रत्येक कर्म के माध्यम से अनपेक्षित अतिरिक्त खुशी प्राप्त कर आनंदित हो सकते हैं। सकाम कर्म की अवस्था में हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति ज्यादा सचेत और सचेष्ठ होते हैं। कार्य कैसे हो रहा है इसके प्रति सचेत नहीं हो पाते। हम दवा तो दे रहें हैं लेकिन इसके साइड इफैक्ट्स से अनभिज्ञ भी रहते हैं। रोग की चिकित्सा के साथ-साथ उपचार के दुष्प्रभाव अन्य रोगों को जन्म दे रहें हैं इस पर विचार करने का कष्ट नहीं करते। कार्य वही अच्छा है जिसका परिणाम भी अच्छा हो। मात्र कार्य की पूर्णता ही वास्तविक सफलता नहीं।

कई बार लक्ष्य प्राप्ति के उपरांत भी हम सफल नहीं माने जा सकते। जीतकर भी हार जाते हैं।

परीक्षा में मात्र अधिकाधिक अंक प्राप्त कर लेने से तो शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो जाती है। अंकों का अपना महत्व है लेकिन अधिकाधिक अंक प्राप्त करने के लिये स्वास्थ्य और दूसरी चीजों का दाँव पर लगा देना कहाँ तक उचित हैं ? शिक्षा के क्षेत्र में निष्काम कर्म का अर्थ है हम अध्ययन तो करें लेकिन मात्र अंक प्राप्त करने के लिये नहीं अपितु ज्ञानार्जन तथा प्राप्त ज्ञान के सही और सम्यक् उपयोग के लिये। शिक्षा हमें मुक्त करें तथा सम्यक् आजीविका में सहायक हो। यदि मात्र अच्छे अंकों के लिये परिश्रम किया और अपेक्षित अंक भी नहीं आयें तो निराशा स्वाभाविक है। यदि मात्र अंक प्राप्त करने के लिये अध्ययन नहीं किया तो अध्ययन भी उत्तम होगा और अंक भी अच्छे आयेंगे और उससे जो खुशी प्राप्त होगी वह दुर्लभ है। यही वास्तविक आंनद है जिसे निष्काम कर्म तथा अपेक्षायें कम करके प्राप्त करना अत्यंत सरल है।

हमारी अपेक्षाओं की सीमा नहीं होती। हमारी अपेक्षाऐं हमारे स्वयं के कार्य -कलापों तक ही सीमित नहीं होती बल्कि हम हर व्यक्ति, समाज, सरकार और हर स्थिति से कुछ न कुछ अपेक्षा रखते हैं । हम दूसरों की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं या नहीं इसकी हमें परवार नहीं है लेकिन दूसरें सब हमारी अपेक्षाओं पर खरे उतरें यह हमारी सबसे बड़ी अपेक्षा है। माता-पिता बच्चों से जिस प्रकार की अपेक्षा करते हैं वह किसी से छुपी नहीं है। बच्चे की रूचि किस विषय में हैं तथा उसकी कितनी क्षमता है यह जाने बिना और जानने के बावजूद भी उससे बहुत-बहुत अपेक्षायें करते हैं।

अत्यधिक अपेक्षाओं के कारण न केवल माता-पिता अपितु बच्चे भी दुखी हैं । कुंठा और तनाव से ग्रस्त हैं । कुंठा और तनाव अनेक प्रकार की दूसरी शारीरिक व्याधियों को जन्म देने वाली अवस्थायें हैं। अपेक्षायें कम करके अथवा निष्काम कर्म द्वारा हम तनाव व दबाव जैसी घातक व्याधियों से बचकर स्वस्थ और सुखी रह सकते हैं। स्वयं भी अपेक्षायें कम कीजिये तथा निष्काम कर्म की ओर अग्रसर होने का प्रयास कीजिये तथा दूसरों को भी निष्काम कर्म की ओर प्रेरित कीजिये।

यदि हम लाभ-हानि से निरपेक्ष होकर कोई कार्य करते हैं तो हमारा उद्देश्य लाभ नहीं होता अतः लाभ न होने पर मलाल नहीं होता लेकिन लाभ होता है तो खुशी अवश्य ही होती है। यह खुशी ही आनंदप्रदायक है। लाभ-हानि, यश-अपयश तथा मान-अपमान आदि परस्पर विपरीत स्थितियों में सम रह कर अथवा उनसे ऊपर उठकर जब हम कोई कार्य करते हैं तो वह भी योग की श्रेणी में आ जाता है। योगमय जीवन जीने की उत्तम अवस्था है। इस अवस्था में कार्य करने पर कार्य में जितने पूर्णता प्राप्त होती है अथवा सफलता मिलती है वह अन्यथा असंभव है। जीवन में अपेक्षाओं का अभाव तथा निष्काम कर्म ही वास्तविक सफलता की कुंजी है। हमारी अत्यधिक अपेक्षाएँ ही हमारे आनंद को कम कर सफलता को संदिग्ध बना देती हैं।

हमें जीवन में बहुत कुछ मिलता है लेकिन हमारी अपेक्षायें प्राप्ति से बहुत अधिक होती है। साथ ही हमारा ध्यान अभावों पर केन्द्रित रहता है। ऐसी अवस्था में संतुष्टि कहाँ ? अपेक्षायें नहीं होंगी तो हर प्राप्ति से असीम संतुष्टि और आनंद प्राप्त होगा। अपेक्षायें कम करके, अभावों पर ध्यान केन्द्रित न करके तथा प्राप्त के लिये कृतज्ञ होकर आगे निष्काम भाव से कर्म करके ही हम संतुष्टि के स्तर तथा आनंद में वृद्धि कर सकते हैं और यही वास्तविक प्राप्ति और सफलता है।

आगम दर्शन

कषाय पाहुड चूर्णिसूत्र एक अनूठा सूत्र ग्रंथ

आचार्य यतिवृषभ जी द्वारा कषाय पाहुड ग्रंथ पर सूत्र रचना की गयी है 180 गाथाओं की विवेचना करने के लिये 7009 सूत्र लिखें गये हैं। चूर्णिका सूत्रकार ने प्रत्येक पद को बीज पद मानकर व्याख्या रूप में सूत्रों की रचना की है इन सूत्रों के सात विभाग किये जा सकते हैं। 1. उत्थानिका सूत्र 2. अधिकार सूत्र 3. शंका सूत्र 4. पृच्छासूत्र 5. विवरण सूत्र 6. समर्पण सूत्र 7. उपसंहार सूत्र।

अधिकारनाम	सूत्र संख्या	अधिकारनाम	सूत्रसंख्या
प्रयोद्वेषविभक्ति	112	वेदक	668
प्रकृतिविभक्ति	129	उपयोग	321
स्थितिविभक्ति	407	चतुःस्थान	25
अनुभागविभक्ति	189	व्यंजन	2
प्रदेश विभक्ति	292	दर्शनमोहोपशमना	140
क्षीणा क्षीणाधिकार	142	दर्शनमोहक्षपणा	128
स्थि व्यन्तिक	106	संयमासंयमलब्धि	90
बन्धक	11	संयमलब्धि	66
प्रकृति संक्रमण	265	चारित्रमोहोपशमना	703
स्थिति संक्रमण	308	चारित्रमोहक्षपणा	1570
अनुभाग संक्रमण	540	पश्चिम स्कन्ध	52
प्रदेश संक्रमण740			

चूर्णि सूत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यतिवृषभ ने 15 अधिकारों का निर्देश करके भी अपने चूर्णि सूत्रों की रचना गुणधराचार्य के द्वारा निर्दिष्ट अधिकारों के अनुसार ही की है। यह स्मरणीय है कि यतिवृषभ ने अधिकार के लिये अनुयोगद्वार का प्रयोग किया है यह आगमिक शब्द है। अतएव उन्होंने आगम-शैली में ही सूत्रों की रचनाकार कसायपाहुड के विषय का स्पष्टीकरण किया है। चूर्णि सूत्रों का विषय कसाय पाहुड का ही विषय है। जिसमें उन्होंने राग और द्वेष का विशिष्ट विवेचन अनुयोग द्वारों के आधार पर किया है।

लघुकथा-मिलावट

एक स्त्री किसी साधु से प्रार्थना करते हुई बोली-महाराज आज हमारे घर पधारकर हमें कृतार्थ कीजिये। साधु उसके यहां गया। स्त्री ने उसके लिये एक कटोरी में दूध डाला, मगर जब दूध डालते वक्त हांडी की सारी मलाई कटोरी में गिर गई तो स्त्री के मुंह से बेसाख्ता अरे-अरे ! निकल पड़ा। फिर भी उसने उसमें शक्कर मिलाकर दूध साधु के आगे सरका दिया। साधु ज्ञान-उपदेश की बातें करता रहा, मगर उसने दूध न पिया। स्त्री समझती रहीं कि शायद दूध अभी बहुत गर्म है, इसलिये साधु महाराज नहीं पी रहें। जब चर्चा खत्म हुई तो वह साधु यूं ही चलने लगा। महाराज दूध तो पीजिये। स्त्री ने कहा। नहीं। तुमने इसमें मलाई और शक्कर के अलावा एक और चीज भी मिला दी है, इसलिये मैं इस दूध को नहीं पी सकता।

और क्या मिला दिया है, महाराज ?

अरे-अरे ! जिस दूध में अरे-अरे ! मिला हुआ है, मैं उसे नहीं पी सकता

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता अगस्त 2020

बंध न हो वंदना हो

प्रथम-

पावन से तीर्थराज पर, चलो चले हम पुण्य बढ़ायें
सिद्धों का चिन्तन करके, पाप कर्म दूर भगायें
ज्ञान ध्यान तप में लगकर, निज आत्म में लगाना हो
सुख सुविधा से मोह हटायें, तो फिर बंध न हो वंदना हो।

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

सिद्ध भूमि साधना हो सब नियम की पालना हो
पाप की सृजना हो बन्ध न हो वंदना हो।

ममता जैन, सागर

तृतीय-

जीवन का तीर्थ यात्रा सार हैं इसमें पुण्य फल अपार है
भव भ्रमण मिटाने की भावना हो प्रयास हो बन्ध न हो वंदना हो

श्रीमति अनीता जैन, इन्दौर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अगस्त 2020 का हल

01. रेवतीरेंज इन्दौर 12 शिष्यों के साथ
02. मिहिधाम झारखंड 9 साधुओं के साथ
03. अमृततीर्थ जबलपुर 5 साधुओं के साथ
04. दमोह (म.प्र.) 9 साधुओं के साथ
05. मवाना मेरठ (उ.प्र.) 3साधुओं के साथ
06. उदयपुर राजस्थान 8साधुओं के साथ
07. हस्तिनापुर 7 साधुओं के साथ
08. बेलगांव कर्नाटक 9 साधुओं के साथ
09. नासिक महाराष्ट्र 10 साधुओं के साथ
10. कोल्हापुर महाराष्ट्र 8 साधुओं के साथ
11. बाहुबलि महाराष्ट्र 2 साधुओं के साथ
12. बांरा राजस्थान 3 साधुओं के साथ
13. बागपत उ.प्र. 4 साधुओं के साथ
14. आगरा 10 साधुओं के साथ
15. छतरपुर म.प्र. 3 साधुओं के साथ
16. धारवाड कर्नाटक 13 साधुओं के साथ
17. महाराष्ट्र 8 साधुओं के साथ
18. कोल्हापुर महाराष्ट्र 22 साधुओं के साथ
19. महाराष्ट्र 5 साधुओं के साथ
20. राजस्थान 10 साधुओं के साथ
21. गुजरात 4 साधुओं के साथ
22. महाराष्ट्र 2 साधुओं के साथ
23. महाराष्ट्र 6 साधुओं के साथ
24. राजस्थान 9 साधुओं के साथ
25. राजस्थान 3 साधुओं के साथ
26. सौराष्ट्र 5 साधुओं के साथ
27. इन्दौर 6 साधुओं के साथ
28. कर्नाटक 10 साधुओं के साथ
29. देवास म.प्र. 5 साधुओं के साथ
30. राजस्थान 6 साधुओं के साथ
31. 23 माताजी
32. 22 माताजी
33. 6 प्रांतों में
34. एक सौ सात
35. एक सौ साठ
36. आठ
37. छह
38. तीन
39. दो
40. आठ
41. चार
42. छह
43. एक सौ ग्यारह
44. बावन
45. अकोदिया मंडी, 11 साधुओं के साथ
46. अकोदिया मंडी11 साधुओं के साथ
47. मदनगंज किशनगढ़, 3 साधुओं के साथ
48. हस्तिनापुर, 9 साधुओं के साथ
49. टोंक राजस्थान, 16 साधुओं के साथ
50. 100

पुराण प्रेरणा

असार शरीर

गते प्राणे क्व भवेत्सुप्रभा तनोः।
प्राण निकल जाने पर शरीर शोभा विहीन हो जाता है।

देहोऽयम ध्रुवः।
यह शरीर अनित्य है।

जलबुद्बुद् वत्कायः सारेण परिवर्जित।
शरीर पानी के बबूले के समान सारहीन है।

शरद्घन इवाकस्मादेहो नाशं प्रपघते।

जल बुद्बुदानिःसार कष्टमेतच्छरीरकम्।
यह शरीर पानी के बुदबुदे (बुलबुले) के समान निःसार है। यह बात बड़े कष्ट की है।

आनाय्ये नियतं देहे शोकस्यालम्बनं मुधा।
इस मरण शील शरीर के लिये शोक करना व्यर्थ है।

रोगोरगविलं कायम्।
शरीर रोग रूपी सांप का बिल है।

अल्पकालमिदं जन्तोः शरीरं रोग निर्भरम्।
रोगों से भरा प्राणियों का यह शरीर अल्पकालीन है।

रोगस्यायतनं देहम्।
शरीर रोगों का घर है।

रोगोरगाणं तु ज़यं शरीरं वामलूरकम
यह शरीर रोग रूपी सर्पों का घर है।

आदि पुराण से

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. इ म् उ न् श्र र् ई ज् अ र् आ स् ग् अ ई आ क् स् स् अ न् अ र
2. इ म् उ न् श्र र् ई ज् अ र् आ स् ग् अ ई अ र इ न् द् ओ ष
3. इ म् उ न् श्र र् ई ज् अ र् आ स् ग् अ ई भ् र् इ ओ न् ल् अ
4. इ म् उ न् श्र र् ई ज् अ र् आ स् ग् अ ई अ उ द् ल् र अ भ
5. इ म् उ न् श्र र् ई ज् अ र् आ स् ग् अ ई अ औ स् म् य्

परिणाम :
अगस्त 2020: (1) आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज (2)आचार्यश्री पवित्रसागर जी महाराज (3) आचार्यश्री पुलकसागरजी महा. (4) आचार्यश्री सुनीलसागरजी महा. (5) आचार्यश्री वर्द्धमानसागर जी महा.

केरियर

न्यूट्रिशन में अवसर

डायटेटिक्स : हमारे खानपान को प्रबंधित करने का विज्ञान है जबकि न्यूट्रिशन का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से होता है। वर्तमान में शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की खानपान में अनियमितता के कारण न्यूट्रिशन एक्सपर्ट की भूमिका बढ़ रही है। इस वर्ष प्रकाशित एक शोध में यह बात सामने आई है कि देश में स्कूल जाने वाले करीब 6 से 9 फीसदी बच्चे मोटापे का शिकार हैं यानी हर उम्र के लोग इन बीमारियों के शिकार हैं। इससे न्यूट्रिशन एक्सपर्ट की जरूरत और भी बढ़ जाती है।

आमतौर पर डायटिशियन और न्यूट्रिशियन को एक ही समझा जाता है लेकिन दोनों में बहुत ही महीन अंतर होता है। डायटिशिन का अर्थ होता है आहार विशेषज्ञ। ये वे प्रोफेशनल होते हैं जो अस्पतालों, हेल्थ केयर सेंटर और फिटनेश केन्द्रों से जुड़े होते हैं अस्पतालों और क्लीनिक में रोगियों के लिये कैसा भोजन बनाया जाना चाहिये या उन्हें क्या भोजन दिया जाना चाहिये। इस बात की जिम्मेदारी डायटिशियन की होती है न्यूट्रीशनिस्ट वे प्रोफेशनल होते हैं जो भोजन को लेकर रिसर्च करते हैं या इसे ज्यादा से ज्यादा बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं।

खाद्य उत्पाद बनाने वाली कंपनियां और संस्थानों में भी न्यूट्रिशन एक्सपर्ट की आवश्यकता हेाती है। ये नये उत्पाद बनाने ओर रिसर्च करने में मदद करते हैं। न्यूट्रिशन एक्सपर्ट की जिम्मेदारी होती है भोजन के पोषक तत्त्वों के बारे में रिसर्च करना खाने से जुड़े सभी तत्वों को समझाना खानपान आदतों को लेकर लोगों को सलाह देना आदि।

एलिजिबिलिटी : होम साइंस, न्यूट्रिशन, फूड साइंस या इससे संबधित बैचलर और मास्टर डिग्री कोर्स करने वाले छात्र इसमें कैरिअर बना सकते हैं। फिजिक्स, केमिस्ट्री और बॉयालॉजी से 12वीं करने के बाद छात्र होमसाइंस न्यूट्रिशन एण्ड डायटेटिक्स या फूड साइंस के बैचलर डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं कुछ संस्थानों में प्रवेश एंट्रेस टेस्ट के माध्यम से मिलता है। बैचलर डिग्री के बाद छात्र इसके मास्टर डिग्री कोर्स में भी प्रवेश ले सकते हैं। इसके अलावा छात्रों के पास डिप्लोमा कोर्स का विकल्प भी है। संबधित स्ट्रीमम से बैचलर डिग्री कर चुके छात्र पब्लिक हेल्थ एंड न्यूट्रिशन मास्टर डिग्री कर चुके छात्र पी.एच.डी में भी दाखिला ले सकते हैं ।

जॉब प्रास्पेक्ट: न्यूट्रिशन और डायटेटिक्स प्रोफेशनल को हॉस्पिटल, नर्सिंग होम, कॉलेजों और यूनिवर्सिटी सरकारी स्वास्थ्य विभागों में जॉब के अच्छे अवसर है। इसके अलावा ये प्रोफेशनल इंडियन कांउसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन और अंतराष्ट्रीय संस्थाओं में नौकरी की संभावनायें होती है। इस क्षेत्र में अपना क्लीनिक शुरू करना भी एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

कमाई : क्वालिफिकेशन और संस्थान के अनुसार वेतन 20 से 25 हजार मिलने की संभावनायें होती है।

युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष

❊ डॉ. अरविन्द पी जैन, भोपाल ❊

जब बच्चा पालने में होता है तो उसे पालना अपना संसार लगता है और जब वह युवा होता है तो उसे संसार छोटा लगने लगता है, युवा अपने सपनों को सच करना या देखना चाहता हैं पर कुछ सफल हो जाते हैं और अधिकांश असफल होते हैं।

किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं । स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

इन युवकों से ही देश की वास्तविक पहचान होती है। यदि देश के नवयुवकों में चारित्रिक दृढ़ता व नैतिक मूल्यों का समावेश हैं तथा वै बौद्धिक, मानसिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण हैं तो निस्संदेह हम एक स्वस्थ एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं।

परंतु यदि हमारे युवकों की मानसिकता रूग्ण है अथवा उनमें नैतिक मूल्यों का अभाव है तो यह देश अथवा राष्ट्र का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है क्योंकि इन परिस्थितियों में विकास की कल्पना केवल कल्पना तक ही सीमित रह सकती है, उसे यथार्थ का रूप नहीं दिया जा सकता है।

विश्व एकीकरण के दौर में अन्य विकासशील देशों की भांति हमारा भारत देश भी विकास की दौड़ में किसी से पीछे नहीं है। विगत कुछ वर्षों में देश में विकास की दर में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। विशेष्ज्ञ रूप से विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में आज हमारा स्थान अग्रणी देशों में है।

इसका संपूर्ण श्रेय हमारे देश के युवा वर्ग को कहा जाता है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि बुद्धि और शक्ति दोनों में ही हम किसी से पीछे नहीं है। हमारे देश में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में डॉक्टर , इंजीनियर तथा व्यवसायी निकलते हैं जिनकी विश्व बाजार में विशेष मांग है । पर योग्यता पाने के बाद अपनी आर्थिक उन्नति के लिये उन्हें विदेश जाना उचित लगता है।

निस्संदेह हम चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हैं। विश्व बाजार में अनेक क्षेत्र में हमने अपनी उपलब्धि दर्ज कराई हैं। अनेक क्षेत्रों में हमने अपनी उपलब्धि दर्ज कराई है। अनेक क्षेत्रों में हमने गुमनामी के अंधेरों से निकलने में सफलता प्राप्त की है। परंतु हम अपने देश के युवा वर्ग की मानिकसता, उनकी मनः स्थिति व उनकी वर्तमान परिस्थितियों का आकलन करें तो हम पाते हैं कि उनमें से अधिकांश अपनी वर्तमान परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं है। हमारे युवा वर्ग में असंतोष फैल रहा है।

देश के युवा वर्ग में बढ़ते असंतोष के अनेक कारक है। कुछ तो हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियाँ इसके लिये उत्तरदायी हैं तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटिपूर्ण राष्ट्रीय नीतियाँ एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी हैं । अनियत्रित रूप से बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिस्पर्धा से युवा वर्ग में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। जब युवाओं के हुनर का कोई राष्ट्र समुचित उपयोग नही कर पाता है तब युवा असंतोष मुखर हो उठता है।

हमारी शिक्षा पद्धति युवा वर्ग में असंतोष का सबसे प्रमुख कारण है। स्वतंत्रता के छह दशकों बाद भी हमारी शिक्षा पद्धति में कोई भी मूलभूत परिवर्तन नहीं आया है। हमारी शिक्षा का स्वरूप आज भी सैद्धांतिक अधिक तथा प्रयोगात्मक कम है जिससे कार्यक्षेत्र में शिक्षा का विशेष लाभ नहीं मिल पाता है। और शिक्षा नीतियों की प्रयोगशालायें बन चुकी हैं और हर सरकार अपने अनुरूप नीति को क्रियान्वन करना चाहती हैं जिसके घातक परिणाम हम भोग रहें हैं साथ ही युवा को अपनी मनपसंद विषयों को चयन करने की कम गुंजाईश होती है।

जैने जो डॉक्टर बनना चाहता हैं वह इंजीनियर बन जाता है या बनना पड़ता है।

परिणाम स्वरूप देश में बेकारी की समस्या दिनों-दिन बढ़ रही है। शिक्षा पूरी करने के बाद भी लाखों युवक रोजगार की तलाश में भटकते रहते हैं जिससे उनमें निराशा, हताशा, कुंठा एवं असंतोष बढ़ता चला जाता है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार से भी युवा वर्ग पीड़ित है।

सभी विभागों, कार्यालायों आदि में रिश्वत, भाई-भतीजावाद आदि के चलते योग्य युवकों को अवसर मिल पाना अत्यंत दुष्कर हो गया है। इसके अतिरिक्त हमारी राष्ट्रीय नीतियाँ भी युवाओं के बीच असंतोष का कारण बनती हैं। ये नीतियाँ या तो दोषपूर्ण होती हैं या उनका कार्यान्वयन सुचारू रूप से नहीं होता है जिससे इसका वास्तविक लाभ युवा वर्ग को नहीं मिल पाता है।

आज देश का युवा वर्ग कुंठा से ग्रसित हैं। सभी और निराशा एवं हताशा का वातावरण है। चारों ओर अव्यवस्था फैल रही है। दिनों-दिन हत्यायें, लूटमार, आगजनी, चोरी आदि की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। आयें दिन हड़ताल की खबरें समाचार- पत्रों की सुर्खियों में होती है। कभी वकीलों की हड़ताल, तो कभी डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक आदि हड़ताल पर दिखाई देते हैं। छात्रगण कभी कक्षाओं का बहिष्कर करते हैं तो कभी परीक्षाओं का। ये समस्त घटनायें युवा वर्ग में बढ़ते असंतोष का ही परिणाम हैं। समय पर परीक्षाओं का ना होना या इंटरव्यू देने के बाद बरसों नियुक्ति पत्र न मिलना।

देश के युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष राष्ट्र के लिये चिंता का विषय है। इसे समाप्त करने के लिये आवश्यक है कि हमारे राजनीतिज्ञ व प्रमुख पदाधिकारीगण निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के विकास की ओर ध्यान केन्द्रित करें एवं सुदृढ़ नीतियाँ लागू करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उनका कार्यान्वयन सुचारु ढंग से हो रहा है या नहीं। पर हर क्षेत्र में राजनैतिक हस्तक्षेप होना अनिवार्य हैं। बिना उनके पत्ता भी नहीं हिल सकता।

भ्रष्टाचार में लिप्त अफसरों व कर्मचारियों से सख्ती से निपटा जायें। देशभर में स्वच्छ एवं विकासशील वातावरण के लिये आवश्यक है कि सभी भर्तियों गुणवत्ता के आधार पर हों तथा उनमें भाई-भतीजावाद आदि का कोई स्थान न हो। हमारी शिक्षा पद्धति में भी मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा का आधार व्यवसायिक एवं प्रयोगात्मक होना चाहिये। जिससे युवा वर्ग को शिक्षा का संपूर्ण लाभ मिल सके।

देश का युवा वर्ग स्वयं में एक शक्ति है। वह स्वयं एकजुट होकर अपनी समस्याओं का निदान कर सकता है यदि उसे राष्ट्र की ओर से थोडा-सा प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हो जाये। युवाओं की नेतृत्व शक्ति कई बार सिद्ध की जा चुकी है। वर्तमान में हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री ने विगत 5 वर्ष पहले अपने घोषणा पत्र में यह उल्लेखित किया था कि प्रतिवर्ष 2 करोड़ नोकरियां देंगे पर देने की बजाय बेरोजगारी और बढ़ी।

अभी भी वर्तमान सरकार की बेरोजगारी पर कोई स्पष्ट नीति समझ से परे है। आज शिक्षित बेरोजगारों की स्थिति अत्यंत दयनीय हैं और कभी कभी ऐसे लोगों को आत्महत्या करने को मजबूर होना पड़ रहा है। स्थितियां बहुत विकराल और विस्फोटक हैं पर राजनेता मात्र भाषण और आश्वासन के कुछ न हीं किया जा रहा हैं। योग्य युवा कोई भी छोटी सी छोटी नौकरी करने के लिये तैयार हैं। व्यापार के लिये लागत और प्रतिस्पर्धा के कारण वे कुछ नहीं कर पा रहें हैं। इसके लिये सरकारों को निश्चित समय सीमा पर कोई ठोस कदम उठाना चाहिये तभी इस असंतोष को नियंत्रित किया जा सकेगा अन्यथा देश में क्रांति की संभावना से कोई नहीं रोक सकेगा।

गरीबी सबसे बड़ा अभिशाप हैं जो पढ़ लिखकर अन्धकार भविष्य में जीयेगा उसे क्या सूझेगा। पेट की भूख ओर काम की तलाश की पीड़ा उससे पूछों जो उस पर पूर्ण आश्रित हैं जो नेता टिकट न मिलने या चुनाव में हारने पर फड़फड़ाता हैं पर वे होते हैं भरे पेट उनकी पीड़ा समझो पहले जिनकी दम पर बने हो मंत्री युवा बेरोजगार बहुत खतरनाक बारूद हैं क्रांति पर उतर आयेंगा जब बन जायेगा ज्वालामुखी विस्फोटक।

कविता

मर्हुत और कार्ड

❋ वीरेन्द्र भूपत, सिरोंज ❋

देव उठनी ग्यारस हुई उदघाटन, सगाई, विवाह, भूमिपूजन
आदि के कार्ड छपने शुर हुये
सभी आयोजकों को अपने-अपने प्रभु याद आयें
कही की वीतरागायः नमः श्री महावीराय नमः,
श्री गणेशायन नमः श्री विष्णुदेवाय नमः
कार्डो पर छपा, कार्ड वटे प्राप्त लोगों ने कार्ड के भाव जाने
उदघाटन, सगाई, विवाह, भूमिपूजन हुआ या नहीं
वह कार्ड अवशिष्ट पदार्थ के साथ सड़क,
कचराघर, बाथरुम में फिका यह है हमारी सोच
अपने आराध्य प्रभु या उस मंत्र
के प्रतिज्ञा कार्ड पर अंकित हैं समझें विचार करे सोचे
नोटः कृपया शादी के कार्ड पर भगवान जी के
चित्र व मंत्र न छपवायें

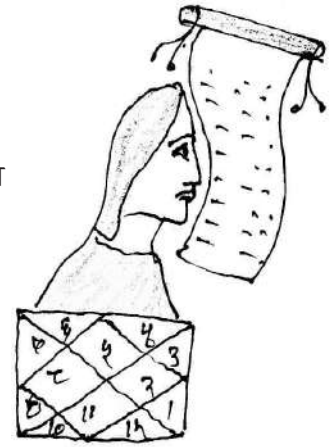

परमात्मा दर्पण है, आत्मा देखने के लिये

❊ आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण माताजी ❊

सुबह-सुबह स्नान करके तैयार होने के बाद हर आदमी शीशे के सामने जाता है। चेहरे पर लगी दाग ओर कालिख को शीशे में देखकर साफ करता है। बालों को बनाता है। स्नान किया तन की शुद्धि हेतु, तैया हुये तन की सुन्दरता हेतु। प्रतिदिन शरीर स्नान करने में, तैयार करने में काफी समय व्यतीत होता है। यदि वर्ष भर में समय का आंकलन किया जायें तो, एक बहुत बड़ा भाग निकल जाता है।

हमने शरीर शुद्धि का तो बहुत ध्यान रखा किन्तु आत्मा की शुद्धि के लिये परमात्मा के पास जाना चाहिये। ताकि मन की शुद्धि हो सके। दर्पण दखो चेहरे की कालिख मिटाने के लिये परमात्मा के दर्शन किये आत्मा की कालिख मिटाने के लिये। दर्पण को देख कालिख दर्पण में साफ नहीं करते बस चेहरे की साफ करते हैं। इसी तरह परमात्मा रूपी दर्पण को ध्यान से देखे और क्रोध की कालिख मान की कालिख मायाचारी, लोभ निंदा बुराई चुगली हिंसादि पापों की कालिख को साफ करो। ताकि आत्मा सुंदर बन सके। जिन आंखों से दर्पण शरीर का चेहरा देखा है उन्हीं आंखों से परमात्मा से आत्मा का चेहरा और आत्मा को शुद्ध बनाओं।

वैसे इन आंखों से दूसरों के दोष देखे हैं कि परमात्मा के दर्पण इन आंखों से स्वयं के दोष ढूंडो। यदि हमारी आंखें ठीक ना हो तो चश्मा लगाकर देखते हैं। यदि ज्ञान की आंख ठीक ना हो तो सम्यज्ञान (यथार्थज्ञान) का चश्मा लगाकर प्रभु दर्शन करना चाहिये तभी वीतराग प्रभु की मूर्त सही दिखायी देगी।

संसारी प्राणी के लिये वैराग्य बहुत कठिन है। किन्तु जब कोई पुरुष श्मशान घाट जाता है, मृत शरीर को जलते हुये देखता है तो थोड़ी देर के लिये उसका मन वैराग्य से भर जाता है। सोचता है यह दुनिया बेकार, सब कुद छोड जाना पड़ेगा, एक दिन मुझे भी यही आना है। फिर अपनी बुराईयों छोड़ने का संकल्प करता हूँ। पर ज्यों ही घर पहुँच स्नान करता है सारा वैराग्य धुल जाता है और 99 के चक्कर में फिर लग जाता है।

महिलाओं को भी वैराग्य आता है। जब सारे मेहनत करने के बाद घर वाले कहते हैं दिनभर करती क्या हो लड़ाई झगड़ा होने पर सोचती है मैं तो दीक्षा ले लूंगी। पर जहां राजीनामा होता है झंडे झुक जाते हैं और फिर वहीं मोह माया शुरु हो जाती है।

जब बच्चे छोटे होते हैं और पाप बन जाये तो पैर में लिपट जाते हैं। पापा या तो ले जाते है या बड़े प्यार से मना करते हैं। बच्चा कोई भी बात दस बार पूछता है तो भी जबाव प्यार में मिलता है किन्तु जब बच्चा बढ़ा हो जाता है वही पिता अब युवा हो गये उस बच्चे से कोई बात दो बार पूछे तो बच्चा चिड़चिड़ा पड़ता है। बार-बार क्यों पूछते हो मुझे जाना होगा चला जाउंगा। जब मन में विकल्प उठता है कि सब बेकार घर द्वार बेकार है।

जिस बच्चे के लिये तन लगाया धन मेहनत की। बीमारी से रात-राज जागे। उसे ले-लेकर घूमे वही बच्चा जब यह कहे कि तुमने हमारे लिये क्या किया। क्या है तब मन बड़ा परेशान होता है। जिसके लिये जिन्दगी लगा दी उसने दो शब्दों में सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। इतना समय आत्मा के हित में लगाया होता। इतना आत्मा का रखा होता तो कल्याण हो गया होता। **अतः समय रहते जाग जाओ।**

प्रवचन–आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

आत्मा का स्वभाव ज्ञान और दर्शन वाला है

जबलपुर- आत्मा का स्वभाव ज्ञान और दर्शन वाला है। यह स्वभाव या लक्षण चाहे किसी भी अवस्था में हो, हमेशा बना रहता है। शेष समाप्त हो सकते हैं, किन्तु ज्ञान और दर्शन किसी भी अवस्था में समाप्त नहीं हो सकते। ये उद्‌गार आचार्य विद्यासागर ने शनिवार को दयोदय तीर्थ में व्यक्त किये।

आचार्य श्री ने कहा कि जब कोई अरबपति दशा खराब होने पर करोड़पति होता है। दशा और खराब होने पर लखपति और फिर हजारपति हो जाता है। दशा और खराब होने पर सैकड़ों और फिर दहाई और एक रूपये तक पहुंच जाता है। अंततः दिवालिया हो जाता है। ऐसे में भिखारी बनकर भीख मांगने लगता है। उन्होंने कहा, गुरुओं ने कहा है कि ज्ञान और दर्शन कभी समाप्त नहीं होता। अज्ञान की दशा यदि समाप्त हो जायें तो महावीर भगवान के समान दिवालिया बनना गड़बड़ नहीं है। यह बहुत अच्छा है।

उन्होंने कहा कि लक्षण हमेशा लक्ष्य के साथ व्याप्ति रखता है। उसके साथ होना अनिवार्य होता है। इसी आधार पर हम विश्वास कर सकते हैं कि यदि विकास शुरु हो जाये तो एक पाई से दस पाई, दस पाई से एक रूपया, सैकड़ा बनता-बनता कैवल्य ज्ञान तक बन सकता है। उसके ऊपर तक विकास हो सकता है। सिद्धावस्था में पहुंच जाता है। मुक्त होने पर सुधरना अलग बात है, पर उससे पहले सुधरने में विकास होने की सम्भावना रहती है।

कविता

जैन शब्द गम्भीर

जैन शब्द में छुपा केवली का ज्ञान है
जैन शब्द में छुपा योगियों का ध्यान है
जैन शब्द में सदा वीतराग ज्ञान है
जैन शब्द में सदा शांति प्रवाधान है
जैन शब्द में विश्वमैत्री का विधान है ॥
जैन शब्द में सदा करूणा का वितान है
जैन ध्वजा की सदा अलबेली शान है
जैन धर्म रक्षा हेतु संत बलिदान है
जैन धर्म में सदा मानवीय संत सम्मान है ॥
जैन शब्द से हमारी उन्नति पहचान है
जैन शब्द से बढ़ पीढ़ीयों की शान है
जैन शब्द सत्य अहिंसा का सुंदर गान है
जैन धर्म अपना लिखों संतो का अरमान है ॥
इतिहास के पन्नों मे देखों जैन की क्या शान है
भारतीय संस्कृति में जैन योगदान है
कम न आँकों जैन को यह धर्म तो महान है
राष्ट्र के विकास में जैन अंश दान है ॥

■1 जुलाई

- सोपोर (जे.के) आतंकियों ने सी.आर.पी. एफ पार्टी पर हमला किया एक अधेड़ की मौत हुई सीकर के दीपचंद वर्मा शहीद हुये। वे बच्चे को बचाने के चक्कर में शहीद हुये।

- वरिष्ठ राजनयिक इन्द्रमणि पांडे को संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया।

- हांगकांग : नये राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अमल करते हुये 370 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

■ 2 जुलाई

- म.प्र. में शिवराज सिंह चौहान के मंत्रीमंडल में 28 नये मंत्री बने।

- पुंछा (जे.के) जिले की नियंत्रण रेखा पाक गोलीबारी का जबाब भारतीय सेना ने दिया 1 बंकर उड़ाया पाक के दो सैनिक ढेर हुये।

■ 3 जुलाई

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र अचानक फ्रंट लाइन चीन की सीमा पर गये घायल जवानों से मिले और कहां शांति की पहली शर्त वीरता है।

- फ्रॉस के प्रधानमंत्री एडवर्ड फिलिपे ने इस्तीफा दिया।

- सुरक्षाबल ने मुठभेड़ में आई उस आतंकी जहिद दास को मार गिराया।

■ 4 जुलाई

- भोपालः राज्यपाल अंनदीबेन ने प्रोटेम स्पीकर रामेश्वर शर्मा को नियुक्त किया।

- केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री आर.के.सिंह चीन उपकरणों के आयात पर रोक लगाई।

- केन्द्र ने चम्बल एक्सप्रेस को स्वीकृति दी।

■ 5 जुलाई

- जावराः ब्यूटी पार्लर गयी दुल्हन सोनू यादव की गला रेत कर हत्या कर दी कारण प्रेम प्रसंग रहा।

- गाजियाबाद : पटाखे फैक्ट्री में आग लगने से 7 महिलाओं और 1 बच्चे की मौत हुई।

- पाक में मजहवी गुटों ने कृष्ण मंदिर की नींव ढहा दी।

■ 6 जुलाई

- 62 दिन बाद चीनी सेना ने गलवान छोड़ा। 2 किमी. पीछे चीनी सेना हटी।

- कुवैत की नेशनल असेंबली की कानूनी व विधायी समिति ने एक्सपर्ट कोटा बिल को मंजूरी इस बिल का इरादा विदेशी कामगार कम करना है।

- महान संगीतकार ऑस्कर अवार्ड विजेता एनियों मोरिकिन का निधन हुआ वे 91वें वर्ष के थे।

■ 7 जुलाई

- ब्राजील के राष्ट्रपति बोल्सोनारो कोरोना पॉजीटिव हुये।

- वारूहेड़ा : दिल्ली-जयपुर हाइवे स्थित निखरी फ्लाई ओवर पर केमिकल ट्रेंकर का रिसाव होने से 200 गोवंश की मौत हुई।

- नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली की कुर्सी बचाने चीनी राजदूत होउ यानकी आगे आयी।

■ 8 जुलाई

- शोले फिल्म के सूरमा भोपाली जगदीप का निधन हुआ वे 81 वर्ष के थे आपने 500 फिल्मों में काम किया।

- सेना ने फेसबुक इंस्टाग्राम सहित 89 एप बैन किये।

- जयपुर : शहर के जयसिंहपुरा इलाके में टिड्डी मारने के लिये किये गये कीटनाशी छिड़काव से 6 मजदूर बेहोश हुये।

■ 9 जुलाई

- उज्जैनः 8 पुलिसकर्मी की हत्या करने वाल विकास दुबे महाकांल मंदिर से गिरफ्तार हुआ।

- अमेरिका के 5 राज्यों में कोरोना के रिकार्ड मामले 69000 सामने आये।

- नेपाल ने डी.डी. के सभी भारतीय चैनल बंद किये।

■ 10 जुलाई

- कानपुर के कुख्यात अपराधी विकास दुबे का एनकाउन्टर हुआ।

- सुप्रीम कोट ने प्रक्रियागत सुधार करते हुये वॉट्सएप ईमेल फेक्स भेजने की अनुमति दी।

- इंदौर परदेशीपुरा स्थित एक्सिस बैंक को दिन दहाड़े लूटा।

■ 11 जुलाई

- अभिताभ बच्चन एवं अभिषेक बच्चन कोरोना पॉजीटिव हुआ।

- गुजरात प्रदेश काँग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष हार्दिक पटेल बने।

- दिल्ली सरकार ने कोरोना के चलते दिल्ली वि.वि. की परीक्षायें रद्द कर दी।

■ 12 जुलाई

- बड़ा मलहरा के विधायक प्रद्युम्न सिंह लोधी भाजपा में शामिल हुये।

- म.प्र. में रविवार को एक दिन का टोटल लॉकडाउन।

- राजस्थान के उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने बगावत की और गहलोत सरकार को अल्पमत में होने का दावा।

■ 13 जुलाई

- 12 दिन बाद शिवराज सरकार के मंत्रियों के विभाग का वितरण हुआ।

- कोलकाता : हेमताबाद के भाजपा विधायक देवेन्द्रनाथ का शव घर के पास लटका हुआ मिला।

- नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. ओली ने दावा किया कि भगवान रामचंद्र जी भारत के नहीं नेपाल के थे । अयोध्या भारत में नहीं नेपाल में है भारत का अयोध्या नकली है।

■ 14 जुलाई

- राजस्थान के प्रदेश कॉग्रेस अध्यक्ष पद एवं उपमुख्य मंत्री पद से सचिन पायलट को हटाया ।तथा गोविंद सिंह डोटासरा को प्रदेशाध्यक्ष बनाया।

- पत्रकार अफकार के सम्पादक प्यारे मियां नाबालिगों के आरोप में फंसे उनकी अधिमान्यता रद्द हुई।

- भारतवंशी चंद्रिका प्रसाद संतोखी सूरीनाम के राष्ट्रपति बने।

■ 15 जुलाई

- नाबालिगों के यौन शोषण का आरोपी प्यारे मियां को श्रीनगर की होटल से पुलिस ने गिरफ्तार किया।

-निवास जमीन विवाद में दो सगे भाईयों ने 6 लोगों की हत्या कर दी। यह घटना मनेरी गांव की है।

- संजय सिंह मसानी को काँग्रेस का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया।

■ 16 जुलाई

- यरवड़ा जेल से ग्रिल तोड़कर 5 कैदी भागे।

-असम, गुजरात, हिमाचल, प्रदेशों में भूकम्प के झटके आये कोई जनहानि नहीं हुई।

-ओबामा बेजोस और बिलगेटस के ट्विटर अकाउंट हैक हुये।

■ 17 जुलाई

- विधायक खरीदने की साजिश के मामले में केन्द्रीय गजेन्द्र सिंह शेखावत पर राजद्रोह का केस दर्ज हुआ।

- नेपानगर के कॉग्रेस विधायक सुमित्रा देवी भाजपा में आई।

- भोपाल कोरोना के कारण विधानसभा का मानसून सत्र टला।

■18 जुलाई

- आई.पी.एस.बी मधुकुमार लिफाफे इकठ्ठे करते हुये कैमरे में कैद हुये उन्हें हटाकर पी.एच.क्यू अटैच किया।

- अपहृत अफगानिस्तान के निदान सिंह सचदेवा की भारतीय विदेश मंत्रालय ने रिहा कराया।

- रक्षामंत्री राजनाथ सिंह अमरनाथ गुफा पहुँचे।

■ 19 जुलाई

- 24 घंटे में देशभर में 40 हजार कोरोना मरीज मिले।

- अमेरिका नौसेना का बेड़ा अडंमान के पास पहुँचा चीन से तनाव बढ़ा।

- पाक से रावी नदी में बहकर आई 64 किलो हेरोइन सुरक्षाबल ने बरामद की।

■ 20 जुलाई

- सी.आर. पाटिल को गुजरात प्रदेश भाजना का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

- म.प्र. परिवहन आयुक्त मुकेश जैन नियुक्त हुये।

-बालासोर (उड़ीसा) जिले के सुजानपुर गांव के खेत में पीले रंग का दुर्लभ कछुआ मिला।

■ 21 जुलाई

- राज्यपाल लाल जी टंडन का निधन हुआ।

-अमेरिकी संसद मे लद्दाख पर एकमत से भारत के समर्थन प्रस्ताव पारित हुआ।

- पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी हत्याकांड में दोषी नालिनी ने जेल में आत्महत्या का प्रयास किया।.

■ 22 जुलाई

- मुकेश अम्बानी विश्व के 5वें नम्बर के अमीर आदमी बने।

- भरतपुर के राजा मानसिंह हत्याकांड के आरोपी डी.एस.पी कानसिंह भाटी सहित 11 लोगों को उम्रकैद की सजा एक अदालत ने सुनाई फैसला 35 साल बाद बाया।

- चीन चर्चो से यीशु की फोटो हटाने के आदेश सरकार ने दिये।

■ 23 जुलाई

- संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक पहली बार 75 साल के इतिहास में नहीं होगी। यह फैसला कोरोना के कारण लिया गया।

-रक्षा मंत्रालय ने भी सेना में महिला स्थाई कमीशन को मंजूरी दी।

- मांधाता विधायक नारायण पटेल ने काँग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुये।

■ 24 जुलाई

- पूर्व मंत्री मुकेश नायक के बेटे रोहित नायक के माल से 33 हुक्का लाउंज में गिरफ्तार हुये।

- मशूहर नृत्यांगना अमला शंकर का निधन हुआ वे 101 वर्ष की थी।

- उ.प्र. के स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह कोरोना संक्रमित हुये।

■ 25 जुलाई

- ह्यूस्टन स्थित चीनी वाणिज्य दूतावास पूरी सख्ती से खाली करवाया गया।

- गौंडा (उ.प्र.) अपहृत किये गये नमो गुप्ता को पुलिस 17 घन्टे में छुडाया 6 वर्षीय नमो के बदले 4 करोड़ की फिरौती मांगी थी।

- म.प्र. के मुख्य मंत्री शिवराज सिंह को कोरोना पॉजीटिव हुये।

■ 26 जुलाई

- असम और बिहार में भीषण बाढ़ से 12 लोग मरे 40 लाख लोग बेघर हुये।

-भारत की मदद से 11 सदस्यीय सिख समूह काबुल छोड़ भारत भूमि दिल्ली पहुँचा।

-बैतूल के जज महेन्द्र त्रिपाठी और उनके बेटे अभियान राज की फूड पाइजिंग से मौत हुई।

■ 27 जुलाई

- फ्रांस ने 10 राफेल विमान भारत को सौंपे 5 भारत की ओर रवाना हुये।

- राजस्थान स्पीकर ने सुप्रीम कोर्ट से विधायकों के अयोग्यता नोटिस मामले में याचिका वापस ली।

- एफ एस एस ए आई ने स्कूल गेट के 50 मीटर सीमा में कोल्ड्रिक्स, चिप्स, भटूरे बेचना अपराध घोषित किया।

■ 28 जुलाई

- बालीबुड की अभिनेत्री कुमकुम का निधन हुआ वे 86 वर्ष की थी।

- इजरायली पी.एम. बेजामिन नेतन्याहू के बेटे येर ने दुर्ग पर ट्वीट किया फिर भारतीयों से माफी मांगी।

- स्वास्थ्य जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिये ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बेरिस जॉनसन साइकिल पर घूमे।

■ 29 जुलाई

- अंबला : एयरबेस पर 5 राफेल विमान 3.10 पर लेंडिंग हुये। वायुसेना शामिल हुये।

- राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सत्र बुलाने संबंधी तीसरी अर्जी को राज्यपाल ने लौटाया।

- सुरक्षाबलों ने राजौरी में दो घुसपैठियों को मार गिराया।

■ 30 जुलाई

- औरंगाबाद (बिहार) के दाउदनगर में बैंक डकैती हुई 8 डकैतों ने 69 लाख लूटे।

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी ने मॉरीसस के सुप्रीम कोर्ट के भवन का उदघाटन किया।

- मणीपुर में घात लगाकर सेना पर पी.एल. ए के उग्रवादियों ने हमला किया 3 जवान शहीद हुये। 6 गम्भीर

■ 31 जुलाई

- डी.जी.सी. ए. ने 31 अगस्त तक सभी विदेशी उड़ाने रद्द की।

-जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की हिरासत अविध 3 माह बढ़ा दी गई।

- पंजाब में अमृतसर, बटाला ओर तरनतारन में जहरीली शराब पीने से 39 लोग मरे।

दिशा बोध

कृतज्ञता

1. आभारी बनाने की इच्छा से रहित होकर जो दया दिखाई जाती है, स्वर्गऔर पृथ्वी दोनों मिलकर भी उसका बदला नहीं चुका सकते।
2. अवसर पर जो उपकार किया जाता है, वह देखने में छोटा भले ही हो; परन्तु जगत् में सबसे महान् है।
3. प्रत्युपकार मिलने की चाह के बिना जो भलाई की जाती है, वह सागर से भी अधिक गहरी है।
4. किसी से प्राप्त किया हुआ लाभ राई की तरह छोटा ही क्यों न हो, किन्तु समझदार आदमी की दृष्टि में वह ताड़वृक्ष के बराबर है।
5. कृतज्ञता की सीमा किये हुए उपकार पर अवलम्बित नहीं है, उसका मूल्य उपकृत व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर है।
6. महात्माओं की मित्रता की अवहेलना मत करो और उन लोगों का त्याग मत करो, जिन्होंने संकट के समय तुम्हारी सहायता की है।
7. जो किसी को कष्ट से उबारता है, जन्म-जन्मान्तर तक उसका नाम कृतज्ञता के साथ लिया जायेगा।
8. उपकार को भूल जाना नीचता है, लेकिन यदि कोई भलाई के बदले बुराई करे, तो उसको तुरन्त ही भुला देना बड़प्पन का चिन्ह है।
9. हानि पहुँचाने वाले का यदि कोई उपकार स्मरण होआता है, तो महा भयंकर व्यथा पहुँचाने वाली चोट भी उसी क्षण विस्मृत हो जाती है।
10. अन्य सब दोषों से कलंकित मनुष्यों का तो उद्धार हो सकता है; किन्तु अभागे अकृतज्ञ का कभी उद्धार नहीं होगा।

इसे भी जानिये

भारतीय अतुल्य साहित्य

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
01.	मौर्यकालीन भारत	कमलापति त्रिपाठी (हिन्दी)
02.	मेरा वतन	विष्णु प्रभाकर (हिन्दी)
03.	माटी मटाल	गोपीनाथ मोहन्ती (उड़िया)
04.	मृच्छकटिक	शूद्रक (संस्कृत)
05.	मार्निंग फेस	मुल्कराज आनंद
06.	नाट्यशास्त्र	भरतमुनि (संस्कृत)
07.	नीति शतक	भर्तृहरि (संस्कृत)
08.	निशीथ	उमाशंकर जोशी (गुजराती)
09.	नागानन्दन	हर्षवर्धन
10.	नारी	हुमायुँ कबीर
11.	नकूधन्ती	दत्तात्रेय रामचन्द्र बेन्दरे (कन्नड़)
12.	नीम के फूल	लक्ष्मीकांत वर्मा (हिन्दी)
13.	निशान्त	विजयतेंदुलकर (मराठी)
14.	नेकेड ट्राइन्गल	बलवन्त गार्गी (अंग्रेजी)
15.	नेहरू द इन्वेशन ऑफ इंडिया	शीश बरूर (अंग्रेजी)

आओ सीखे : जैन न्याय

सांख्य मान्य सप्त भेद हेतु वाद की समीक्षा

सांख्य दर्शन ने हेतु के सप्त भेद बताते हुये अपना मत स्थापित किया है। उनके द्वारा हेतु सात प्रकार के इस तरह है -

1. मात्र मात्रिक का अनुमान - जैसे चक्षु के ज्ञान का अनुमान करना।

2. कार्य से कारण का अनुमान - जैसे बिजली को क्षणिक देखकर उसके कारण का अनुमान करना।

3. कार्यविरोधी - प्रकृति विरोधी के दर्शन से विरोधी का अनुमान जैसे बादल नहीं बरसेगा क्योंकि हवा प्रतिकूल है।

4. सहचर का अनुमान -चकवे युगल को देखकर, एक को देखकर दूसरे का अनुमान।

5. स्वस्वामी - स्व को देखने से स्वामी का अनुमान, छत्र विशेष को देखकर राजा का अनुमान।

6. बध्य घात का अनुमान - नेवले को प्रसन्न देखकर सर्प के मारे जाने का अनुमान।

7. संयोगी अनुमान - हाथ में त्रिदंड देखकर परिव्राजक का अनुमान।

जैनपक्ष न्यायदर्शन के 5 हेतुवाद की तरह सांख्य मान्य सप्त हेतुवाद भी खंडित हो जाता है। सांख्य के इस वाद को निरासन करने के लिये आत्मशोधक निम्न तर्क देते हैं।

तर्क 1 - इन 7 हेतुओं के अतिरिक्त भी हेतु हो सकते हैं ।

तर्क 2 - अविनाभाव होने से ही हेतु होता है न कि कारण होने से, क्योंकि कारण रूप तो सब हेतुओं में नहीं पाई जाती हैं।

तर्क 3 - अविनाभाव सब हेतुओं में पाया जाता है।

तर्क 4 - जो हेत्वाभास होते हैं , उनमें अविनाभाव नियम नहीं पाया जाता है।

तर्क 5 - अविनाभाव के नियम से ही हेतु साध्य का गमक होता है।

तर्क 6 - अविनाभाव के बिना कोई हेतु साध्य का साधक नहीं होता है।

तर्क 7 - अविनाभाव के होने पर ही सर्वत्र हेतुओं में गमकता देखी जाती है।

निष्कर्ष - सांख्य मान्य सप्त हेतु भेद वाद का औचित्य सिद्ध नहीं होता है।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

जैन संत
वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज

बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के परिवार में पिता श्री बिहारी लाल तथा माता श्रीमति कटोरी देवी के घर पर 18 सितम्बर 1916 को एक नोनिहाल का जन्म हुआ, इस परिवार ने नवजात शिशु के तीर्थं कर भगवान नेमिनाथ की पावन स्मृति में अत्यंत स्नेह से नेमिचंद्र नाम दिया। परिवार एक छोटे से गांव कोसमा जिला एटा (उत्तरप्रदेश) में रहता था। नेमिचन्द्र की बचपन में प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध मुरैना संस्कृत विद्यालय में हुई। यहाँ से अनेक जैन विद्वानों ने शिक्षा दीक्षा प्राप्त की थी। नेमिचंद्र ने पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धति का भी अच्छा ज्ञान अर्जित किया और चिकित्सक के रूप में उनकी काबिलियत के कारण आसपास के क्षेत्रों में उन्होंने काफी प्रतिष्ठा पाई।

नेमिचन्द्र को संसारिक विषयों में कोई रूची नहीं थी। उन में परित्याग की तीव्र इच्छा थी और वे अध्यात्म पथ पर अग्रसर होना चाहते थे। इसी दिशा में वे 20वीं शताब्दी के प्रथम दिगंबर जैन आचार्य श्री शांतिसागर मुनिराज जी के संपर्क में आयें, जिन्होंने फिरोजाबाद में नेमिचंद्र का यज्ञोपवीत संस्कार किया। सन्यासी नेमिचंद्र तप के मार्ग पर निरंतर अग्रसर होते रहे और आचार्य श्री वीरसागर मुनिराज जी से उन्होंने प्रतिमा व्रत प्राप्त किया।

सन्यास की ओर कदम- युवा नेमिचंद्र जी ने 28 जून 1950 को बड़वानी (मध्यप्रदेश) बावनगजा के पवित्र तीर्थ पर अपने गुरु आचार्य श्री महावीर कीर्ति द्वारा क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और इन्हें गुरु ने नाम दिया क्षुल्लकश्री वृषभसागर मुनिराज। क्षुल्लक की इस उपाधि ने उनके तप का मार्ग प्रशस्त किया। इसी राह पर उनके गुरु आचार्य श्री महावीर कीर्ति मुनिराज जी ने धर्मपुरी में 23 फरवरी 1951 को क्षुल्लक से एलक बनाया और अन्ततोगत्वा उन्हें 26 फरवरी 1953 को सिद्धक्षेत्र सोनागिर में दिगम्बर मुनि की उपाधि प्रदान की और नाम दिया श्री विमलसागर मुनिराज। 15 नवम्बर 1960 को टुंडला (उत्तर प्रदेश) में इन्हें आचार्य की पदवी का उन्नत स्थान प्रदान किया गया।

जैन सन्यासी और सन्यासिने आजीवन पदयात्रा के लिये प्रतिज्ञाबद्ध रहते हैं। अपने जीवन काल में आचार्य श्री विमलसागरजी ने देश भर में 5000 किमी. से अधिक की पद्यात्रा की और लोगो को अहिंसा, अपरिग्रह तथा अनेकांतवाद का उपदेश दिया, जो उनके अनुसार विश्वशांति का एक मात्र रास्ता है, और जिसके लिये वे आजीवन कृतसंकल्प रहे। उनके मन में संपूर्ण मानवता के लिये करूणा थी। वह सदैव कहते थे कि गरीब असहाय इंसानो तथा पशुओं पर दया

करो। आचार्य श्री विमलसागर जी समस्त मानवीय इच्छाओं के बंधन से मुक्त हो चुके थे। अपने तपस्वी जीवन के दौरान उन्होंने कुल 3266 दिनों का उपवास रखा और आजीवन अनाज, घी, दही, तेल और नमक ग्रहण नहीं किया। आचार्य श्री विमलसागर जी ने 100 से अधिक दीक्षा संस्कार सम्पन्न किये, जिनमें 40 मुनि दीक्षा तथा 29 आर्यिका माता जी, 1 एलक दीक्षा, 21 क्षुल्लक तथा 17 क्षुल्लिका दीक्षा अनुष्ठान शामिल थे। उनके अंतिम दीक्षित अनुयायी उपाध्यक्ष श्री ऊर्जयंत सागर मुनिराज हैं। आचार्य विमलसागर जी के अनेक पुस्तकों की रचना की, उनके द्वारा संस्कृत में रचित सिद्धचक्र विधान, जिन सहस्त्रनाम स्तोत्र तथा अन्य रचनायें सामान्य जन के लिये अमूल्य धरोहर हैं। आचार्य विमलसागर जी ने लोगों को जैन संस्कृति को सहेजने और संरक्षित करने को भी प्रोत्साहित किया। उनकी प्रेरणा पाकर अनेक प्राचीन मंदिरों और तीर्थ क्षेत्रों का जीर्णोद्धार तथा कुछ नये मंदिरों का निर्माण किया गया। इनमें शिखर जी का समवसरण मंदिर और राजगीर का सरस्वती मंदिर सबसे महत्वपूर्ण हैं।

आचार्य विमलसागर जी समस्त जैन समाज के लिये अत्यंत श्रद्धेय थे। जैन समाज ने उनकी महानता पर आदर एवं स्नेहपूर्वक उन्हें अनेक उपाधियों से अलंकृत किया जिनमें चरित्र चक्रवर्ती (1962 बाराबेकी में) निमित्त ज्ञान भूषण (1973 शिखर जी में) सन्मार्ग दिवाकर (1979 सोनागरि में) करूणानिधी (1983 औरंगाबाद में) वात्सल्यमूर्ति- अतिशय योगी (1985 लोहारिया में) कलिकाल सर्वज्ञ (1990 सोनागिर में) वात्सल्य रत्नाकर (1993 सोनागिर) में आदि शामिल हैं। 29 दिसम्बर 1994 को आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज झारखंड के गिरडीह जिले में तीर्थादिराज सम्मेद शिखर जी के पार्श्वनाथ हिल पर समाधि में लीन हो गये।

आचार्य श्री विमलसागर जी पर डाक टिकट- दिगम्बर जैन संप्रदाय के संत आचार्य श्री विमलसागर जी पर एक विशेष डाक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग ने बुधवार 14.12.2016 को जारी किया। यह डाक टिकट उनके जन्म शताब्दी महोत्सव पर दिल्ली में आयोजित समारोह में वित राज्यमंत्री श्री मनोज सिंह ने जारी किया।

इस अवसर पर प्रतिष्ठित सामाजिक नेता, बुद्धिजीवी, व्यापारी, उद्योगपति, जैन समाज के महत्वपूर्ण सदस्यों तथा विशेष रूप से आर के जैन मुम्बई, श्री निर्मल जैन सेठी महासभा अध्यक्ष, श्री नवीन जैन आगरा महामंत्री जैन राजनैतिक चेतना मंच, श्री सुमित जैन, श्री मुकेश जैन, श्री हेमचन्द्र जैन दिल्ली वाले उपस्थित थे।

डाक टिकट का डिजाईन- डाक टिकट में दिगम्बर जैन संत आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज एक चौकी पर बैठे हुये है। उनके दाये तरफ मोरपंख पिच्छी तथा कमण्डल पड़ा है। पीछे पृष्ठ भूमि में दिगम्बर जैन मंदिर का चित्र है। टिकट पर दाये और ईंग्लिश में तथा नीचे हिन्दी में आचार्य विमलसागर लिखा है। डाक टिकट के ऊपर 500 (पैसे मुल्य) तथा भारत व इंडिया लिखा है। इस स्मारक डाक टिकट को वेब ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया से 4 लाख 3 हजार संख्या में प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद से छपवाकर जारी किया गया।

कहानी

राम कहानी

घड़ी के 7 बजे थे आसमान में चांद बादलों की ओट से धरती की सुन्दरता को निहार रहा था । तारे अपनी टिम टिमाहट से जन-जन के नेत्रों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे । कहानी भी अपने नयनों से आसमान की बनती बिगड़ती पेटिंग को देख रही थी । लेकिन कुछ समय बाद मोबाइल की रिंगटोन ने अपनी ओर कहानी को खींच लिया था। कहानी ने स्मार्ट मोबाईल की स्क्रीन पर दृष्टि जमाई और देखा। डॉ. रामेश्वर का फोन आया। कहानी ने बड़ी उत्सुकता से कहा। हेलो क्या बात है आज मुझे आपने कैसे याद कर लिया।

रामेश्वर ने कहा मैं तो तुम्हें कभी भूला ही नहीं तो याद करने की बात कहाँ से आ गयी।

राम तुम्हें झूठ बोलने की आदत कब से पढ़ गई है।

कहानी तुमने मुझ पर कभी विश्वास क्यों नहीं किया, सचमुच में तुम्हे भीतर से चाहता हूँ पर तुम मेरी बात का भरोसा क्यों नहीं कर पाते।

राम तुम एक डॉक्टर और मैं एक नर्स हूँ, तुम एक ऊँचे पद पर बैठे हुये शहर के मान्य डॉक्टर और मैं सेवाकार एक नर्स, आखिर तुम्हारी बराबरी कैसे कर सकती हूँ । राम देखो कहानी प्यार में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है। गरीब और अमीर नहीं होता है यह तो सिर्फ भीतर की बात होती है। तेरे बिना मेरी जिंदगी मौत भी बन सकती हैं कहानी- नहीं, राम अनावश्यक बातें करके मेरी आँखों में आँसू लाने का काम मत करो मैं तुम्हारें आंतरिक प्रेम की सदैव आभारी रहूँगी । लेकिन मैं यही सोचती हूँ कि मेरे पास आखिर ऐसा क्या है जो आप जैसे एम.डी डॉक्टर को नर्स की जिंदगी जीने वाली अपनी ओर आकर्षित करती हैं । राम दुनिया तुमसे क्या कहेगी, एक नर्स को तुमने अपना जीवन साथी बना लिया। क्या तुम्हें अपने जैसी कोई डॉक्टर लड़की नहीं मिली।

राम- कहानी तुम्हारी सोच में बहुत नकारात्मकता है किसी इंसान की इज्जत उसके पैसे से नहीं होती है, श्री कृष्ण जी ने भी गोपियों से जो प्रम किया वह अखण्ड और अद्वितीय था। किसी के जीवन चरित्र करे उसके पैसे से नहीं भावनाओं से नापा जाता है।

कहानी- लेकिन नीतिकार कहते हैं बैर और प्रेम सदैव बराबरी वाले से करना चाहिये

मैं सोचती हूँ कि राम की बराबरी कहानी कैसे कर सकती है।

राम- बस समस्या तो यही है कि लोगनीति की बात करते हैं पर नीति मात्र सिद्धांत है, सिद्धांत और प्रयोग में बहुत अंतर होता है मैंने अपनी जिंदगी को सिद्धांत तक सीमित नही रखा है क्योंकि प्रयोग जीवन को तरल और सरल बनाता रहता है सिद्धांत सार्वभौमिक होता है यह सत्य है लेकिन प्रयोग अवसर के अनुसार नवीनता पैदा करता है। सिद्धान्त पत्थर की तरह होता है और व्यवहार प्लास्टिक की तरह होता है। जिसके जीवन में अकेला सिद्धांत होता है, व्यवहार नहीं होता है, वह लोग टूट जाते हैं। पर मै सिद्धांत और व्यवहार का समन्वय करना चाहता हूँ इसलिये कहानी मैं मुड़ सकता हूँ समझौता कर सकता हूँ पर तेरे सिवाय किसी को भी पलकों पर बिठा नहीं सकता हूँ।

कहानी- पर मेरी बात का सही जबाब नहीं दिया।

राम- मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कहानी तुम कौन सा जबाब चाहती हो। क्या तुम सिर्फ सवाल खड़ा करना जानती हो या फिर मेरे बिना बोले ही कुछ समझना चाहती हो।

जब राम और कहानी कि यह सब चर्चा चल रही थी तभी कहानी के शरीर में गरमाहट बड़ने लगी तब उसने राम से कहा बस रहने दो मेरी तबियत कुछ नरम-गरम सी हो रही है।

राम- तोक्या कल ड्यूटी पर नहीं आओगी।

कहानी- कल ड्यटी पर तो जरूर आऊँगी, जब दुनिया में कोरोना का हाहाकार मचा तो और देश में भी कोरोना के मरीज बढ़ रहे हों ऐसे समय में मैं अपने कर्म से मुख नहीं मोड़ सकती हूँ।

राम- ठीक है कहानी ! कभी और बात करेंगे आज इतना ही रहने दो।

कहानी- ने अपना मोबाइल समेटा और सीढ़ियों से नीचे उतरकर अपने कमरे में पहुँच गयी। रात गहराने लगी कहानी के शरीर का तापमान बढ़ने लगा। कहानी ने अपने किट से थर्मामीटर लगाया। 2 मिनिट बाद कहानी ने देखा तो पारा 104 के ऊपर था। कहानी समझ गयी कि मुझे सामान्य से अधिक बुखार है, पर वह यही नहीं समझ पा रही थी कि इस बुखार आने का कारण क्या हैं छत पर बैठे- बैठे अचानक बुखार क्यों आ गया कहानी सोचने लगी कि राम को बुलाऊँ परन्तु उसके मन में आशंका हुई यदि मैं राम को इतनी रात में बुलाऊँगी तो मोहल्ले वाले क्या-क्या अटकनें जोड़ेंगे पर बेहतर यह होगा कि सुबह ही मैं स्वयं जाकर जाँच करा लूँगी। लेकिन पूरी रात करवट बदलते कहानी नहीं कट पा रही थी वह ट्रेनों की आवक-जावक सुनती रही रोड़ वर कितने आटो और कितने वाहन गुजरे-वह गिनती लगाती रही थी मुश्किल घड़ी के 4 बज पाये और कहानी को तेज बुखार हो गया छीकें आने लगी। वह सामान्य सी रही कहानी न जाने अचानक कैसे असामान्य हो गयी वह खुद भी नहीं समझ पा रही थी। कहानी सोचने लगी 8 बजे जब मैं ड्यूटी पर जाऊँगी तक ही जाँच करा लूँगी।

कोरोना के दौर में उसे भी कुछ आशंका सी हुई ऐसा तो नहीं कि मैं भी रोगियों की सेवा करते करते कोरोना की चपेट में तो नहीं आ गयी हूँ। फिर कहानी का आत्म विश्वास जागा

उसने अंदर की आवज को सुना जो कहानी थी कि नहीं कहानी तुम्हें कोरोना नहीं हो सकता क्यों तुम्हारा जन्म ही दुखियों की सेवा करने के लिये हुआ हैं दीन दुखियों की सेवा करने वालें पर सदैव भगवान का आशीर्वाद रहता है तुम चिंता मत करो आगे बढ़ो सेवा करों हाँ यह बात अलग है कि कर्मयोगी यदि थक जायें तो वह प्रभु से शक्ति की याचना करता हैं प्रार्थना करता है परन्तु वह विश्राम नहीं लेना चाहता है।

जेसे तैसे घड़ी के 7 तो बज गये। परन्तु कहानी की हिम्मद विस्तर छोड़ने की नहीं हुई। फिर अपना उसने मोबाईल उठाया और राम का नम्बर डायल किया पूरी घण्टी जाने के बाद भी किसी ने कोई जबाब नही दिया। राम का जबाब न आने के बाद कहानी सोचने लगी कि मैं क्या करूँ घण्टी करूँ या डायल करूँ और कहानी ने फिर से डायल कर दिया तब भी राम ने फोन नही उठाया तो वह चिन्ता में पढ़ गयी कि बात क्या हैं कि राम फोन उठाने में इतनी देर तो करता ही नहीं पर आज क्या हो गया कही मेरे से कुछ गुस्सा तो नही तीसरी बार कहानी ने फिर डायल कर दिया इस बार आशा कि किरण जग गयी और राम ने फोन उठाया राम बोला सॉरी क्या बात है आज सुबह-सुबह कैसे याद किया।

कहानी कुछ बोल नहीं पा रही थी उसकी साँसे फूल रही थी। राम ने फिर से कहा हैलो कहानी बोलो न क्या हुआ कुछ तो बोलो कहानी भारी भरकम आवाज में बोली मुझे रात भर जोरदार बुखार रहा और अब छीकों के साथ जुकाम भी हो रहा है। राम ने धैर्य का परिचय देते हुये कहा कहानी तुम चिंता मत करो मैं तुम्हारे घर पर डॉ. एस.के. वर्मा को लाता हूँ। और पूरी जांच घर ही हो जायेगी।

15 मिनट का भी समय नहीं हुआ डॉ. रामेश्वर तिवारी उर्फ राम और उनके साथ डॉ. एस.के. वर्मा के साथ दो कम्पाउंडर भी थे कहानी के कमरे पर पहुँच कर घंटी घनघनाई कहानी ने लॉक खोला और चेहरे पर मास्क लगा लिया पलंग पर बैठ गई साथ में कम्बल डॉ. वर्मा ने चेक अप करने के बाद कहा मुझे तो डॉ. राम ऐसा लग रहा है जैसे मिस कहानी को कोरोना संक्रमित हो गया है।

कम्पाउंडर ने अपने बैग में से कोरोना संक्रमण की जांच करने के लिये निकाला और सब प्रकार की जांच करने के लिये सेम्पल के लिये डॉ. वर्मा ने कहा इनको आईसोलेट कर दिया जाये तो ठीक रहेगा। राम की चिन्ता बढ़ गई राम ने अपना चश्मा कुछ ऊपर नीचे किया और कहा अरे वर्मा जी क्या हम ऐसा नहीं कर सकते कि इन्हें इसी कमरे में क्वराइंटन कर दी जाये तो कैसा रहेगा।

डॉ. वर्मा ने कहा मैं आपकी इस बात से पूर्ण रूपेण सहमत नहीं हो पा रहा हूँ पर मैं मानता हूँ कि आइसोलेट बेहतर कोई भी चीज नहीं हो सकती है यदि रिपोर्ट निगेटिव भी आई तो कोई ज्यादा नुकसान नहीं होगा और पॉजीटिव आई तो फायदा ही फायदा है।

कहानी बोली डॉ. साहब मझे अभी बहुत दीन दुखियों की सेवा करनी है मेरी रिर्पोट पॉजीटिव तो आ ही नहीं सकती है आयेगी तो सिर्फ निगेटिव।

राम ने कॉल किया और थोड़ी देर बाद कहानी के घर के सामने एम्बोलेन्स खड़ी हो गई और क्या था कहानी ने अपने घर का ताला डाला और आइसोलेन्ट में शिफ्ट होने चली गई जो भी सेवा के लिये आईसोलेन्ट औरों के लिये बनाये गये थे उसमें कहानी ने कभी सोचा

नहीं था कि खुद रहना पडेगा । कहानी की देखभाल बहुत अच्छे से हो रही थी सभी स्टॉफ कहानी का बहुत ख्याल रख रहा था।

सेम्पल पेथोलॉजी में जा चुके थे कहानी का सोच हर पल यही होता था कि जो मैं सेवा करने वाली थी आज कैसा दिन आया कि मैं निठ्ठल्ली बैठकर सेवा करा रही हूँ खैर कोई बात नहीं कभी गाड़ी नाव पर सवार होती है तो कभी नाव गाड़ी पर सवार हो जाती है यह सब समय-समय का फेर है । अब कहानी को सामने यही समस्या खड़ी हो गई कि समय कैसे गुजरे उसने पहले अनेक भजन गाये जब भजनों का स्टॉक समाप्त हो गया तो उसके मस्तिष्क में एक गीत कौंध गया वह अपने साथ में एक डायरी पेन तो ले ही गई थी उसने लिखना शुरु कर दिया।

गम दुनिया में सबके आते,
गम से देखो सबके नाते,
गम दुनिया में बहुत बड़े है
द्वार द्वार पर गम ही खड़े है
लोगों का जब देखा गम
लगा मेरा गम सबसे कम

सीने पर हाथ रखकर खाँसने वाली अपनी लिखी कविता पढ़कर मुस्करा उठी और भीतर से चहक उठी ऐसा लगा नकरात्मक सोच का गहरा कुहासा छँटने लगा हो और सकरात्मक सोच की रश्मि ने जैसे झाँकना शुरु कर दिया हो अकेले में रहने का आनंद आना प्रारंभ हो गया था । देखते ही देखते कहानी खिल उठी सेहत में सुधार आना शुरू हो गया वह सोचने लगी कि कोरोना वायरस ने जहाँ लाखों लोगों की जान ले ली वहीं मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ कि मात्र एकान्त में ही तो हूँ जेल में तो नहीं देहांत से एकांत तो श्रेष्ठ ही है। खाँसी बुखार और छींक तब तीन दिन में ठीक हो गया परन्तु जब तक लैब रिर्पोट नेगेटिव न आ जाये तब आईसोलेन्ट से बाहर निकलना उचित नहीं है । जब कहानी यह सब सोच ही रही थी कि रानी नर्स ने आईसोलेन्ट का कॉच खोला ओर कहा कहानी आ जाओ बाहर पहले तो मेरी आपको ढेर सारी बधाईयाँ क्योंकि आपकी रिर्पोट नेगेटिव आयी है कहानी भावुक होकर रानी के गले लगना चाहती रानी पीछे हटकर बस यही बलती तो नहीं करनी होगी हमें सोशल डिस्टेंसिंग तो बनाकर अब सदैव रहना होगा चाहे कोरोना का संकठ क्यों न कितना ही कम हो जाये। इसी बीच डॉ. रामेश्वर तिवारी उर्फ राम ने भी दस्तक दी राम और कहानी एक दूसरे को जी भर निहारते रहे तब राम चलो आगे बढ़ो और हम तुम मिलकर आज रात एक दिया जलायेंगे। तब कहानी ने पूँछा कि आज दिया जलाने कि क्या जरूरत।

राम ने कहा कि आज 5 अप्रैल है कहानी तुम्हें नहीं मालूम कि देश के प्रधानमंत्री ने कोरोना रूपी अंधकार से लड़ने के लिये संकल्प की रोशनी बिखरने का आह्वान किया है। हम भी एक साथ मिलकर दिया जलायेंगे और कोरोना अंधेरा दूर भगा कर सामूहिक शक्ति का जज्बा पैरा करेंगे साथ में कच्चे धागे से बांधकर जीवन भर लिये बन जायेंगे।

राम कहानी हुआ वही कि राम और कहानी एक दिया जलाया और सदा-सदा के लिये जीवन साथी बन गये ओर बाद सामाजिक विवाह भी हुआ।

हमारे गौरव

वानसवंशी महाराज चांकिराज

चांकिराज- चांकणार्य या चांकिमय्य वानसकुल में उत्पन्न कोम्मराज और उसकी पत्नी अव्विकाम्बिका का सुपुत्र था। अपने वंश का सूर्य अर्हत्शासन का स्तंभ कलिकाल-श्रेयांस, सम्यक्त्व - रत्नाकर, अपने आश्रित शिष्टजनों की इष्टमूर्ति करने वाला, आहार-अभय-भैवज्य-शास्त्र रूप चतुर्विध दान तत्पर यह धर्मात्मा राजपुरुष चालुक्य सम्राट त्रैलोक्यमल्ल की महारानी केतलदेवी का गणकचूड़ामणि (अकाउण्टेण्ट-जनरल या दीवान) था महारानी स्वयं उस समय पोन्नपाड, अग्रहार की शासिका थी। मूलसंघ-सेनगण पोगरिगच्छ के अनेक राजाओं द्वारा पूजित ब्रह्मसेन मुनिनाथ के प्रशिष्य और आर्य सेन मुनि के शिष्य महासेन मुनीन्द्र के चरण कमलों का वह भ्रमर था और प्रिय छात्र (विद्याशिष्य) भी था । इस चांकिराज ने पोन्नवाड के त्रिभुवनतिलक-चैत्यालय में जिसके मूलनायक शान्तिनाथ देव थे पार्श्वनाथ सुपार्श्वनाथ और शांतिनाथ तीर्थंकरों की पृथक-पृथक तीन सुन्दर वेदियाँ बनवायी थी और उनमें मनोज्ञ जिन प्रतिमायें प्रतिष्ठापित की थी। उक्त वेदियों या चैत्यालयों के लिये उसने महाराज और महारानी की अनुमति पूर्वक 1054 ई. में अलग-अलग बहुत सी भूमि और मकान जायदाद दान की थी। उनमें से सुपार्श्वनाथ का उसने स्वपिता कोम्मराज की पुण्य स्मृति में प्रतिष्ठापित किया था। पार्श्वनाथ की प्रतिमा मुनि महासेन के एक अन्य छात्र जिनवर्मा ने स्थापित की थी और शान्तिनाथ का मनोज्ञ बिम्ब चांकिराज ने स्वयं स्थापित किया था।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.ः8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

जैन सेनापति

❊ हुकुमचंद्र जी सांवला, विश्व हिन्दु परिषद उपाध्यक्ष ❊

• **महाराज चेटक–** विशाल एवं शक्तिशाली गणतन्त्रात्मक वज्जिसंघ के अध्यक्ष तथा वैशाली महानगरी के अधिपति और भगवान महावीर के मातामह, महाराज चेटक अपने समय के सम्पूर्ण भारत वर्ष के सर्वप्रधान सत्ताधीशों में से थे। महाराज चेटक की महादेवी का नाम सुभद्रा था। दोनों ही परम श्रद्धालु जिनभक्त थे। मगध में राजगृह के निकट जिनायतन भी था। रणक्षेत्र में भी वह इष्टदेव की पूजा-अर्चना करना नहीं भूलते थे। अहिंसा धर्म अनुयायी होते हुये भी बड़े पराक्रमी और वीर योद्धा थे। कहा जाता है कि अनेक शत्रुओं को चेटी या दास बना लेने के कारण ही वह चेटक कहलाने लगे थे। जिस संघ के वह अधिनायक थे, उसमें अनेक गण सम्मिलित थे तथा संघ की व्यवस्था एवं प्रशासन के हेतु **उसके राजा उपाधिधारी 7707 सदस्य थे।** महाराज चेटक ने अपनी बुद्धि, साहस, वीरता सौजन्य एवं राजनीति पटुत्व के बल पर उन सबके बीच वैशाली गण संघ को धन, वैभव, शक्ति, संगठन अनेक दृष्टियों से उक्त नरेशों की ईर्ष्या का पात्र बना दिया था।

• **राजर्षि उदायन–** भगवान महावीर के परम भक्त उपासक नरेशों में सिन्धु-सौवीर देश के शक्तिशाली एवं लोकप्रिय महाराजाधिराज उदायन का उच्च स्थान था। उनके राज्य में सोलह बड़े-बड़े जनपद थे 363 नगर तथा उतनी ही खनिज पदार्थों की बड़ी-बड़ी खदानें थी। दस छत्र मुकुटधारी नरेश और अनेक छोटे भूपत्ति, सामन्त, सरदार, सेठ-साहूकार उनकी सेवा में रत रहते थे। महाराज उदायन के उदार एवं न्याय-नीति पूर्ण सुशासन में प्रजा सर्व प्रकार के भय से मुक्त हो सुख और शान्ति का उपभोग करती थी। इतने प्रतापी और महान् नरेश होते हुये भी महाराज उदायन अत्यन्त निरभिमानी, विनयशील, साधु सेवी और धर्मानुरागी थे। **भगवान महावीर की देहाकार सुवर्णमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।** भगवान महावीर के साक्षात् सम्पर्क से वह राजदम्पत्ती इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने श्रावक के बारह व्रत धारण किये। धर्म ध्यान तथा साधुओं की सेवा वैयावृत्य आदि में उन्हें विशेष आनन्द था। राजा-रानी और पुत्र अभीचकुमार ने मुनि दीक्षा ली।

• **श्रेणिक बिम्बसार–** भगवान महावीर के अनन्य भक्तों और उनके धर्म तीर्थ के प्रभावकों में मगध नरेश श्रेणिक बिम्बसार का स्थान सर्वोपरि है। भगवान का जन्म, समवसरण और मोक्ष की भूमि राजा श्रेणिक के मगध राज के अन्तरगत ही मानी जाती है। भगवान महावीर और उनके तीर्थंकरत्व की इतनी निकटता एवं घनिष्ठता का प्रधान कारण अवश्य ही मगधाधिपति महराज श्रेणिक और उनके प्रायः सम्पूर्ण परिवार को भगवान के प्रति अनन्य भक्ति, श्रद्धा और प्रेम थे। भाई चिलातिपुत्र ने राज्य काल से विरक्त हो दत्त नामक जैन मुनि से दीक्षा ले ली। परिणाम स्वरूप श्रेणिक को राज्य करने का अवसर मिला। श्रेणिक ने राजधानी का पुनः निर्माण किया, शासन की सुव्यवस्था की , अपनी राज्य शक्ति को संगठित किया और उसका सर्वतोमुखी विकास एवं विस्तार करने में जुट गये। इन कार्यों में अपने चतुर मित्र अभय कुमार से बड़ी

सहायता मिली। उसने चेटक की पुत्री चेलना और कोसल की राजकुमारी कोशल देवी (प्रसेन जित् की बहन) के साथ विवाह किया उन दोनों शक्तिशाली पड़ौसी राज्यों के स्थायी मैत्री के सूत्र में बांध लिया। चेटक सुता चेलना उसकी पट्टमहिषी रही। वह कुशल शासक तो था ही। उसके राज्य में न किसी प्रकार की अनीति थी और न किसी प्रकार का भय था। वह दयाशील एवं मर्यादाशील था। साथ ही बड़ा दानवीर और निर्माता भी था। राजधानी के के पुनःनिर्माण एवं सर्वप्रकार सुन्दर बनाने के अतिरिक्त उसने सिद्धांचल-सम्मेदशिखर पर जैन निषिधकाएँ तथा अन्यत्र अनेक जिनायतन, स्तूप, चैत्यादि भी निर्माण करायें । श्रेणिक जैन धर्म और भगवान महावीर का अनन्य भक्त था। चेलना स्वयं महावीर की मौसी (या ममेरी बहन) थी। वह अत्यन्त पति-परायणा, विदुषी और धर्मात्मा थी। तीर्थंकर महावीर का प्रथम समवसरण में महाराज श्रेणिक सपरिवार एवं सपरिकर उपस्थित हुये थे। **श्रेणिक ने गौतम गणधर के माध्यम से भगवान से एक–एक कर साठ हजार प्रश्न किये थे,** और-उन्होंने उन सबका समाधान किया था। उक्त प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर ही विपुल जैन साहित्य की रचना हुई।

• **महाराज उदायी–** महाराज चेटक के पुत्र कुणिक का पुत्र उदायी था। जैन साहित्य में उसका वर्णन एक महान जैन नरेश के रूप में आया है। वह कुणिक की पट्टरानी पद्मावती के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में उल्लेख है। वह सुशिक्षित सुयोग्य और वीर राजा के रूप में सिद्ध हुआ। उसी ने सुप्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर, जिसे कुसुमपुर (पटना) कहते हैं । और उसे ही अपनी राजधानी घोषित किया, वह परम जैन भक्त था।

• **महाराज जीवन्धर–** दक्षिण भारत में मैसूर राज्य का नाम हेमागढ़ देश था। उसकी राजधानी का नाम राजपुरी था। सत्यन्धर नामक जिनधर्म भक्त राजा वहाँ राज्य करता था। उनकी प्रिय रानी का नाम विजया था। उन्हीं के पुत्र जीवन्धर थे। **पिता सत्यन्धर सज्जन थे, वैज्ञानिक यंत्रों के निर्माण में अत्यधिक पटु थे, राज–काज में दक्ष नहीं थे। दुष्ट मंत्री के षड्यंत्र के शिकार हुये राज्य भी गया, प्राण भी गये। संकट का आभास पा कर स्वनिर्मित मयूरयंत्र में रानी विजया को बैठाकर आकाश मार्ग से सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया, श्मशान में मयूरयंत्र को उतारा वही जीवन्धार का जन्म हुआ। वीर साहसी युवक ने अपने पुरुषार्थ से पुनः सब प्राप्त कर सुयोग्य राजा सिद्ध हुये। दुष्ट मंत्री को दण्ड दिया, भगवान महावीर के सम्पर्क में आने पर सब कुछ तृणवत् छोड़कर उनके शिष्य मुनि हो गये।**

• **सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य–** आधुनिक दृष्टि से भारतवर्ष के शुद्ध व्यवस्थित राजनीतिक इतिहास का जो प्राचीन युग हैं , उसके प्रकाशमान नक्षत्रों में प्रायः सर्वाधिक से तेजपूर्ण नाम चन्द्रगुप्त का है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में चन्द्रगुप्त ने शक्तिशाली नन्दवंश का उच्छेद करके उसके स्थान में मौर्य वंश की स्थापना की थी। उसके प्रधान नायक ये ही गुरु-शिष्य अर्थात चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य थे। एक यदि राजनीति विद्या-विचक्षण एवं नीति-विशारद पण्डित था, तो दूसरा परम पराक्रमी एवं तेजस्वी क्षत्रिय वीर था। व्यक्तिगत आस्था की दृष्टि से जैन धर्म के प्रबुद्ध अनुयायी थे। युवराज सिद्धपुत्र हिरण्यगुप्त धननन्द चाणक्य से रूष्ट हो गया, उसने उसका अपमान किया। कोई कहते हैं कि चाणक्य का अपमान महाराज नंद और युवराज की उपस्थिति में दानशाला

की परिचारिका द्वारा प्रथम भेंट के अवसर पर ही किया गया था। जो हो अपमान से क्षुब्ध और कुपित चाणक्य ने भरी सभा में यह प्रतिज्ञा की, कि जिस प्रकार उग्रवायु का प्रचण्ड वेग अनेक शाखा समूह सहित विशाल एवं उतुंग वृक्षों को जड़ से उखाड़ फेंकता है, उसी प्रकार हे नन्द ! मैं तेरा, तेरे पुत्रों, भृत्यों मित्रादि का समस्त वैभव सहित समूल नाश करूँगा। चाणक्य एक ऐसे व्यक्ति की खोज में लगा जो बड़ा राजा होने के सर्वथा उपयुक्त हो। चन्द्रगुप्त के जन्म व वंश की अनेक कहानियां प्रचलित है, मौर्य शब्द, मौर्य वंश भी कई कहानियों में गूथा हुआ है। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को प्राप्त कर लिया, कई वर्षों तक चन्द्रगुप्त को विविध अस्त्र-शस्त्रों के संचालन, युद्धविद्या, राजनीति तथा अन्य उपयोगी ज्ञान-विज्ञान एवं शास्त्रों की समुचित शिक्षा दी। धीरे-धीरे उसके लिये घन व बहुत से युवा साथी भी जुटा दिये। ई. पूर्व 326 में भारत भूमि पर जब यूनानी सम्राट सिकन्दर महान् ने आक्रमण किया तो उनसे स्वदेश भक्त चाणक्य का हृदय बहुत दुखी हुआ, उसने शिष्य चन्द्रगुप्त को सलाह दी कि वह यूनानियों की सैनिक पद्धति, सैन्य-संचालन और युद्ध कौशल का उनके बीच रहकर कुछ दिनों में प्रत्यक्ष अनुभव करें। कुछ समय पश्चात् पंजाब के यूनानी सत्ता के एक भूभाग के विरूद्ध विद्रोह का नेतृत्व कर उसे स्वतंत्र कर लिया, एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में वह सफल हो गया। चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने नन्द साम्राज्य को सीमावर्ती प्रदेशों पर अधिकार कर प्रारंभ किया। एक के पश्चात एक ग्राम, नगर दुर्ग और गढ़ छल-बल-कौशल से जैसे भी बनायें हस्तगत करते चले विजित प्रदेशों एवं स्थानों को सुसंगठित एवं व्यवस्थित करते हुये तथा अपनी शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुये अन्ततः वे राजधानी पाटलिपुत्र तक पहुँच गये। चन्द्रगुप्त के पराक्रम, रणकौशल एवं सैन्य-संचालन, पटुता, चाणक्य की कूटनीति एवं सदैव सजग रहकर आगे बढ़ते गये, एक-एक कर नन्द कुमार लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुये। अन्ततः वृहद महाराज पद्मनन्द ने हताश होकर समर्पण कर दिया। नन्दराज की सुपुत्री सुप्रभा से चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ। वीर चन्द्रगुप्त ने राजधानी सुप्रभा में को पट्टरानी बनाकर मगध के राज्य सिंहासन पर आसीन हुआ। राज्य विस्तार होता गया, उज्जयिनी को भी अपनी उपराजधानी बनाया। दक्षिण भारत विजय का अभियान भी पूर्ण हुआ। मध्य एशिया के महाशक्तिशाली यूनानी सम्राट सेल्युकस ने ई. पूर्व 305 में भारतवर्ष पर भारी आक्रमण किया, चन्द्रगुप्त ने योजना पूर्वक उन्हें पराजित किया, उनकी पुत्री हेलन के विवाह प्रस्ताव को स्वीकार किया। कोटिल्य के अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण भारत वर्ष के रूप में चक्रवर्ती क्षेत्र की जो परिभाषा है वही समुद्र पर्यन्त, आसेनु हिमाचल भूखण्ड इस मौर्य सम्राट के अधीन था। त्रिरत्न, चैत्यवृक्ष, दीक्षावृत आदि की छवि के सिक्कें मौर्य सम्राट ने निकले थे। चन्द्रगुप्त को उन मुकुटबद्ध माण्डलिक सम्राटों में अन्तिम कहा गया है। जिन्होंने दीक्षा लेकर अन्तिम जीवन जैन मुनि के रूप में व्यतीत किया था। वह भद्रबाहु श्रुतकेवली की आम्नाय का उपासक था। श्रवणबेलगोल पहुँचा जहाँ आचार्य भद्रबाहु दिवंगत हुये थे। उस स्थान के **एक पर्वत पर मुनिराज चन्द्रगुप्त ने तपस्या की, पश्चात् सल्लेखना पूर्वक देह त्याग किया। उनकी स्मृति में वह पर्वत चन्द्रगिरि नाम से प्रसिद्ध हैं। चाणक्य भी**

पर्याप्त वृद्ध हो चुके थे और राजकार्य से विरत होकर कर आत्म कल्याण के इच्छुक थे। मुनि दीक्षा लेकर दुर्धर तपस्या और घोर उपसर्ग सहते हुये सल्लेखना पूर्वक देह त्याग किया। प्राचीन कई शिलालेखों पर अंकित यह इतिहास है। आचार्य जैन मन्त्रीश्वर चाणक्य और उनके सुशिष्य जैन सम्राट चन्दगुपत मौर्य की अद्वितीय जोड़ी जैन इतिहास की ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय इतिहास की अमर उपलब्धि है।

• **महाराज बिन्दुसार (अमित्रघात)–** सम्राट चन्दगुप्त मौर्य के उनकी पट्टमहिषी नन्दसुना सुप्रभा से उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्र युवराज बिन्दुसार ने पिता के जीवन में ही उत्तराधिकार प्राप्त कर लिया था। ई. पूर्व 298 में वह सिंहासनारूढ़ हुआ और लगभग पच्चीस वर्ष पर्यन्त विशाल एवं शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य का एकाधिपति बना रहा। चाणक्य का संरक्षण प्राप्त था। वृद्धापकाल में वे जैन मुनि हो गये। अपना दायित्व सुयोग शिष्य राधागुप्त को सौंप गयें। राजा बिन्दुसार अपने माता पिता की भांति वह भी जैन धर्म का अनुयायी था। आचार्य भद्रबाहु एवं चन्द्रगुप्त की तपोभूमि श्रवणबेलगोल में कई जैन मंदिरों का निर्माण करायें। ई. पू. 273 के लगभग इस द्वितीय मौर्य सम्राट बिन्दुसार का देहान्त हुआ।

• **महाराज करूण कुणाल–** सम्राट अशोक की पत्नी विदिशा से उत्पन्न कुणाल अत्यन्त सुन्दर, सुशिक्षित, सुसंस्कृत, कलारसिक, संगीत-विद्या निपुण एवं भद्र-प्रकृति का पुरुष पुंगव था। विशेषकर उसको कुणाल पक्षी सदृश आँखों ने उसके रूप को अत्यन्त आकर्षक बना दिया था। उसका देवोपम रूप और अप्रतिम आँखें ही उसका दुर्भाय बन गयी। उसकी विमाता सम्राट की युवा रानी तिष्यरक्षिता ने अपनी मर्यादा भूल कुमार को अपने वश में करने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु कुमार शीलवान और सदाचारी था। अतः रानी अपनी कुचेष्टाओं में सफल न हो पायी। विफल मनोरथ रानी ने प्रतिशोध लेने के लिये षडयंत्र रचे, सम्राट ने उज्जयिनी का प्रान्तीय शासक नियुक्त कर दिया, उसने भी उसी प्रदेश की सुन्दर कन्या कंचनमाला से विवाह कर लिया। वह एक पत्नीव्रती था, उसी से उसका सम्प्रति नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। रानी के षडयंत्र जारी थे राजकुमार को पुरुस्कृत करने के नाम एक पत्र सम्राट की ओर से राजमुद्रांकित भिजवाया, उसमें **अधीयनाम** शब्द को **अन्धीयताम्** कर दिया। पितृभक्त, राजभक्त पुत्र ने सम्राट का कुचक्र सबको ज्ञात हो गया। पत्नी-पुत्र को सुरक्षित स्थान पर रख भिखारी के भेष में राजधानी पाटलिपुत्र आया, सम्राट के महल के नीचे गाने लगा, अपना परिचय अत्याचार का वर्णन सुन सम्राट सब समझ गया, रानी तिष्यरक्षिता को दण्ड स्वरूप अग्नि में जला दिया, पुत्र-पौत्र को सम्राट ने अपने पास रखा, कुणाल पुत्र सम्प्रति को उत्तराधिकारी घोषित किया। कुणाल का कुल धर्म जैन था, उसकी माता और पत्नी भी परम जिन भक्त थी। स्वभावतः कुणाल एक उत्तम जैन था। उसकी करूण कहानी हेमचन्द्राचार्य आदि जैन कथाकारों का प्रिय विषय रही हैं।

• **सम्राट सम्प्रति–** सम्राट सम्प्रति मौर्य ई. पू. 230 के लगभग स्वतंत्र रूप से सिंहासनासीन हुये। इससे लगभग दस वर्ष पूर्व से ही राज्यकार्य का वस्तुतः संचालन वही कर रहे थे। इस विशाल राज्य का विभाजन करना पड़ा, सम्प्रति और उनके चचेरे भाई दशरथ के मध्य विभाजन हुआ, सम्प्रति ने उज्जयिनी को राजधानी बनाया, दशरथ के पास राजधानी

पाटलिपुत्र थी ही । अपने पितामह अशोक के समान ही सम्प्रति एक महान प्रजावत्सल, शांतिप्रिय एवं प्रतापी सम्राट थे। साथ ही अपने पिता कुणाल और माता कंचनमाला से उसे दृढ़ धार्मिक संस्कार तथा भद्र एवं सौम्य परिणाम मिले थे। आचार्य सुहस्ति सम्प्रति के धर्म गुरु थे। जिनेन्द्र की भक्ति, जैन गुरुओं का सेवा-सम्मान, जैन स्मारकों का निर्माण और जैन धर्म की प्रस्तावना एवं प्रचार के लिये सम्राट सम्प्रति ने अथक प्रयत्न किये । अनेक जैन मंदिरों का निर्माण जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा विदेशों में जैन धर्म के प्रचार के लिये साधु एवं गृहस्थ विद्वान प्रचारकों को भेजना। विन्सेण्ट स्मिथ के अनुसार सम्प्रति ने अरब ईरान आदि यवन देशों में भी जैन संस्कृति के केन्द्र या संस्थान स्थापित किये थे। विश्व के सर्वकालीन महान् नरेंद्रों की कोटि में इस प्रकार परिगणित यह भारतीय सम्राट, चाहे वह अशोक हो या सम्प्रति अथवा दादा-पोते दोनों ही संयुक्त या समान रूप से हों, भारतीय इतिहास के गौरव हैं और रहेंगे।

• **सम्राट शालिशुक मौर्य–** सम्प्रति का ज्येष्ठ पुत्र शालिशुक उज्जयिनी में सम्प्रति के उत्तराधिकारी हुये। वह भी अपने पिता एवं अधिकांश पूर्वजों की भांति जैन धर्म का अनुयायी था । उन्होंने भी दूर-दूर तक जैन धर्म का प्रचार किया। वह पराक्रमी भी था, सौराष्ट्र गुजरात के विद्रोह को कुचल कर पुनः विजित किया। ई. पू. 164 के लगभग उज्जयिनी में 148 वर्ष शासन करने के उपरान्त वहाँ मौर्य वंश और मौर्यों के अधिकार का अंत हुआ। मगध में उसके लगभग बीस वर्ष पूर्व ही दशरथ मौर्य के अन्तिम वंशज की हत्या करके वहाँ पुष्यमित्र शुंग का राजा स्थापित हो गया। इसके पश्चात् उत्तर भारत में जैन धर्म को सम्भवतया फिर कभी इसके पूर्व-जैसा राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ।

• **सम्राट खारवेल–**कलिंग चक्रवर्ती सम्राट महामेघवाहन ऐल खारवेल दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का सर्वाधिक शक्तिशाली प्रतापी एवं दिग्विजयी नरेन्द्र था। साथ ही यह राजर्षि परमजिन भक्त था। जैन धर्म के साथ कलिंग देश का अत्यन्त प्राचीन सम्बन्ध रहा है। प्रथम तीर्थंकर आदि जिन ऋषभदेव का यहाँ समवसरण आया था । तभी से उनकी पूजा प्रचलित हुई । अठारहवें तीर्थंकर अरनाथ का प्रथम पारणा जिस रायपुर में हुआ था वह कलिंग देश में ही आता है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ व स्वयं महावीर भगवान का भी पर्याप्त सम्पर्क रहा था। खारवेल का जन्म ईसा पूर्व 190 के लगभग का प्रतीत होता है। 15 वर्ष की आयु में युवराज पद व 24 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ। उसके राज्यकाल के तेरह-चौदह वर्ष का विशद वर्णन उसके स्वयं के शिलालेख में प्राप्त होता है। सिंहासनासीन होते ही अपने राज्य के प्रथम वर्ष में उसने प्रासादों का जलाशयों स्त्रोंतो निर्झरों आदि के बांध बंधवाये गये। दूसरे वर्ष चतुरंगिणी सेना का निर्माण किया। तीसरे वर्ष नृत्य, संगीत, भगवान जिनेन्द्र की रथ-यात्रायें। चौथे वर्ष में आस-पास के राजाओं को पराजित किया, रत्नों की भेंट स्वीकार की। पांचवें वर्ष में नहरों का निर्माण कराया। छठे वर्ष में प्रजा को सभी कर माफ कर दिये, अपने अधिनस्तों को अनुग्रह प्रदान किये। सातवें वर्ष में रानी ने पुत्र को जन्म दिया। आठवें वर्ष में महाराज खारवेल ने विशाल सेना के साथ उत्तरापथ की विजय-यात्रा की। **सम्राट खारवेल के भय से यवनराज दिमित्र मध्य एशिया का यूनानी नरेश डेमेट्रियस जिसने उस समय भारत पर आक्रमण किया था। अपनी समस्त सेना, युद्ध सामग्री, वाहनों आदि को जहाँ–तहाँ छोड़कर मथुरा से अपने देश को भाग गया ।** नौवें वर्ष में उसने महानदी ने तट पर महा-विजय-प्रासाद नाम का

अतिसुन्दर एवं विशाल राजमहल बनवाया। दसवें वर्ष में अपनी सेनाओं को विजय यात्रा के लिये पुनः भारतवर्ष की ओर भेजा। ग्यारहवें वर्ष में उसने दक्षिण देश की विजय की। बारहवें वर्ष में सम्राट खारवेल ने उत्तरापथ विजय किया।

परम जैन होते हुये भी सम्राट खारलेव सर्वधर्म सहिष्णु एवं अत्यन्त उदाराशय नृप था। अहिंसा धर्म का पालक सच्चा धर्मवीर होते हुये भी ऐसा पराक्रमी शूरवीर था। उसने प्रचण्ड विदेशी आक्रमणकारी यूनानी नरेश दमित्र को स्वदेश कलिंग से भारत के सीमन्त से बाहर खदेड़ दिया। सम्राट द्वारा जिनालयें, गुफाओं का निर्माण किया गया। प्रसिद्ध खण्डगिरि-उदयगिरि जैनों का पवित्र तीर्थ और जैन श्रमणों का प्रिय आवास बनी हुई है।

• **वीर विक्रमादित्य–** महेन्द्रादित्य गर्द भिल्ल ई. पू. 74 में मालवगण का अध्यक्ष और उज्जयिनी का स्वामी था। यह नगर पूर्व काल से ही जैन धर्म से सम्बन्धित रहता आया था और उस काल में तो मध्यभारत में विशेषकर आचार्य स्थूलिभद्र एवं सुहस्ति की परम्परा के जैनों का प्रधान केन्द्र था। जैन साधुओं और साध्वियों का यहाँ स्वच्छन्द विहार होता था। कालक द्वितीय उस समय के प्रसिद्ध जैनाचार्य (कालकाचार्य)थे जो पूर्व अवस्था में एक राज कुमार थे। उनकी बहन राजकुमारी सरस्वती भी जैन साध्वी थी। वह अत्यन्त रूपवान थी। गर्द भिल्ल उसे देखते ही उसके रूप पर बेतरह आसक्त हो गया और उसने धर्म की मर्यादा को भुलाकर उक्त साध्वी का अपहरण कर अपने महल में ले आया। समाचार पाते ही कालकाचार्य ने राजा को बहुत समझाया अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भी दबाव डलवाया, किन्तु उस स्वेच्छाचारी को समझाने में सफल नहीं हुये। गर्द भिल्ल से आस-पास के राजा डरते थे। कालकाचार्य के राज्यकुलोंत्पन्न क्षत्रियोचित संस्कार जाग्रत हो चुके थे, अतएव सन्त्रस्त कालकाचार्य सिन्धु कूल पर अवस्थित शकस्थान के शाहियों के पास पहुंचा और उन्हें ससैन्य सहायता को प्रेरित किया, आस-पास के राजाओं से सहायता प्राप्त करता हुआ ई. पू. 66 में उज्जयिनी पर आक्रमण किया, लम्बे समय तक संघर्ष किया गर्द भिल्ल को बन्दी बना लिया साध्वी सरस्वती का उद्धार हुआ। गर्द भिल्ल की याचना पर प्राणदण्ड नहीं दिया।

महेशदित्य गर्द भिल्ल का सुयोग्य एवं तेजस्वी पुत्रवीर विक्रमादित्य तो इस स्थिति से अत्यन्त असंतुष्ट था। मालव गणराज्य को सुगठित किया और ई. पू. 57 में शकों को उज्जयिनी प्रदेश से निकाल बाहर किया। **वीर विक्रमादित्य को अपना गणराजा घोषित किया। उन्हें शकारि की उपाधि प्रदान की, और उक्त विजय वर्ष को बाद में सब विक्रम संवत के रूप में जानते हैं।** अपनी विजय के उपलक्ष्य में सिक्के भी ढाले पर मालवानां जयः और मालवगणस्य जय शब्द अंकित किये। विक्रमादित्य का कुलधर्म जैन था, राज्यधर्म भी जैन था, मानव गणों और मालवदेश के प्रजाजनों में भी इस धर्म की प्रवृत्ति थी। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार सम्राट ने स्वदेश को सुखी, समृद्ध एवं नैतिक बनाया। मालवा पर लगभग सौ वर्ष राज्य किया बताया जाता है। **पूर्ववर्ती चन्द्रगुप्त मौर्य एवं खारवेल जैसे महान् जैन सम्राटों की परम्परा में देश को विदेशियों को आक्रमण से मुक्त करने में यह महान् जैन सम्राट विक्रमादित्य भी अविस्मरणीय है।**

• **राजा दद्दिग और माधव–** वर्तमान कर्नाटक (मैसूर) राज्य के अधिकांश भाग कावेरी नदी की पूर्ण घाटी में विस्तृत गंगवाड़ि राज्य पर लगभग एक सहस्त्र वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न शासन करने वाले राजाओं का वंश पश्चिमी गंगवंश कहलाता है। इस वंश के प्रारंभ से अंत, जैन धर्म का अत्यन्त निकट सम्बन्ध रहा है। इस वंश के संस्थापक दो राजकुमार थे दद्दिग और माधव। गंग का एक वंशज विष्णुगुप्त, अहिच्छत्रा का राजा हुआ। इसके राज्य पर जब उज्जयिनी के राजा ने आक्रमण किया तो राजा पद्मनाथ ने अपने दो बालक पुत्रों , दद्दिग और माधव को कतिपय राजचिन्हों सहित दूर विदेश में भेज दिया। कर्नाटक के पेरूर नामक स्थान पर पहुँचें। नगर के बाहर स्थित जिनालय में जब राजकुमार भगवान् के दर्शन-पूजन के लिये गये तो उन्हें वहाँ मुनिराज सिंहनन्दि के दर्शन हुये। मुनिराज ने सुलक्षण एवं होनहार देखकर उनका विगत वृत्तान्त पूछा। उनके बल-पराक्रम की परीक्षा करने के लिये उन्हें आदेश दिया कि तलवार के एक ही बार से सम्मुख खड़े शिलास्तम्भ को भग्न कर दें। राजकुमार परीक्षा में उत्तीर्ण हुये। आचार्य ने अपने निकट रखकर उन्हें राज्यों चित्त शिक्षा-दीक्षा दी। तथा समस्त उपयोगी विद्याओं में पारंगत किया, और उपयुक्त समय देखकर वन में ही कर्णिकार-पुष्पों का मुकुट पहनाकर उनका राज्याभिषेक किया, अपनी मयूर पिच्छि का उन्हें राज्य ध्वज के रूप में प्रदान की और मत्तगयन्द उनका राज्यचिन्ह निश्चित किया। **आचार्य ने गंग–नरेशब्दय को चेतावनी मय आदेश दिया कि यदि तुम लोग या तुम्हारे वंशज कभी अपना वचन भंग करोगे, कभी जिनशासन से विमुख होगे, परस्त्री के ऊपर कुदृष्टि डालोगे, मद्य–मांस का सेवन करोगे, नीच व्यक्तियों की संगति करोगे, याचक जनों को दान देने से मुँह मोड़ोगे और रणभूमि से पीठ दिखाकर भागोगे तो तुम्हारे कुल का नाश हो जायेगा।** दद्दिग और माधव भातृद्वय ने गुरु वचनों को शिरोधार्य किया और गुरु के उपदेशानुसार अदभुत उत्साह के साथ राज्य निर्माण के कार्य में जुट गये। यह घटना 188 ईं. की है। चारों दिशाओं में राज्य विस्तार किया, भगवान जिनेन्द्र के प्रति समर्पण भाव बढ़ता ही गया बड़े भाई दद्दिग की मृत्यु राज्य निर्माण के समय ही हो गयी। छोटे भाई माधव कोंगुणिवर्म प्रथम ने लगभग पचास वर्ष राज्य किया। शिलालेखों से ज्ञात होता है कि पराक्रमी के साथ बड़ा धर्मात्मा था। मण्डलि नामक स्थान में उसनें काष्ठ का भव्य जिनालय बनवाया, एक जैन पीठ की स्थापना की। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी किरियामाधव द्वितीय था जो नीति शास्त्र निष्णात और दत्तकसूत्रों का टीकाकार था। उसने अपने पिता का पदानुसरण किया।

• **तदंगल माधव महाराज–**तृतीय माधव एक महान शासक था। कदम्ब नरेश का- कुत्स्थ वर्मन की पुत्री से विवाह हुआ। वह त्र्यम्बक और जिनेन्द्र का समान रूप से भक्त था। यह अभिलेख 357 से 379 ई. के प्राप्त हुये। अपने राज्य में अर्हत् मंदिर का निर्माण दिगम्बराचार्य वीरदेव को विशाल भूमि प्रदान की जैन मंदिरों का निर्माण कराया। गंगनरेशों के प्रश्रय में अनेक जैन आचार्य एवं साहित्यकार हुये।

• **अविनीत गंग–** माधव महाराज तृतीय का एवं उत्तराधिकारी अविनीत गंग अपने पिता की मृत्यु के समय वह माता की गोद में छोटा सा शिशु था। शिलालेखों में उसे शतजीवी कहा गया और उसका शासनकाल बहुत दीर्घ कालीन सूचित किया गया है। यह नरेश बड़ा पराक्रमी और

धर्मात्मा था। कहा जाता है कि किशोरवय में ही **एक बार उसने जिनेन्द्र की प्रतिमा को शिर पर धारण करके भयंकर बाढ़ से बिकरती कावेरी नदी को अकेले पांव पयादे पार किया था।** उनके गुरु जैनाचार्य विजय कीर्ति थे। उन्हीं के निदेशन में शिक्षा दीक्षा हुई, जिनालयों का निर्माण प्रबन्धन के लिये भूमि दान की गई। मर्करा ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि 466 ई. में अविनीत ने राजधानी लालवन नगर को बनाया था। इस नरेश के हृदय में महान जिनेन्द्र के चरण अचल मेरू के समान स्थिर थे । पेरूर के जिनालय पुन्नाट देश में जैन बसदियों तथा जिनालयों के हेतु भूमि दान किया उनका शासन प्रबन्ध भी उत्तम था।

• **महाराज दुर्विनीत गंग–** अविनीत का पुत्र एवं उत्तराधिकारी दुर्विनीत कोंगुणि (लगभग 481-522ई.) बड़ा वीर महत्वाकांक्षी, विद्वान, साहित्यरसिक गुणियों का आदर करने वाला, प्रतापी एवं महान नरेश था। आचार्य की आज्ञा का अनुसरण करने वाला था। गुरु पुज्यपाद द्वारा रचित पाणिनी व्याकरण की शब्दावतार टीका का कन्नड़ अनुवाद तथा प्राकृत बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद भी दुर्विनीत ने किया था। जैन धर्मावलम्बी भुजग-पुन्नाट की पौत्री एवं स्कन्द पुन्नाट की पुत्री के साथ विवाह किया, और पुन्नाट प्रवेश दहेज में प्राप्त कर लिया था। अपने पराक्रम से पूर्व-पश्चिम दोनों दिशाओं से राज्य विस्तार करके गंग राज्य को साम्राज्य का रूप दे दिया था। वह सर्व धर्म सहिष्णु तथादि पक्का जैन था। दुर्विनीत के उपरान्त उसका पुत्र प्रथम पोलवीर, तदुपरान्त द्वितीय पुत्र मुष्कर राजा हुआ।

• **मुष्कर गंग नरेश–** मुष्कर गंग के समय में जैन धर्म गंगवाड़ी का राज्य धर्म था। राजा ने 550 ई. के लगभग बेलारी के निकट मुष्कर-बसदि नामक भव्य जिनालय निर्माण कराया था। उसका पुत्र उत्तराधिकारी श्री विक्रम था। जिसका उत्तराधिकारी पुत्र भूविक्रम-भूवलय श्री विक्रम था। जिसने पल्लव नरेश को पराजित करके उससे उग्रोदय नाम प्रसिद्ध रत्नजटितं बहुमुल्य हार छीना था। वह परम जैन था। भूविक्रम के पश्चात् उसका सौतेला भाई जो श्री विक्रम की दूसरी रानी (सिन्धुराम की कन्या) से उत्पन्न था, राजा हुआ, उसका नाम शिवमार प्रथम था।

• **शिवमार प्रथम नरेश–** शिवमार-नवकाम-शिष्य-प्रिय-पृथ्वी कोगुणी अपनी वृद्धावस्था में सिंहासनासीन हुआ था। वह परम जैन था और 670 ईं. में उन्होंने कई मंदिरों का निर्माण कराया था। उनका मार्गदर्शन हेतु जैन गुरु चन्द्रसेनाचार्य का संरक्षण प्राप्त था। इस नरेश का कार्यकाल 700 और 713 ई. के भी अभिलेख मिलते हैं गंग दुर्विनीत तथा गुरु देवनन्दि पूज्यपाद का भी उल्लेख मिलता है। शिवमार-नवकाम के पश्चात् उसके पुत्र राचमल्लएरे गंग ने शासन किया, तदन्तर शिवमार का पौत्र श्री पुरुष सिंहासन पर बैठा।

• **नरेश श्री पुरुष मुत्तरम–**सन्मार्ग रक्षक, लोकघूर्त, शत्रु भयंकर परमानन्दि श्री वल्लभ आदि विरूदधारी गंग नरेश श्री पुरुष मुत्तरस पृथ्वी कोंगुणी (726-776 ई.) के दीर्घकालीन शासन काल में गंगराज्य पुनः अपनी शक्ति एवं समृद्धि की चरम सीमा को पहुँचा गया। उसने अनेक सफल युद्ध भी लड़े और पल्लव नरेशों तथा बाण राजाओं को कई बार पराजित किया। पाण्डय नरेश राजसिंह को पुत्र के साथ अपनी पुत्री का विवाह करके उस राज्य से मैत्री सम्बन्ध बनाया, जिसके फलस्वरूप पाण्डयदेश के पिछले दशकों में जैनों पर जो भयंकार अत्याचार हो रहे थे

उनका अन्त हुआ और तमिल की साहित्यिक प्रवृत्तियों में जैन विद्वानों का पुनः योग हुआ। चिकबल्लालापुर आदि कई स्थानों के भग्न जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ। गंगों के अधीनस्थ बाणनरेश भी जैन धर्म के बड़े भक्त थे। आचार्य प्रभाचन्द्र विमलचन्द्र वृद्ध कुमार सेन आदि इस काल में कर्नाटक के प्रसिद्ध जैन गुरु थे। कई मंदिरों का निर्माण भूमिदान समय-समय पर किये। लगभग पचास वर्ष शासन करने के उपरान्त 777ई. में इस सुयोग्य प्रतापी नीति परायण एवं धर्मात्मा नरेश **श्री पुरुष मुत्तरस ने राज्य का भार अपने पुत्र शिवमार द्वितीय सैगोत को देकर शेष जीवन जैन गुरुओं के सम्पर्क में एक उदासीन श्रावक के रूप में बिताया।**

• **नरेश शिवमार द्वितीय सैगोत–** इस राजा का राज्यकाल 776-815 ई. हैं, किन्तु इस बीच वह दो बार राज्यच्युत हुआ और राष्ट्रकूटों के बन्दीगृह में उसे लगभग दस-पन्द्रह वर्ष रहना पड़ा। यह गंग नरेश भारी योद्धा, वीर और पराक्रमी था। युद्धों में उसे कई बार अद्भुत सफलता भी मिली और कई बार पराजय भी। जैनधर्म का भी वह महान संरक्षक और भक्त था। स्वामी विद्यानन्द का वह बहुत सम्मान करता था। शिवमार का पुत्र मारसिंह और भतीजा सत्यवाक्य भी जो उसकी अनुपस्थिति में राज्यकार्य संभालते थे, विद्यानन्द के भक्त थे। कई शास्त्र - ग्रंथों में मुनियों ने इस राजा का नाम उल्लेख किया है। शिवमार ने श्रवणबेलगोल के छोटे पर्वत पर शिवमारन-बसदि नाम का सुन्दर जिनालय बनवाया था। अनेक युद्धों में भाग लिया, विजय प्राप्त की। उनके समाधिमरण पूर्वक देहत्याग के समय पुत्र पृथ्वीपति और उसकी रानी कम्पिला श्रवणबेलगोल के कटवप्र पर्वत पर स्वयं उपस्थित रहें।

• **नरेश राचमल्ल सत्यवाक्य प्रथम (815–53)–** इस राजा के गद्दी पर बैठने के समय गंगराज्य की स्थिति बड़ी डांवा डोल थी। इस बुद्धिमान् एवं पराक्रमी वीर ने बाण-नरेश को पराजित करके बाणों का दमन किया। दूसरे प्रतिद्वन्दी नीलम्बाधिराज की बहन के साथ अपना तथा अपनी पुत्री जयब्बे के साथ विवाह करके नोलम्ब-पल्लवों को अपना मित्र बना लिया। राचमल्ल विद्यानन्द स्वामी का भक्त था। कई मंदिरों का निर्माण कर जिन प्रतिमायें प्रतिष्ठित करायी।

• **एरेयगंग नीतिमार्ग प्रथम रण विक्रम (853–870ई.)–** राचमल्ल के इस पुत्र ने राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष प्रथम की पुत्री राजकुमारी चन्द्रबेलब्बा (अब्बलब्बा) के साथ अपने छोटे पुत्र भूतुगेन्द्र बुत्तरस-गुणदुन्तरंग का विवाह करके शक्तिशाली राष्ट्रकूटों को भी स्थायी मैत्री के सूत्र में बांध लिया। कुडुलूर दानपत्र में इस गंग नरेश नीतिमार्ग प्रथम को परमपूज्य अर्हद्भट्टारक के चरण कमलों का भ्रमर लिखा है, वहीं राजकुमार भूतुग को भी परम जैन लिखा है। शिलालेख जिस स्थान पर है उसके निकट ही राजन् नीतिमार्ग के समाधिमरण का प्रस्तरांकन है। इस राजा ने अनेक युद्धों में वीरतापूर्वक विजय प्राप्त की है।

• **राचमल्ल सत्यवाक्य द्वितीय (870–907 ई.) –** नीतिमार्ग की सल्लेखना पूर्वक मृत्यु के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र राचमल्ल सत्यवाक्य द्वितीय राजा हुआ और क्योंकि वह निःसंतान था, इसलिये उसने अपने अनुजवीर भूतुगेन्द्र को युवराज बनाया। इन दोनों भाईयों ने पल्लवों पाण्डयों, वेंगि के चालुकों आदि के विरूद्ध अनेक युद्ध किये और प्रशंसनीय विजय

प्राप्त की। बिलियूर (बेलूर) दानपत्र के अनुसार राजन राचमल्ल सत्यवाक्य द्वितीय ने अपने राज्य के 18वें वर्ष (887 ई.) में पेन्नेकडंग स्थान में स्वनिर्मित सत्यवाक्य जिनालय के लिये शिवनन्दि सिद्धांत भट्टारक के शिष्य सर्वनन्दिदेव को बेलूर इलाके के बारह ग्राम प्रदान किये थे। कई जिनालयों का निर्माण कर भट्टारक जी को भेंट किये तथा सर्व प्रकार के करों से मुक्त करके दिया था। राचमल्ल की मृत्यु के बाद वही राजा बना।

• **गंग नरेश–** राचमल्ल सत्यवाक्य तृतीय बूतुग द्वितीय गंग-गांगेय गंगराज मरूलदेव (920-961ई.) गंगनरेश मारसिंह (961-974 ईं.) अन्तिम गंग राजे (977ई.) राचमल्ल चतुर्थ (958 ई.) ये सभी परम जैन थे, जिनालयों का निर्माण तथा वीर पराक्रमी योद्धा थे, धर्म जीवन में कूट-कूट भरा था। जैन मुनियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

(**कदम्ब वंश–** इस वंश को स्थापना कदम्ब नामक वृक्ष-विशेष के नाम पर दूसरी शती हैं।)

• **काकुत्स्थवर्मन कदम्ब–** भाई रघु की युवावस्था में ही मृत्यु हो जाने के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी हुआ। वह अल्प आयु में ही राजा हो गया। वह बड़ा नीति निपुण सुयोग्य शासक दीर्घ जीवी महान् नरेश था। उसकी एक पुत्री गंगनरेश तदंगल माधव के साथ ब्याही थी और अविनीत कौंगुणी की जननी थी, दूसरी पुत्री वकाटक नरेश के साथ विवाही थी और तीसरी गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के युवराज कुमार गुप्त के साथ विवाह सम्बन्धों से राजवंशों के मध्यमैत्री स्थापित की और अपने वंश की प्रतिष्ठा बढ़ायी। यह नरेश जैन धर्म का भारी पौषकथा धर्मकार्यों के लिये कई ग्रामों को दान दिये, शिलालेख लगवायें जिनका प्रारंभ भगवान जिनेन्द्र की जय और अन्त में भगवान ऋषभदेव को नमस्कार लिखाया। दान का उद्देश्य आत्मनस्तारणार्थ (आत्म कल्याण) बताया है। काकुत्स्थ वर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी शान्तिवर्मन भी प्रतापी नरेश था और जैसा कि उसके वंशज परिवर्तन के दान पत्र से प्रकट है यह राजा भी जैन धर्म और जैन गुरुओं समादार करता था।

• **मृगेशवर्मन कदम्ब (450–478 ई.)–** शान्तिवर्मन का का ज्येष्ठ पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। उसने अपने राज्य में भगवान जिनेन्द्र के अभिषेक, उपलेपन, पूजन मंदिर के भग्न संस्कार (मरम्मत आदि) और धर्म की प्रभावना आदि कार्यों के लिये दान कीर्ति भोजक को भूमि दान दिया था। एक निवर्तन भूमि तो केवल पुष्पों के लिये ही निर्दिष्ट की गयी थी। कदम्ब वंशी धर्म महाराज श्री विजय शिव मृगेशवर्मन ने अपने राज्य के कालवंग नाम ग्राम तीन भागों में विभक्त करके एक भाग तो अर्हतशाला में विराजमान भगवान जिनेन्द्र देव के निमित्त दूसरा भाग श्वते पट्ट महाश्रमण संघ के उपयोग के लिये और तीसरा भाग निर्ग्रन्थ-महाश्रमण संघ के उपभोग के लिये दान किया था। नरेश तत्वविज्ञान के विवेचन में बड़ा उदारमति था। गजारोहण, अश्वारोहण आदि व्यायामों में वह सुदक्ष था। नय-विनय में कुशल था। उदात्तबुद्धि धैर्य-वीर्य-त्याग-सम्पन्न था। अपने भुजबल एवं पराक्रम द्वारा संग्राम में विजय प्राप्त करके उसने विपुल ऐश्वर्य प्राप्त किया था। नरेश गुरुओं का सम्मान करने वाला एवं जिनालयों का निर्माण तथा प्रबन्धन हेतु भूमि दान पत्र प्राप्त हुये हैं। मृगेशवर्मन के पश्चात् प्रिय पत्नी कैकय-राजकन्या प्रभावती से उत्पन्न पुत्र रविवर्मन राजा हुआ।

• **रविवर्मन कदम्ब (478–520 ई.)–** छोटी आयु में गद्दी पर बैठा, अपने चाचा मानघातृवर्मन के संरक्षण में तदनन्तर वयस्क होने पर स्वतंत्र राज किया। त्रिपर्वत शाखा के कदम्बों को दबाया फिर उन पर अधिकार कर राज्य विस्तार किया। रविवर्मन कदम्ब वंश का एक सुयोग्य, प्रतापी नरेश था। जैन धर्म का परम भक्त था, शायद कदम्बों में उससे अधिक उत्साही जैन अन्य कोई नहीं हुआ। उसने अपने हल्सी दानपत्र द्वारा अपने पूर्वजों का कुत्स्थवर्मन, शान्तिवर्मन और मृगेशवर्मन द्वारा दिये गये जैन दानों की पुष्टि एवं पुनरावृत्ति की और अपने माता-पिता के पुण्य के लिये प्रतिवर्ष कार्ति की-अष्टान्हिका का समारोह पूर्वक मनाया जाने के लिये पुरुखेटक नाम का गांव दामकीर्ति के पुत्र आचार्य बन्धुषेण को दान किया था। राजधानी पलाशिका के राज जिनालय में जिनेन्द्र की पूजा निरन्तर होती रहे। ऐसी सुन्दर व्यवस्था बनाई। विभिन्न शिलालेखों में रविवर्मन के युद्ध-पराक्रमों एवं उनके द्वारा कांची नरेश चण्ड-दण्ड को पराजित किया। इस नृपति ने मंदिरों , उत्सवों, नित्य जिनेन्द्र पूजा, चातुर्मास में साधुजनों के आहारदान आदि में कई बाधा न आयें ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया।

• **हरिवर्मन कदम्ब (520–540ई.)–** रविवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कदम्ब वंश का अन्तिम महान् नरेश और अपने पूर्वजों की ही भांति जैन धर्म का भक्त था। जिनालयों में प्रतिवर्ष अष्टान्हिका का महोत्सव और महामह पूजा एवं जिनेन्द्र अभिषेक किये जाने तथा इससे बचे द्रव्य से समस्त संघ को भोजन कराने के लिये कून्दूर विषय का वसुन्तवाटक ग्राम कूर्च्चक सम्प्रदाय के वारिषेणाचार्य संघ को चन्द्रक्षान्त नामक मुनि को प्रमुख बनाकर, प्रदान किया। इस नरेश के लिये जो विशेषण दिये हैं , उसमें वह विद्वान बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ और पराक्रमी वीर का उल्लेख है। श्रवण संघ के अधिष्ठाना आचार्य धर्मनन्दी थे, तथा साधुजनों के उपयोग के लिये मरदे नामक ग्राम दान में दिया। हरिवर्मन की मृत्यु के पश्चात् कुछ वर्षों में ही कदम्बों की राज सत्ता समाप्त हो गयी।

• **युवराज देववर्मन–** त्रिपर्वत शाखा के कृष्णवर्मन का पुत्र था। उसने एक दान पत्र द्वारा अपने पुण्य फल की आकांक्षा से तीन लोक के प्राणियों के हित के लिये उपदेश प्राप्त कर धर्म प्रवर्तन करने वाले अर्हन्त भगवान के चैत्यालय के मान संस्कार (रख-रखाव,) मरम्मत आदि तथा भगवान की पूजा अर्चना और प्रभावना के हेतु सिद्ध केदार के राजमान्य त्रिपर्वत-क्षेत्र की कुछ भूमि प्रदान की। अभिलेखों में देववर्मन को कदम्ब-कुल-रणप्रिय, एकवीर, दयामृत- सुखास्वादन से पवित्र हुआ, पुण्य गुणों का इच्छुक कहा है। कदम्ब नरेशों की स्वर्ण मुद्रायें अति श्रेष्ठ मानी जाती है। उनके समय में विविध जैन साधु संघ और संस्थायें सजीव एवं प्रगतिशील थी।

• **चालुक्य कुब्जविष्णुवर्धन (615 ई.)–** वातापी के चालुक्य सम्राट पुलकेशी द्वितीय के अनुज कुब्ज विष्णुवर्धन द्वारा 615 ई. में स्थापित इस वंश के क्रमशः 27 नरेशों में आन्ध्रप्रदेश पर लगभग 500 वर्ष तक राज्य किया। मूलवंश की भांति इस शाखा के नरेश भी जैन धर्म के पौषक रहें , परम भक्त रहे। राजा-रानी भी परम जैन भक्त रहे है। उन्होंने कई ग्राम धर्म प्रभावना के लिये दान दिये थे। त्रिकलिंग (आन्ध्र) देश के वेंगि प्रदेश की समतल भूमि के

मध्य स्थित यह रामगिरि अनेक जैन गुहा मन्दिरों, जिनालयों आदि से सुशोभित किया था। अनेक जैन वहाँ निवास करते थे। महाराज विष्णुवर्धन कल्याणकारक नामक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ के रचयिता आयुर्वेद के महापण्डित उग्रदित्याचार्य थे जो राष्ट्रकूट अमोघ वर्ष जैसे अन्य नरेशों द्वारा सम्मानित हुये।

• **अम्मराज नरेश (945–970 ई.)–** चालुक्य वंश में अम्मराज द्वितीय नाम का बड़ा प्रतापी एवं धर्मात्मा नरेश हुआ। इस नरेश को समस्त-भुवनाश्रय की पदवी प्राप्त थी। वह भी द्वितीय महारानी लोक महादेवी का पुत्र था। ये शिव तथा जिनेन्द्र दोनों का भक्त था। प्राप्त शिलालेख से ज्ञात होता है कि 10वीं शताब्दी में आन्ध्रप्रदेश में जैन धर्म पर्याप्त लोकप्रिय एवं उन्नत दशा में था। सर्वलोकाश्रय जिनभवन के लिये ग्राम दान किया था। इस देवालय का निर्माण समस्त भुवनाश्रय अम्मराज के नाम पर ही उक्त महिलारत्न ने कराया था स्वयं दान-दया-शीलयुता, बुध-श्रुतनिरता, जिनधर्म-जल विवर्धन-शशि, चारूश्री श्राविका थी।

• **राजा विमलादित्य (1022ई.)–** अम्मराज द्वितीय की पांचवी पीढी में लगभग विमलादित्य नाम का राजा हुआ। वह जैन धर्म का परम भक्त था। देशीगण के आचार्य त्रिकाल योगी-सिद्धान्तिदेव उनके गुरु थे। इस राजा ने अनेक जैन मंदिरों का निर्माण कराया, भूमिदान की विमालादित्य के उपरान्त दो-तीन अन्य राजा हुये और 11वीं शती के अन्त तक वेंगि के इन पूर्वी चालुक्य सत्ता का अन्त हो गया। तभी से उस प्रदेश में जैन धर्म का भी ह्रास होने लगा।

• **गोविन्द तृतीय जगत्तुंग (793–814 ई.)–** प्रभूतवर्ष- कीर्तिनारायण त्रिभुवन धवल श्री वल्लभ, ध्रुवधारा वर्ष के चारों पुत्रों में सर्वाधिक योग्य और पराक्रमी था। वीरसेन स्वामी का विद्यापीठ जिस वाटनगर विषय के मुख्य स्थान के निकट स्थित था वह इस राजन् जगतुंगदेव के प्रत्यक्ष शासन में अतएव संरक्षण एवं प्रश्रय में था। ध्रुव ने इस उद्देश्य से कि उसके पीछे राज्य के लिये उसके पुत्रों में झगड़ा न हो, अपनी मृत्यु के पूर्व ही गोविन्द तृतीय का राज्याभिषेक भी कर दिया था। राजा ने अपनी शक्ति का बहुत विस्तार किया, भारत वर्ष की राज्यशक्तियाँ उसका लोहा मानती थी। निश्चय ही अपने समय का वह सर्व महान भारतीय सम्राट था। जैन वीर को भगवान अर्हंत देव के चरणों में नित्य प्रणाम करने से जिसके उत्तम अंग पवित्र हो गये थे। इसलिये राजा को महासामन्ताधिपति महानुभव कहा है शिलालेख में राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय के पराक्रम विजयों और सफलताओं का भी पर्याप्त उल्लेख है। वाटनगर का जैन अधिष्ठान तो सम्राट से प्रारम्भ से ही संरक्षण पाता रहा था। वहाँ अब स्वामी वीरसेन के सुयोग्य पट्टशिष्य स्वामी जिनसेन गुरु द्वारा अधूर छोड़े गये कार्य की पूर्ति में शान्ति पूर्वक संलग्न थे। उनके सधर्मा दशरथ गुरु, विनयसेन, पद्मसेन और वृहद कुमार सेन तथा स्वामी विद्यानन्द अनन्तकीर्ति, रविभद्रशिष्य, अनन्तवीर्य, परवादि मल्ल आदि अनेक विद्वान जैन गुरु राष्ट्रकूट साम्राज्य को सुशोभित कर रहे थे।

• **सम्राट अमोघ वर्ष प्रथम–** नृप तुंग शर्ववर्म अतिशय-धवल, महाराज, वीरनारायण श्री वल्लभ, वल्लभराय, आदि विरूदधारी इस राष्ट्रकूट सम्राट का जैन धर्म के परम पोषक एवं

भक्त महान् सम्राटों में उल्लेखनीय स्थान है। इसमें भी सन्देह नहीं है कि राज्य विस्तार, शक्ति समृद्धि वैभव आदि की दृष्टि से वह अपने समय का भारत का प्रायः सर्व महान सम्राट था। उसका राज्यकाल भी सुदीर्घ था साठ वर्ष से अधिक उसने राज्य का उपभोग किया। उसका जन्म 804 ई. में उस समय हुआ था जब उसके पिता गोविन्द तृतीय उत्तरापथ की अपनी एक विजय यात्रा से लौटते हुये नर्मदा के किनारे श्री भक्त नामक स्थान में छावनी डाले हुये थे। अतएव 815 ई. में जब उसे पिता की मृत्यु पर राज्य का उत्तराधिकार मिला तो वह दस-ग्यारह वर्ष का बालक मात्र था। सम्राट अमोघवर्ष प्रथम जैन धर्म का अनुयायी, जैन गुरुओं का भक्त और उत्तम श्रावक था। आचार्य जिनसेन स्वामी सम्राट के धर्मगुरु एवं राजगुरु थे। 837 ई. में उन्होंने सम्राट अमोघवर्ष के प्रश्रय में गुरु द्वारा स्थापित वाटनगर के अधिष्ठान में ही 60,000 श्लोक प्रमाण उक्त महाग्रन्थ जयधवल को पूर्ण किया और श्रीपाल गुरु द्वारा सम्पादित कराके संतोष प्राप्त किया। आचार्य गुणभद्र ने आत्मानुशासन जिनदत्तचरित्र आदि ग्रन्थ रचें है। अमोघवर्ष और उनका पुत्र कृष्ण द्वितीय दोनों ही इन आचार्य का सम्मान करते थे। आचार्य उग्रादित्य ने सम्राट के आग्रह पर उनकी राजसभा में आकर अनेक आयुर्वेदज्ञों एवं अन्य विविध विद्वानों के समक्ष मद्य-मांस निषेध का वैज्ञानिक विवेचन किया था, और इस ऐतिहासिक व्याख्यान को हिताहित अध्याय शीर्षक से अपने पूर्व लिखित (लगभग 850ई. में) प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ कल्याणकारक में परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित किया था। सम्राट अमोघवर्ष नृपतुंगदेव के शासन में स्याद्वादन्याय के पक्षधरों ने समस्त एकान्त पक्षों को विध्वस्त कर दिया था। उस नृपति का वह शासन वर्द्धमान हो। सम्राट स्याद्वाद में निष्ठा रखते थे, तत्व चर्चा तो उनका जैनों चित शुद्ध था ही, संयमी जीवन बिताने के भी अभ्यस्त थे। अपने जीवन के अन्तिम भाग में 876 ई. के लगभग, राजकार्य का भार युवराज कृष्ण को सौंपकर उन्होंने स्थायी अवकाश ले लिया था। और एक आदर्श त्यागी श्रावक के रूप में समय व्यतीत किया। सन् 878 और 880 ई. के मध्य समय पर राजर्षि ने महाप्रस्थान किया।

• **सम्राट कृष्ण द्वितीय शुभतुंग अकालवर्ष (878-914 ई.)** – पिता के अवकाश ग्रहण करते ही कृष्ण द्वितीय स्वामी बन गये, विधिवत् राज्याभिषेक 878ई. में हुआ। इनका शासन काल जय-पराजयों से पूर्ण रहा। उनकी पट्टरा नी चेदिनरेश कोक्कल प्रथम की पुत्री थी। राजा-रानी जैन धर्म में पूर्ण आस्था रखते थे। आचार्य गुणभद्र तो युवराज काल से ही विद्यागुरु थे। अपने गुरु के उत्तरपुराण की प्रशस्ति को संवर्द्धित करके बंकापुर में लोकादित्य की राजसभा में उक्त महापुराण का पूजोत्सव किया था। राजा के अनेक सामन्त-सरदार जैन धर्म के अनुयायी थे और साथ ही बड़े पराक्रमी वीर और यौद्धा थे। राजा कृष्ण द्वितीय ने जैन मंदिरों का निर्माण कराया तथा भूमि दान की। इस राष्ट्रकूट नरेश के प्रश्रय में कन्नड़ी भाषा के जैन महाकवि-गुणवर्म ने अपने हरिवंश पुराण की रचना की थी।

• **इन्द्र तृतीय (914-922 ई.)**– कृष्ण द्वितीय को अपनी वृद्धावस्था में ही राज्य प्राप्त हुआ था। उसके पुत्र जगतुंग की मृत्यु उसके जीवनकाल में ही हो गयी थी, अतएव कृष्ण के

उपरानत उसका पौत्र इन्द्र तृतीय नित्य वर्ष रट्टकन्दर्प राजा हुआ। उसने मालवा के उपेन्द्र परमार को पराजित करके अपने अधीन किया और बेंगि के चालुक्यों को भी अपनी अधीनता स्वीका करने पर विवश किया। राजा के दोनों सेनापति नरसिंह और श्री विजय दोनों ही जैनधर्म के अनुयायी थे। राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय इतना भारी दानी था कि 914 ई. में कुरन्धक नामक स्थान में जब उनका पट्टबन्धोत्सव मनाया गया तो कहा जाता है कि उन्होंने विविध धर्म गुरुओं, धर्मायतनों और याचकों को चार सौ ग्राम दान दिये थे। पट्टबन्धोत्सव (राज्याभिषेक) निर्विघ्न सम्पादन के आनन्द प्रकट में बीस लाख द्रव्य (मुद्रायें) तथा पचास से अधिक ग्रामों का राज्यकर अर्पित किया ऐसे दानी थे राजा। अपने पूर्वजों की भांति राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय भी जिनेन्द्र भक्त था। अपने अभीष्ट की प्राप्ति की इच्छा से उन्होंने भगवान शान्तिनाथ का एक पाषाण निर्मित्त सुन्दर पाद-पीठ भी बनवाया था।

• **राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय अकालवर्ष (939-967 ई.)**– इन्द्र तृतीय के उपरान्त क्रमशः तीन राजे हुये और तदन्तर अमोघवर्ष तृतीय बद्विग का पुत्र एवं उत्तराधिकारी यह कृष्ण तृतीय राष्ट्रकूटों के सिंहासन पर बैठा। वह इस वंश के अन्तिम नरेशों से सर्व महान थे। गंग नरेशों के साथ कई विवाह सम्बन्ध स्थापित करके उसने अपना परमहित् और सहायक बना लिया था। गंगनरेश के प्रसिद्ध सेनापति वीर चामुण्डराय ने कृष्ण के लिये अनेक युद्ध सफलता पूर्वक लड़े और उसकी विजय पताका चहुँ और फहरायी। कृष्ण तृतीय ने शान्तिपुराण और जिनाक्षर माले के रचयिता कन्नड़ के महाकवि जैन पोन्न (पोन्न मध्य) को उभय भाषा चक्रवर्ती की उपाधि देकर सम्मानित किया था। जैनाचार्य इन्द्रनन्दि ने ज्वालमालिनीकल्प मान्यरवेट में 939 ई. में रचा था। आचार्य सोमदेव ने अपने नीतिवाक्यामृत महास्तिलक चम्पू (959 ई.) आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना भी इसी सम्राट के प्रश्रय में सम्पन्न हुई।

• **खोट्टिग नित्यवर्ष (967-972 ई.)**– कृष्ण तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई राष्ट्रकूट सिंहासन पर बैठा। इस नरेश ने अर्हत् शान्तिनाथ के नित्य अभिषेक के लिये पाषाण की एक सुन्दर चौकी बनवाकर समर्पित की थी। इसी नरेश के समय में 971 ई. के सुप्रसिद्ध राज-तपस्विनी आर्यिका पाम्बब्बे में जो गंगनरेश बूतुग द्वितीय की बड़ी बहन थी, समाधिमरण किया था। शिलालेख हमें बताता है कि राजनन्दिनी एवं राजरानी ने निर्ममता के साथ स्वहस्त से केशलोंच करके आर्यिका की दीक्षा ली थी। समाधिमरण के पूर्व जब उन्होंने मातुश्री से पूछा कि हमारे लिये क्या आज्ञा है तो निरीह तपस्विनी ने कहा कि **जो कुछ कभी मुझे प्राप्त हुआ या मैंने ग्रहण किया, उस समस्त अन्तंरग-बहिरंग परिग्रह का मैंने पूर्णतया परित्याग कर दिया है, जैसे कि वह कुछ मुझे कभी प्राप्त हुआ ही नहीं था।** 972 ई. में जब राष्ट्रकूटों के परम सहायक गंगमारसिंह और सेनापति चामुण्डराय अन्यत्र युद्धों में उलझे हुये थे तो मालवा के हर्ष परमार ने राजधानी मान्यखेट पर धावा करके उसे जी-भर लूटा और विध्वस्त किया। खोट्टिग नित्य वर्ष इसी युद्ध में मारा गया।

क्रमशः अगले अंक में

अपने हृदय दिल को पहिचाने कहीं देर न हो जाये

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) ❊

शरीर में हृदय सामान्यता वक्ष के मध्य स्थित होता है, हृदय का सबसे बड़ा भाग कुछ बायी ओर स्तन की अस्थि के नीचे होता है। हृदय का बायाँ भाग अधिक प्रबल होता है इसलिये बॉयी और ही महसूस होता है। हृदय का आकार बंद मुठ्ठी के आकार का होता है, जो हृदय पेथी (Cardiac Muscles) से बना होता है। ये अनैच्छिक पेशी उत्तक है जो मात्र हृदय में पाई जाती है। यह एक विशेष शक्ति आटोमेटिक रिदमिकल कान्ट्रेक्सन की होती है। व नर्वस सिस्टम से पूर्ण स्वाधीन होती है। इस कार्य को मायोजनिक कहा जाता है। मानव हृदय एक मिनिट में औसतन 72 बार धड़कता है जो औसतन जीवन काल में 2.5 बिलियन बार धड़कता है।

हृदय ऐसा विशेष अंग है जो रक्त की पम्पिंग कर पूरे शरीर में इसका संचार करते हैं। शुद्ध रक्त पहुँचाता और शरीर को एक्टिव रखने का कार्य करता है। इसका भार औसतन महिलाओं में 250 से 300 ग्राम और पुरुषों में 300 से 350 ग्राम होता है। मनुष्य का हृदय एक मिनिट में 70 मिलीलीटर रक्त पम्प करता है जो दिनभर में करीब 100,000 धड़कन द्वारा 1800 गैलन रक्त पम्प करता है जो 60,000 मील के बराबर है। हृदय तनाव, भावान्तक संवेदना, सुख-दुखों के क्षणों में मस्तिष्क के साथ संतुलन बनाकर शरीर की गतिविधियों की आवश्यकता उम्र अनुसार, शरीर में रोगों में भी निर्वाध कार्य करके जीवन काल गुणवता पूर्वक चलता रहता है।

हृदय की धड़कन अनियंत्रित होने से शरीर की क्षमता, ऊर्जा कमजोर होने लगती है जिससे शरीर संतुलन पर भी असर पड़ने लगता है जिससे हृदय रोग होने की संभावना होने लगती है जिसके प्रमुख कारण मोटापा, शरीरिक गतिविधियों की कमी, परेशानी एवं तनाव, असंतुलित खान पान, अनियमित जीवन शैली, भावनात्मक वेदना महिलाओं में हार्मोन असंतुलन शराब एवं धूम्रपान, कोलेस्ट्रोल की अधिक मात्रा, शुगर, पारिवारिक इतिहास आदि कारणों से सांस फूलना, अधिक कम रक्त चाप, दिल बैठना नाडी गति में परिवर्तन। 20-25 वर्ष पूर्ण यह बुजुर्गों की बीमारी मानी जाती थी लेकिन वर्तमान में 40-45 वर्ष है सन् 1960 में मात्र 4% हृदय रोगी सन् 2019 में 10% से भी अधिक हृदय रोगियों की संख्या बढ़ रही है।

स्वस्थ हृदय के लिये किशोरावस्था के समय से ही संतुलित खानपान, 45-60 मिनिट नियमित व्यायाम योग ध्यान, लाफिंग थैरपी, मौसमी फलों का सेवन करना, चिकनाई युक्त भोजन से परहेज, नमक शक्कर, घी कम खाना, जंक फूड, कोल्ड्रिंक्स का सेवन नही करना। 40 की उम्र के बाद ब्लड प्रेशर, शुगर, कोलेस्ट्राल की नियमित जांच करवाते रहना। जिनके परिवार में पहिले से किसी की हृदय की बीमारी है उन्हें 30 वर्ष की उम्र से ही सब जांचे करवाना चाहिये। भारी काम, तेज गति से चलने पर सांस फूलना, थकान हो तो समय पर चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक है।

सभी को चिकित्सक द्वारा सलाह दी जाती है कि खुद के लिये एक घंटा समय प्रतिदिन

निकालें कम से कम 2000 कदम चलें। यदि 40 उम्र के बाद एक्सरसाइज शुरू करना चाहते है तो एक्सपर्ट से सलाह लेकर शरीर के अंगो की स्थित अनुसार व्यायाम शुरु करें । हृदय जिसे दिल/कलेजा/जिगर के नाम से जाना जाता है। जो शरीर में तराजू के समान मन व मस्तिकष्क का संतुलन बनाये रखता है। इसको अलंकृति करते हुये गीतकारो ने दिल की आवाज को सुन, मेरे दिल में आज क्या है, दिल दिया दर्द लिया, दिल में बसाकर, दिल जो न कह सका गीतों की रचना की। हृदय बहुत कठोर व कांच की तरह नरम भीहोता है। इस ईश्वर प्रदत्त अतुल्नीय कृति को स्वस्थ रखने के लिये समय पूर्व पहिचाने व टूटने से बचायेंनहीं तो जब हृदय न हो तो भावना नहीं रहेगी, जब भावनायें न हो तो संसार नहीं रहेगा। फिर यही कहेगें जब दिल ही टूट गया तो जी कर क्या करेगें।

श्रुतधाम के बड़े बाबा (ऋषभदेव) की आरती

❊ रचयिता व्रती बी.एल.जैन, दिल्ली ❊

कर लो बड़े बाबा की आरती आई सुखद घड़ी,
कर लो ऋषभदेव की आरती आई धन्य घड़ी ।
आई सुखद घड़ी आई मंगल घड़ी...कर लो ।।
अयोध्या में तुम जन्म लियो, हर्ष भयो अति भारी ।
माता मरूदेवी धन्य हुई, समृद्ध हुई क्षिति सारी ।।
... कर लो
विनष्ट कल्पवृक्ष देख प्रजा, हुई आकुल व्याकुल भारी ।
तब प्रभु ने षट्कर्म बताये, हरी विपत्ति सारी ।।
... कर लो
नीलांजना का निधन देख वैराग्य प्रभु को आया ।
जंगल में जा करी तपस्या, मोक्ष महापद पाया ।।
... कर लो
जब से तुम श्रुतधाम विराजे, जंगल में मंगल छाया ।
तीर्थ बना यह स्थल तब से, जन सैलाब उमड़ कर आया ।।
... कर लो
बड़े बाबा की विशद मूर्ति है, अतिशय वाली ।
अभिषेक आरती अर्चन कर, पुण्य कमाओं भारी ।।
... कर लो
माद्य वदी 14 की मनती, यहाँ पंचकल्याणक वरसी ।
उस दिन तीर्थ की छटा निराली, देखत अखियां हरषी ।।
... कर लो
सेवक अर्ज करत प्रभु तुमसे, मेरे कष्ट निवारो ।
भव भव में दुख सहे अनेकों, अब तो पार उतारो ।।
... कर लो

हास्य तरंग

1. टीचर ने- छात्र से पूंछा- क्या बात है स्कूल खुलने के 15 दिन बाद स्कूल आये हो छात्र मेरे दादाजी मर गये थे। टीचर ने पूंछा-क्या हुआ था। छात्र- दादा जी टी.वी पर योगा देखते हुये योग कर रहे थे। बताया गया गहरी सांस लो और जब छोड़ने को कहा जायें तब छोड़े। टीचर ने पूंछा ये तो अच्छा है छात्र ने बात पूरी करते हुये कहा फिर लाइट चली गई और जब तक लाइट आई तो दादा जी चले गये थे।

2. दो वकील अदालत में बहस के दौरान व्यक्तिगत आरोपों पर उतर आये। एक ने कहा तुम से बड़ा गधा आज तक नहीं देखा दूसरे ने पलट कर कहा-मैंने भी आज तक तुम से बड़ा गधा नहीं देखा। इधर जज ने दोनों को शांत कराते हुये कहा आर्डर-आर्डर आप शायद भूल रहें हैं मैं भी यहाँ बैठा हूँ।

3. दर्द से पीड़ित व्यक्ति बहुत घबराया हुआ था वह डॉक्टर से बोला मुझे अस्पताल में कब तक रूकना पड़ेगा। डॉक्टरः यदि आपरेशन सफल हुआ तो 15 दिन यदि नहीं हुआ तो एक घंटा।

4. एक पहलवान ने अपनी भावी को खूब मारा। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर पड़ोसी देखने आ गये और पहलवान से पूछा क्या ऐसी अचानक बात हो गई कि अपनी भावी को मार रहे हो। पहलवान पसीना पोंछते हुये बोला- क्या बताऊ भाई यह छिप-छिप कर रोज मेरे दोस्तों से बातें करती है। पड़ोसी तुम्हें कैसे पता लगा, अरे मैं जब भी अपने दोस्तों से पूंछता हूँ किससे बात करे रहे थे वे यही कहते हैं तुम्हारी भावी से।

5. पत्नी- तुम झूठ बोलना कब बंद करोगे ? सेठी जी - लेकिन मैंने कब झूठ बोला। पत्नी- अच्छा झूठ बोल रहे थे कल ही रामायण देखते हुये लाइट चली गई थी तब बच्चों से कह रहे थे कि तुम किसी से नहीं डरते।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ धर्मशाला

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- एक मंडल में 15-20 खिलाड़ी रहेंगे। सीटी बजने पर सब एक-दूसरे को किसी भी प्रकार बाहर धकेलने का प्रयास करेंगे। जो सबसे अन्त में बचेगा वह विजयी होगा। अर्थात् धर्मशाला के एकमात्र कमरे में रहने का अधिकारी होगा।

✲ जय जिनेन्द्र

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- एक स्वयंसेवक अ मंडल के बाहर दौड़ते हुये किसी ब की पीठ को स्पर्श करेगा। इस पर ब तेजी से विपरीत दिशा में दौड़ेगा जहाँ ये दोनों मिलेंगे वहाँ हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र जी करेंगे तथा फिर दौड़ने लगेंगे। ब के स्थान पर दोनों में से जो पहले पहुँचेगा। वह विजयी होगा। पराजित खिलाड़ी अब खेल शुरु करेगा।

✲ चील झपट्टा

खिलाड़ियों की संख्या- 10-30

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- 1. एक गोले के बीचो-बीच रुमाल रखेंगे। 2. खिलाड़ी घूमना शुरु करेंगे। 3. शुरु/रेडी कहने पर कोई भी एक खिलाड़ी रुमाल उठायेगा और अपने स्थान पर जाने की कोशिश करेगा। 4. यदि दूसरा खिलाड़ी पहले को छूने की कोशिश करेगा।

जीत-हार - यदि पहले खिलाड़ी को दूसरा छू लेगा तो पहला खिलाड़ी हारा हुआ माना जायेगा।

लाभ-इस खेल से सूझबूझ की बहुत बड़ी उपलब्धि होती है।

बाल कहानी

इसे नहीं खाना

शरद पूर्णिमा का दिन था बादलों की ओट में सूरज लुका छिपी कर रहा था हल्की-हल्की पानी की बूंदे भी गिरने से विनय और जितेन्द्र दोनों बैकुण्ठपुर से मनेन्द्रगण की ओर लौट रहे थे वनान्चल के सुन्दर सुन्दर वृक्षों को निहारते हुये विनय प्रफुल्लित हो रहा था चारों और ऊँची पहाड़ियों पर रंग बिरंगे फूलों को देखकर उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि वह किसी स्वर्ग के किसी कल्पवृक्ष के बीच से यात्रा कर रहो पर्यूष्ज्ञण पर्व अभी-अभी बीता था जितेन्द्र ने इस वर्ष के पर्वराज पर प्रवचन का खूब लाभ लिया था। वैसे तो वह धार्मिक कम परन्तु दयालु अधिक था जितेन्द्र के लिये मिल जाये तो उसकी अमिट छाप उसके दिल दिमाग पर अवश्य छा जाती थी। उसने कभी प्रवचन में सुना था कि कभी हमें अनजान फलों को नहीं खाना चाहिये यह बात जितेन्द्र के लिये पथर की लकीर सी बन गई थी।

जब जितेन्द्र और विनय अपनी गति से आगे बढ़ते जा रहे थे तभी उनका प्रियमित्र रामचरित पाण्डे उन्हें मिला जितेन्द्र ने पूछा क्यों भाई यहाँ कहाँ तब रामचरित ने कहा मैं अपनी ड्यूटी से आ रहा हूँ। तीनों ने मिलकर के सुख-दुख की चर्चा बहुत की। तब रामचरित ने अपने झोले से कुछ फल निकाले और जितेन्द्र व विनय को दिये तब जितेन्द्र ने पूछा ये कौन से फल है तब रामचरित ने कहा कि ये खून बढ़ाने वाले स्वादिष्ट फल हैं इनके खाने से शादी जल्दी हो जाती है तो विनय से लपककर वह फल खाने की कोशिश की तभी जितेन्द्र ने विनय का एक झटके के साथ हाथ पकड़ा और कहा विनय ये फल नहीं खाना क्योंकि अनजनान फल अभक्ष्य होता है। तभी रामचरित ने कहा खाले रे ये गूलर है तब जितेन्द्र ने कहा यह गूलर हमारे जैन धर्म नहीं खाया जाता है क्योंकि यह उदम्बर फल होता है।

संस्कार गीत

जैन लिखे इतिहास गढ़े

जिनशासन के गीत सुहाने,
श्वास श्वास हम गायें
जनगणना में जैन लिखायें
अपना फर्ज निभायें

1.
तीर्थ संस्कृति सुन्दर मंदिर कलापूर्ण स्मारक
राष्ट्र प्रेम को सदा निभाता जैन धर्म धारक
विश्वशांति का मंत्र दिया है दया धर्म अपनायें

2.
जैन लिखाना अहंकार नहीं राष्ट्रधर्म सद्बोध है
राष्ट्र एकता का प्रयास वह पुरातत्व का शोध है
बलिदानी जैन जन का हम पल पल मन बढ़ायें

3.
आजादी के आंदोलन में जैनों ने शीश कटाया
भामाशाह से त्यागी ने भी निजधन खूब लुटाया
कार्य एक दृष्टि रखकर नित प्रति लगन बढायें

बाल कविता

पेन कॉपी

मम्मी हमको पेन दिला दो
लिखने कापी एक दिला दो
कवितायें मैं खूब लिखूँगा
देश प्रेम के गीत लिखूँगा
मानवता की बात लिखूँगा
दया प्रेम की बात लिखूँगा
नफरत की सब बात मिटादें
जोत प्रेम की अमर जलादें
वैर विरोध मन पाय भुलादें
क्षमा धर्म का दीप जलादें
लेख लिखूँगा पेन दिला दो
सच्चा अंतरबोध दिला दो

समाचार

समाधिमरण

मगरोनी (म.प्र.)- मुनिश्री निर्मोह सागर महाराज जी का दिनांक 16.08.2020 को समाधिमरण हो गया। आपके गुरु आचार्य श्री निर्मलसागर जी थे।

प्रतापगढ़ राजस्थान- चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुनिलसागर जी महाराज के संघस्थ मुनि श्री 108 सिध्यात्म सागर महाराज जी का दिनांक 22.08.2020 को शाम 8.45 पर समाधिमरण हो गया।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी ने मोक्ष सप्तमी को दी तीन क्षुल्लक दीक्षायें

प्रतापगढ़ (राजस्थान)- प्रतापगढ़ बगवास स्थित पंचबालयति, त्रिमूर्ति जैन मंदिर में ससंघ विराजमान आचार्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के पट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज ने दिनांक 26 जुलाई 2020 को मोक्ष सप्तमी के पावन दिवस पर तीन भव्यात्माओं को मोक्षपथारूढ़ कराया। उन्होंने अपने संघ में साधनारत तीन ब्रह्मचारी भैया जी के बिना किसी भीड़-भाड़ के क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार किये।

उदयपुर के साकरोदा में जन्मे मुम्बई के गोरेगांव निवासी ब्रह्मचारी पारस भैया जी की क्षुल्लक दीक्षा हुई, आपने दीक्षोपरान्त नाम पाया क्षुल्लक श्री सम्पूज्यसागर जी। आचार्य सुनीलसागर जी महाराज ससंघ के सन् 2010 मुम्बई चातुर्मास के दौरान पारसमल जी संघ को आहार देते और नियमित रूप से स्वाध्याय में पहुंचते थे। आचार्य श्री से प्रभावित होकर आपने सन् 2012 में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया, प्रत्युक चातुर्मास में आप अधिकतर संघ में ही रहते थे। पिछले कुछ वर्षों से तो आप स्थाई रूप से संघ में ही रहकर साधना का अभ्यास कर रहे थे और अब 62 वर्ष की आयु में आचार्य श्री से क्षुल्लक दीक्षा ली।

मुम्बई के डोम्बिवली निवासी गृहस्थ जीवन में मनीष कुमार तीन वर्ष पूर्व 32 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री से ब्रह्मचर्य व्रत लेकर ब्र. मर्मज्ञ भैया नाम से साधनारत थे। आपने 35 वर्ष की आयु में आचार्य श्री से क्षुल्लक दीक्षा ली और नाम पाया क्षुल्लक श्री सम्विज्ञसागरजी।

राजस्थान के डूंगरपुर जिले के रीछा गांव के निवासी 16 वर्ष की अल्पायु में रोहित कुमार ने आचाय श्री सुनीलसागर जी महाराज से बाल ब्रह्मचर्य के व्रत लिये। आप संघ में ब्र. सर्वज्ञ भैया के नाम से जाने जाते थे। अब एक वर्ष उपरान्त 19 वर्ष की वय में आपको आचार्य श्री ने क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार प्रदान करते हुये क्षुल्लक सम्प्रज्ञसागर नाम प्रदान किया।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज की यही विशेषता है कि वे पहले दीक्षार्थी को ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान कर संघ में रख कर परिपक्व करते हैं। फिर कुछ-कुछ वर्षों के उपरान्त क्रम से क्षुल्लक, एलक और मुनि दीक्षा प्रदान करते हैं। आपकी चर्या, ज्ञान और ध्यानाध्ययन निरतता देखकर कई एकलविहारी मुनिराज भी आपके संघ में आकर वर्षों से उन्हीं की आज्ञा और अनुशासन में संघस्थ हैं।

प्रतिष्ठित अंकलीकर पुरस्कार 2020 हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मति सागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं मुनिकुंजर आचार्य श्री आदिसागर (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी की प्रेरणा से स्थापित आचार्य आदिसागर (अंकलीकर) अंतराष्ट्रीय जागृति मंच मुंबई द्वारा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट

उपलब्धियों एवं आचार्य श्री आदिसागर अंकलीकर परम्परा के उन्नयन में योगदान करने वाले विद्वानों, पत्रकारों, जैन विद्या के अनुसंधन कर्ताओं और समाज सेवा में तथा व्रती सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु सन्मति महोत्सव वर्ष 2011-12 से प्रतिवर्ष पांच पुरस्कारों की स्थापना की है। इनके अन्तर्गत इस वर्ष पांचों पुरस्कृत विशिष्ट व्यक्तिगत को 51-51 हाजार रूपये की नगद राशि, शाल-श्रीफल, प्रतीक चिन्ह व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। वर्ष 2020 के पांचों पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित हैं। प्रविष्टि विहित-पत्र (प्रोफार्मा) में स्वयं या किसी प्रस्तावक के द्वारा डाक, ई-मेल से संयोजक डॉ महेन्द्र कुमार जैन मनुज अनुप्रेक्षा 22/2 रामगंज, जिन्सी इन्दौर -452 006 (म.प्र.) email: mkjainmanuj@yahoo.com Mo.: 9826091247 के पता पर 15 सितम्बर तक भेजें । प्रविष्टि विहित पत्र (प्रोफार्मा), विवरण व निर्देश https://vidvadvimarsha news.page/nR2ugY.html से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा संयोजक से ई-मेल या वाट्सएप से प्राप्त किया जा सकता है।

एक युग का अंत

जिनवाणी के परम प्रभावक, करणानुयोग के प्रकांड विद्वान संयमित जीवन जीने वाले, आदर्श, अत्यंत गुरुभक्त परम आदरणीय पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा जी आगरा का आकस्मिक हम सब को छोड़ कर जाना दिल को आघात पहुंचा रहा है! हम यकीन नहीं कर पा रहे हैं। उनके निधन के समाचार को सुनकर स्तब्ध हूँ। एक युग का अंत हो गया है। उनके चलें जाने से सम्पूर्ण जैन समाज और विशेष रूप से विद्वत समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, हमने करणानुयोग के वेमिशाल, निर्भीक, अप्रतिम प्रतिभावान विद्वान को खो दिया है । मुझे आदरणीय बैनाड़ा जी का मार्गदर्शन, सान्निध्य मिला, हमेशा उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। उन्होंने हजारों विद्वान तैयार किये। ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व का जाना बेहद दुःखदायी क्षण हैं। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को चिर शांति और शीघ्र अभ्युदय की प्राप्ति हो यही कामना करता हूँ।

अनंत, अशेष स्मृतियों को याद करते हुये।
उनके चरणों में अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि ॥
एक सूरज था कि तारों के घराने से उठा।
आँख हैरान है क्या शख्स जमाने से उठा ॥

संस्कार सागर परिवार पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

प्रधानमंत्री द्वारा अयोध्या में शिलान्यास कार्यक्रम में जैन संस्कृति का उल्लेख

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 5 अगस्त 2020 को अयोध्या में आयोजित श्री राम मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर जो भाषण दिया उसमें दो बार जैन संस्कृति का उल्लेख किया। यहां प्रस्तुत है उनके भाषण के वे संबंधित अंश-

सदियों से अयोध्या नगरी में जैन धर्म की आस्था का भी केन्द्र रहा है । राम की यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता में एकता का जीवन्त चरित्र है।

कन्याकुमारी से क्षीरभवानी तक, कोटेश्वर से कामाख्या तक, जगन्नाथ से केदारनाथ तक, सोमनाथ से काशी विश्वनाथ तक, सम्मेदशिखर से श्रवणबेलगोला तक बोधगया से सारनाथ तक, अमृतसर साहब से पटना साहब तक अंडमान से अजमेर तक, लक्षद्वीप से लेह तक, आज पूरा भारत राममय है।

शिलान्यास कार्यक्रम में सीमित अतिथियों को आमंत्रित किया गया था । जिसमें जैन धर्मगुरु जम्बूदीप के पीठाधीश्वर स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी भी आमंत्रित थे। उन्होंने कार्यक्रम में भाग लिया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : सितम्बर 2020

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
02. आचार्य श्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
03. आचार्य श्री सुवीरसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
04. आचार्य श्री सुरदेवसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
05. आचार्य श्री सिद्धांतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
06. आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज गुरु आचार्य सिद्धांतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
07. आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
08. आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
09. आचार्य श्री सुन्दरसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
10. आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
11. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
12. आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज गुरु श्री धर्मसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
13. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
14. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
15. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
16. आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
17. आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
18. आचार्य श्री विनिश्चयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
19. आचार्य श्री विमदसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
20. आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
21. आचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
22. आचार्य श्री विवेकसागर जी महाराज का चातुर्मास कितनें कहां एवं पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
23. आचार्य श्री विनीतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
24. आचार्य श्री वैराग्यनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
25. आचार्य श्री विपुलसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?

26. आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
27. निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
28. निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी महाराज कहां एवं का चातुर्मास कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
29. निर्यापक मुनि श्री नियमसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
30. निर्यापक मुनि श्री सुधासागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
31. मुनि श्री प्रसादसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
32. मुनि श्री अभयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
33. मुनि श्री कुंथुसागरसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
34. मुनि श्री महिमासागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
35. मुनि श्री संस्कारसागर जी महाराज गुरु आचार्य विनिश्चय सागर जी का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
36. मुनि श्री भूतबलिसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
37. मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
38. आर्यिका श्री गुरुमति माताजी का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
39. आर्यिका श्रीदृढ़मति माताजी का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छीधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
40. 15 जुलाई 2019 से 04 जुलाई 2020 तक आचार्यश्री विरागसागर महाराज जी ने कितनी दीक्षायें दी ?
41. 15 जुलाई 2019 से 04 जुलाई 2020 तक आचार्यश्री प्रमुखसागर महाराज जी ने कितनी दीक्षायें दी ?
42. 15 जुलाई 2019 से 04 जुलाई 2020 तक आचार्यश्री वर्धमानसागर महाराज जी दक्षिण ने कितनी दीक्षायें दी ?
43. मुनिश्री सुधीरसागर महाराज जी समाधि कब और कहां हुई ?
44. आचार्यश्री पवित्रसागर महाराज जी का चातुर्मास कहाँ और कितने शिष्यों के साथ हो रहा है ?
45. मुनिश्री अमितसागर महाराज जी का चातुर्मास कहां और कितने शिष्यों के साथ हो रहा है ?
46. मुनिश्री संभवसागर महाराज जी का चातुर्मास कहां और कितने साधुओं के साथ हो रहा है ?
47. मुनिश्री विन्रमसागर महाराज जी का चातुर्मास कहां और कितने साधुओं के साथ हो रहा है
48. आचार्यश्री पुलकसागर महाराज जी का चातुर्मास कहां और कितने साधुओं के साथ हो रहा है ?
49. आचार्यश्री प्रमुखसागर महाराज जी का चातुर्मास कहां और कितने साधुओं के साथ हो रहा है ?
50. आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी का चातुर्मास कहां और कितने साधुओं के साथ हो रहा है ?

50 प्रश्न संस्कार सागर अगस्त 2020 चातुर्मास विशेषांक से लिये गये है।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः सितम्बर 2020

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 253

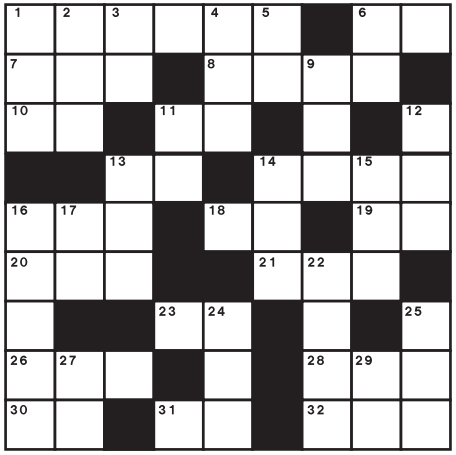

बाये से दाये

1. आचार्य विद्यासागर जी महाराज के एक शिष्य जिनका पूर्व नाम कमलेश कुमार था -6
7. खोज, शोध -3
8. रसीले, रस युक्त -4
11. केश, गेन्द -2
14. ग्रामों का समूह, मंडल -4
16. संस्थर ग्रहण करने वाला साधक -3
18. स्वादिष्ट तरल पदार्थ आम का बना हुआ -2
19. मारना, वध -2
20. वेतन तनख्याह -3
21. गिरा हुआ इंसान -3
23. तैय्यार, सहमत -2
26. मैंना, पक्षी का नाम -3
27. एक साबुन का नाम -3
28. पद पाद पग -3
30. किक्रेट दौड़, दौड़ -2
31. दौलत जायदाद -2
32. रमण करने का भाव -2

ऊपर से नीचे

1. गिरना, नीचे गिरनपा -3
2. बिल्ली जैसा प्राणी -3
3. दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीव -2
4. जहर, विष -3
5. सार, प्रवाही पदार्थ, काव्य का प्राण -2
6. आनंद -2
9. यान यातामात साधन -3
11. पक्ष -2
12. काम, कामदेव, श्री कृष्ण एक नाम -3
13. मगर धडियाल -3
15. प्रसास -3
16. कर्मक्षय विधि बताने वाला ग्रंथ जिसके रचयिता आचार्य नेमिचंद जी है -5
17. चासनी से लिपटा पकवान -2
22. कल्याणकर, हित करने वाला -4
24. जिंदगी -3
25. एलकश्री सिद्धांतसागर महाराज का पूर्व नाम -3
29. दमन,श्वास,ताकत -2

वर्ग पहेली 252 का हल

1 सं	2 न्म	3 ति	■	4 र	5 च	ना	6 का	7 र
8 ग	ह	न	■	9 खा	क	■	10 मा	त
11 ति	ल	का	■	■	12 म	ला	ल	■
■	■	■	13 ल	14 च	क	■	■	15 ना
16 गु	मा	17 न	■	म	■	18 क	न	क
णा	■	19 र	ण	क	20 पु	र	■	■
21 य	22 म	क	■	■	जा	■	23 आ	24 ग
25 त	म	■	26 सु	27 पा	री	■	28 ग	ज
न	■	29 प्र	ख	र	■	30 अ	म	ल

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच

संस्कार सागर के अगस्त 2020 में दिया गया है। उत्तर भरकर देने की अंतिम दिनांक 1 नवम्बर है।

प्रथम पुरुस्कार	द्वितीय पुरुस्कार	तृतीय पुरुस्कार	सान्त्वना पुरुस्कार
1लाख रूपये	51हजार रूपये	31हजार रूपये	सभी प्रतिभागियों को

प्रथम पुरस्कार प्रदाता

गजेन्द्र माया देवी जैन

गिन्नी ग्रुप

रियम इस्टेट डेवलोपर्स एण्ड बिल्डर्स

गिन्नी ग्रुप, यु.जी. 7–8 ओनम प्लाजा, इन्दौर (म.प्र.)

Mo.: 093032-15856, 098270-31356, Ph.: 0731-4041356

Website - www.ginnireality.com ✲ Email : ginnireality@yahoo.com

द्वितीय पुरस्कार प्रदाता

श्रीमति मणि आजाद मोदी

मोदी प्रिंटर्स

76/बी–1, पालोग्राउंड इंण्डस्ट्रीयल एरिया

पत्रिका के प्रेस के पीछे इन्दौर

फोन : 0731- 4954171, मो. 98260-16543

तृतीय पुरस्कार प्रदाता

स्व. श्रीमति स्वाती जैन

की तृतीय पुण्यस्मृति में

कु. पलक नीरज जैन

स्वाती इन्टरप्राइजेस (दिल्ली)

प्रश्न पत्र भरने के लिये पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध है सम्पर्क करें

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें – 0731–4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/08/2020, पोस्टिंग दिनांक : 03/09/2020